सुरेश श्रीवास्तव
विक्रांत डकरस्पंत
की
टक्कर

प्रेत अस्तित्व पर लिखी अब तक की सर्वाधिक
रोमांचक श्रृंखला
जिसके दो भाग आपने पढ़े, क्रमशः

● विक्रांत और डाक्टर प्रेत ● डाक्टर प्रेत का षड़यंत्र

और अब प्रस्तुत है

इस रोमांचक श्रृंखला की तीसरी कड़ी

विक्रांत डाक्टर प्रेत की टक्कर

सुरेश श्रीवास्तव

नव ज्योति प्रकाशन
तीर्थंकर महावीर मार्ग,
मेरठ—२

सुरेश श्रीवास्तव

का जासूसी कथा साहित्य

१. विक्रांत और द्वीप का देवता
२. देवता की गर्जना
३. विक्रांत देवता के जाल में
४. विक्रांत देवता की टक्कर
५. देवता का अन्त
६. विक्रांत और विराट
७. तूफानी विराट
८. अजेय विराट
९. बारूद भरा समझौता
१०. वियोगिनी पावेला
११. अपराधिनी पावेला
१२. विश्वद्रोही पावेला
१३. पावेला का प्रतिशोध
१४. विक्रांत और डाक्टर प्रेत
१५. डाक्टर प्रेत का षड़यंत्र
१६. विक्रांत डाक्टर प्रेत की टक्कर
१७. डाक्टर प्रेत का अन्त
१८. वतन बेचने वाले [प्रेस में]

सुबह के आठ बजे थे।

गोपाली कुछ ही देर पहले सोकर उठे थे और ताऊ के साथ ड्राइंग रूम में बैठे सुबह की चाय पी रहे थे। ताऊ उनके साथ ही ठहरा हुआ था।

हालांकि ताऊ ने कहा भी, तुम्हारी दो अदद बीवियां हैं। रात में तुम दोनों के साथ ऐश करोगे और मैं फिजूल में जल-जल कर कबाब बनूंगा।

उत्तर में गोपाली ने सीधी चोट की—'बेटा, अगर अपनी भाभियों पर ही नजर खराब करने का इरादा हो तो वैसे बता। मेरी ओर से कोई रोक नहीं है। लेकिन फिजूल में मर्सिया मत पढ़ा कर। तुझे बम्बई में मेरे साथ ही रहना है। तू क्या तेरा बाप भी रहेगा।'

जैसा कि स्वाभाविक था।

गोपाली की इस बात पर ताऊ बुरी तरह भड़का।

लेकिन मजबूरी थी।

गोपाली की इस बात के बाद वह उन्हीं के साथ उनके बंगले पर रहने को विवश हुआ।

यह एक अलग बात थी कि मित्रता को सर्वोपरि मानने वाले

गोपाली ताऊ के साथ ही सोते थे। अपनी पत्नियों के साथ नहीं।

हालांकि ताऊ रोज भड़कता था—'ये क्या बदतमीजी है बेटा रेगिस्तानी ?' भाभी लोगों के पास जाकर सो। मेरे कारण उन्हें जीते जी क्यों विधवा बनाये दे रहा है।'

गोपाली शान्त स्वर में उत्तर देते—'दरअसल मैंने तेरी भाभियों से अन्दर सोने की बात कही थी। लेकिन उन्होंने कहा ताऊ अभी बच्चा है। माना कि नालायक है। लेकिन है तो अपनी ही औलाद। उसे अकेले सोने देना ठीक नहीं। रात में कहीं डाक्टर प्रेत ने आकर धर दबोचा तो वह कुत्त के पिल्ले की तरह प्याऊं-प्याऊ करने लगेगा। इसलिये मजबूरी है बेटा ताऊ। अगर तुम्हारी अम्मा लोगों की बात नहीं मानूंगा तो बम्बई में रहते हुये भी न तुझे रोटी मिलेगी और न मुझे।

इस तरह अच्छी खासी नोक झोंक होती।

लेकिन गोपाली ताऊ के पास ही सो रहे थे।

इस समय !

सुबह के आठ बजे थे। ताऊ और गोपाली अभी-अभी सोकर उठे थे। दोनों के बीच में इसी बात पर चर्चा हो रही थी कि अगर विराट नहीं आता तो क्या कदम उठाना चाहिये।
राजेश का रोज ही फोन आता था और वह आतुरता से एक ही बात कहते थे, अगर कहिए तो मै बम्बई आ जाऊं गोपाली जी आप लोग अकेले परेशान हो रहे हैं यह बात मुझ से सही नहीं जा रही है।

उत्तर में गोपाली एक ही बात रोज दोहराते, यहां से अधिक तुम्हारा दिल्ली में रहना आवश्यक है राजेश। एक तो वहां रहकर तुम विराट का सुराग पा सकते हो। दूसरे हमें जैसी भी केन्द्रीय सरकार की आवश्यता होगी उसका तुम वहां रह कर तुरन्त प्रबन्ध कर सकते हो।

इस समय सुबह के आठ बज रहे थे और गोपाली और ताऊ सुबह की चाय पीते हुऐ इसी बात पर चर्चा कर रहे थे कि इस समय कौन सा कदम उठाना श्रेयकर हैं।

तभी !

नौकर ने आकर सन्देश दिया —'कल वाले मिर्जा साहब आये हैं।'

गोपाली भड़के —'अबे आये हैं का क्या मतलब ? उन्हे फौरन अन्दर लाना चाहिए था।' और वह तुरन्त उठ कर बाहर की ओर लपके।

पीछे से ताऊ चिल्लाया—'क्यों सुबह-सुबह इस मनहूस को लाकर पूरा दिन खराब कर रहा है यार !'

लेकिन गोपाली ने ताऊ की बात सुनी नही।

वह तेजी से बाहर निकल गये।

बंगले के फाटक पर मिर्जा मोहन मार्टिन अपनी चिरपरिचित वेशभूषा में खड़े थे। काली शेरवानी, चूड़ीदार पायजामा, सिर पर दो पल्ली टोपी, खसखसी दाड़ी और हाथों में छड़ी।

गोपाली को देखते ही लखनवी अन्दाज में कमर तक झुककर फर्शी सलाम करते हुए बोले— आदाब बजा लाता हूं गोपाली साहब ! आपको सुबह-सुबह तकलीफ दी, इसके लिए मुआफी चाहता हूं।'

गोपाली ने लपक कर मिर्जा साहब को बाहों में भर लिया —ऐसी बात कहकर आप मुझे शर्मिन्दा क्यों कर रहे हैं मिर्जा साहब ! आपने नौकर से खबर भिजवाकर यूं ही मुझे शर्मिन्दा कर दिया अब ऐसी बात···आइये अन्दर चलिए···'

गोपाली सम्मान पूर्वक मिर्जा साहब को अन्दर ड्राइंग रूम में ले आये।

ताऊ को देखते ही मिर्जा साहब चहके— 'वल्लाह···

ताऊ साहब भी यहीं तशरीफ रख रहे हैं ।'

ताऊ भड़ककर बोला —'आपका क्या ख्याल है, मुझे वापस काहिरा या पेरिस चला जाना चाहिये था ।'

मिर्जा साहब ने बड़ी शान्ति के साथ तपाक से उत्तर दिया —'अजी मेरे ख्याल की भला क्या वकत है । वरना मैं तो यही कहता मेरे ख्याल में आपको चीन में डाक्टर प्रेत के पास होना चाहिए था ।

'क्यों आपकी कुछ रिश्तेदारी है ?'

'मेरी रिश्तेदारी हो या न हो लेकिन आपकी रिश्तेदारी जरूर होगी । दरअसल मिस्र पिरामडों की वजह से प्रेतों का मुल्क कहलाता है । जाहिर है आपकी भी किसी प्रेत से दोस्ती होगी । इस लिये डाक्टर प्रेत से रिश्तेदारी होना कोई नामुमकिन बात नहीं है ।

गोपाली हंसते हुए बोले —'मानना होगा मिर्जा साहब आप बहुत हाजिर जवाब हैं । ... विराट का कुछ पता लगा ?'

'बिलकुल लगा साहब ! आप कोई हुक्म दें और मैं उस काम को पूरा न करूं ?'

गोपाली ने मिर्जा साहब की बांह पकड़कर उन्हें बैठाया । आप बैठिये तो मिर्जा साहब । आपकी इस खबर से तो जैसे हमें नई जिन्दगी मिल गई । कहां है विराट ?'

कल रात को ही वह दिल्ली लौटकर आया था । मैंने रात दस बजे उसे फोन किया था । वह नौ बजे दिल्ली पहुँचा था । उससे ही फोन पर बातें हुई ।'

'आपने क्या कहा ?'

'मैंने यहां के हालात के बारे में फोन पर कुछ बताना ठीक न समझा बस इतना कहा कि तुमसे बहुत ही जरूरी काम है । तुम्हारा तुरन्त यहां पहुँचना निहायत जरूरी है ।'

'उसने क्या उत्तर दिया ?'

'वह आज दोपहर तक बम्बई पहुँच रहा है।'

गोपाली का मुख प्रसन्नता से दमकने लगा—'आपने ऐसी बढ़िया खबर दी है मिर्जा साहब कि तबियत हो रही है आपका मुंह चूम लूं।'

'ऐसा कहकर मुझे क्यों शर्मिन्दा करते हैं गोपाली साहब ! मैं नाचीज आप लोगों के पैर के जर्रे के बराबर भी तो अह-मियत नहीं रखता। कहां मैं मामूली मेवा फरोश (मेवों का व्यापारी) और कहां आप लोग ए ग्रेड के आला जासूस। यह तो आप लोगों की जर्रानवाजी है जो मुझ नाचीज को अपने लोगों के साथ बैठने की इजाजत देते हैं।'

गोपाली ने स्नेहवश मिर्जा साहब का हाथ पकड़ लिया—'यह आपका बड़प्पन है मिर्जा साहब वरना आप क्या है, इसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता।'

'आप क्यों मेरी खिचाई करने पर लगे हैं ? गोपाली साहब।

ताऊ ने तुरन्त तुरप जड़ी—'म्यां मिर्जा, आप तो पहले ही से खिचे खिचाये हैं। आपको भला क्या खींचा जा सकता है ?'

'मैं आपकी नहीं गोपाली साहब की बात कर रहा हूं हजूर ताऊ साहब ! जहां तक आपका सवाल है, आपने यकीनन मुझे बखूबी पहचान लिया है।'

'वैसे आपसे हमें एक शिकायत है मिर्जा साहब ! गोपाली बोले—

'शिकायत।'

'बिल्कुल शिकायत आपने हमसे एक नायाब हीरा छीन लिया।'

मिर्जा साहब परेशान लहजे में बोले—मैं आपकी बात बिल्कुल नहीं समझ पा रहा हूं गोपाली साहब। मेहरबानी करके बात

को खुलासा कहिये।

'बात दरअसल यह है कि बिराट में जाये सब गुण है, उसकी वजह से उसे केन्द्रीय खुफिया विभाग में स्थान मिलना चाहिये था। न सही केन्द्रिय खुफिया विभाग, अगर किसी प्राइवेट जासूस के साथ मिलकर भी वह काम करता तो देश और समाज का भला कर सकता था। लेकिन ऐसा न करके उसे आपने व्यापारी बना दिया।'

मिर्जा साहब ने गहरी सांस ली—'आपने जिस अन्दाज से शिकायत लफ्ज का इस्तेमाल किया था, उससे मेरी तो तबियत ही एक बारगी घबड़ा गई थी।'

ताऊ ने तुरन्त चोट की—'लगता है दोनों के व्यापार की आड़ में आप कोई स्मगलिंग का धन्धा करते हैं। तभी गोपाली की बात पर इस ढ़ग से घबड़ा उठे।'

'हुजूर ताऊ साहब, अभी तक तो इस टाइप का कोई काम नहीं करता था। क्योंकि मेरे साथ कोई जासूस नहीं था। लेकिन अगर आप साथ देने का वायदा करें तो मैं जरूर यह काम शुरू कर सकता हूँ।'

'मेरा साथ करके हमेशा घाटा उठाइयेगा मिर्जा म्यां!'

'वह तो आपकी शक्ल से ही जाहिर है। लेकिम दिक्कत यह है कि कोई अच्छा आदमी मिल नहीं रहा है। इसलिए जो मिल रहा है, उसी से काम चलाना पड़ेगा।'

मिर्जा साहब ने जिस तरह की करारी चोट की थी, उससे ताऊ तिलमिला उठा।

वह कोई करारा जवाब देने की सोच ही रहा था···तभी गोपाली बोल उठे—'आपने मेरी बात का उत्तर नहीं दिया मिर्जा साहब!'

'जवाब क्या हुजूर गोपाली साहब! खुदा गवाह है। मैंने बिराट को हर ढंग से समझाया। मैंने ही क्या, राजेश जी और

जगत तथा विक्रांत ने भी बहुत तरह से विराट को समझाने की कोशिश की। लेकिन वह तो हमेशा एक ही बात रटता रहा—मुझे जासूसी जैसे लफड़े के काम में नहीं फंसना है। जब वह किसी तरह से नहीं माना तो राजेश जी की सलाह पर मैंने उसे व्यापार में लगा दिया। अब बताइये इसमें मेरा क्या गुनाह है...।'

नौकर चाय व नाश्ता ले आया था।

चाय और नाश्ते के बाद मिर्जा साहब उठ पड़े—'अच्छा मुझे इजाजत दीजिये। ज्यों ही विराट आ जायेगा, मैं उसे लेकर तुरन्त हाजिर हो जाऊंगा।'

गोपाली और ताऊ मिर्जा साहब को छोड़ने के लिये फाटक तक आये।

मिर्जा साहब के जाने पर ताऊ बोला—'यार गोपाली।

'मैं तुम्हारी बात समझ रहा हूं ताऊ।' गोपाली बात काट कर बोले।

'क्या समझ रहे हो ?'

'तुम यही कहना चाहते हो न कि यह व्यक्ति सन्देह से परे नहीं है।'

'हां...कहना तो यही चाहता था। माना कि दिल्ली के मिलट्री हास्पीटल में विक्रांत ने मिर्जा की बखिया उखेड़ दी थी। यह भी माना कि राजेश ने मिर्जा की ओर से काफी कुछ स्पष्टीकरण कर दिया था। लेकिन जाने क्यों इस आदमी पर से संदेह नहीं हटता।'

'ऐसा ही तो मुझे भी लगता है ताऊ!' गोपाली गम्भीर स्वर में बोले—'लेकिन दिक्कत यह है कि इसका रहस्य जानने का हमारे पास कोई रास्ता नहीं है। दूसरे चाहे यह कितना भी सन्देहास्प्रद व्यक्ति हो, लेकिन इसमें दो राय नहीं है कि भारत के लिये और भारत के हितों के लिए इसने कोई भी नुकसान

नहीं पहुँचाया है। बल्कि सहायता ही की है। अगर ऐसा न होता तो निश्चय ही राजेश इस व्यक्ति से सम्पर्क न रखते।'

'हां, सो तो है। वैसे भी फिलहाल हमें आम खाने से मतलब रखना चाहिये। जब भी फुर्सत हुई तो जरूर पेड़ गिनेंगे।'

'देखेंगे''' अच्छा चलो अन्दर चलें। तैयार होकर हमें विक्रांत और जगत की खोज खबर लेने चलना है।'

गोपाली ताऊ के साथ ही वापस ड्राइंग रूम में लौट आये।

●

मिर्जा साहब डेढ़ बजे जुहू स्थित सी एण्ड सैन्ड होटल पहुँच गए थे। उन्हें अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पडी, ठीक दो बज कर दस मिनट पर एक टैक्सी कार आकर होटल के सामने रुकी। उस पर से उतरा आई० डी० सी० [इन्डियन डिफेन्स कौन्सिल-भारतीय सुरक्षा परिषद] का अध्यक्ष हठयोगी विराट !

एक तो विराट यूं ही बहुत खूबसूरत था, बिल्कुल देव तुल्य सरीखा।

ऐसा लगता था जैसे स्वर्ग से अभिशासित कोई देवता भूल से भूलोक पर आ गया हो।

दूसरे जब से उसने योगियों की वेशभूषा त्याग कर सूट पहनना शुरु कर दिया था, तब से उसका सौन्दर्य गजब ढाने लगा था।

युवतियां देखती तो बावलों की तरह उसकी ओर दौड़ पड़ती विशेषकर विदेशी युवतियां तो विराट को देखते ही पागल हो

जाती।

लेकिन ?

कोई भी युवती विराट के पास तक नहीं पहुँच पाती थी।

एक तो विराट की अदृश्य प्रतिच्छाया उसके पास पहुँचने वाली युवती को इस तरह पकड़ कर पीछे खींच लेती कि किसी को कुछ पता भी न लग पाता और वह युवती एकदम स्तब्ध रह जाती।

दूसरे अगर इत्तफाक से कभी कोई युवती विराट के पास पहुँच भी जाती तो ज्यों ही विराट उसकी ओर देखता, उस युवती को कुछ इस तरह का तीव्र झटका लगता, जैसे हजारों वोल्टेज का करेन्ट एक बारगी ही उसके शरीर में प्रवाहित कर दिया गया हो।

हठयोग में तपाया हुआ शरीर और यौगिक शक्ति का अखंड तेज समेटे लाल दो नेत्र जब किसी युवती से टकराते तो वह बौखला जाती और दोबारा उसका साहस विराट के पास आने का न होता।

मिर्जा साहब डाइनिंग हाल में एक खिड़की के निकट बैठे थे इसलिये विराट को टैक्सी कार से उतरते उन्होंने देख लिया।

यह फौरन उठकर बाहर आये। विराट टैक्सी का बिल चुका कर पलटा तो मिर्जा साहब को अपने पास खड़ा पाया।

देखकर मुस्कराया विराट और वन्दना की मुद्रा में उसने हाथ जोड़ दिये—'नमस्कार मिर्जा चचा ! मुझे विशेष देर तो नहीं हुई ?'

'जीवन में खूब उन्नति करो।' मिर्जा साहब ने आशिर्वाद दिया—'बिल्कुल देर नहीं हुई। मुझे यहां आये कुल चालीस मिनट हुए हैं। आओ, अंदर चलकर बैठते हैं। इन्टर पोर्ट से सीधे यहीं चले आ रहे हो।'

विराट के हाथ में एक सूट केस नुमा फोलियो था। उसे उठा कर साथ चलता हुआ बोला—'बम्बई में अभी कोई ऐसा ठिकाना बना नहीं पाया हूं, वहां रूककर तब यहां आता। साथ ही आपकी आज्ञा ऐसी थी, जिससे किसी होटल में डेरा डालने की इच्छा नहीं हुई। सीधे यहां आना आवश्यक समझा। बताइये ऐसी कौनसी आवश्यकता आ पड़ी, जिससे आपको तुरन्त आने की आज्ञा देनी पड़ी।

'बताऊंगा बात सचमुच अत्यधिक गम्भीर है, इसलिये तुरन्त बुलाना पड़ा।' मिर्जा साहब गम्भीर स्वर में बोले—'चलो पहले एक कप काफी पियेंगे, उसके बाद सब बताऊंगा।'

मिर्जा साहब का वास्तविक स्वरूप क्या है और वह कितनी भाषायें जानते हैं, इस सम्बन्ध में भारत के सामान्य नागरिकों में राजेश के अतिरिक्त केवल विराट को ही पता था।

अन्यथा मिर्जा साहब के सम्पर्क में आने वाला हर व्यक्ति यही समझता था कि वह केवल उर्दू भाषा ही बोल सकते हैं और उनका स्वभाव कभी भी गम्भीर नहीं हो सकता।'

मिर्जा साहब विराट को साथ लेकर खिड़की के पास रखी उसी टेबुल पर पहुँचे। इस जगह अपेक्षाकृत सन्नाटा था।

वैसे भी इस होटल में सीटें दूर-दूर लगी हुई थीं और इस बात का विशेष ध्यान रखा गया था कि एक सीट पर बैठे लोग दूसरी सीट पर बैठे लोगों की बातें न सुन सकें।

'कुछ खाओगे ?' मिर्जा साहब ने सीट पर बैठते हुए पूछा।

'जी नहीं।' प्लेन में ही जलपान ले लिया था। इसलिये कुछ आवश्यकता नहीं है। केवल काफी मंगा लीजिये।

मिर्जा साहब ने बैरे को बुलाकर दो क्रीम काफी लाने का आर्डर दे दिया। जब तक काफी नहीं आ गई, केवल औपचारिक बातों के अलावा और कोई बात नहीं हुई।

विराट ने भी वास्तविक बात जानने के लिये दबाव नहीं

डाला। वह समझ रहा था कि जब बताने का समय आयेगा तो मिर्जा साहब स्वयं ही बता देंगे।

काफी की पहली सिप के साथ मिर्जा साहब ने बात शुरू की 'तुम आसाम क्यों गये थे ?'

'गृह मंत्रालय के मुख्य सचिव की आज्ञा से।'

'क्यों ?'

'मैं आसाम नहीं नागालैण्ड गया था। गृह मंत्रालय को विशेष सूत्रों से यह सूचना मिली थी कि चीन अपने बहुत से जासूसों को नागालैण्ड के विद्रोही कबीलों में भेज रहा है ताकि विद्रोही नागाओं के विद्रोह को भड़काकर पृथक नागा राज्य की स्थापना की जाये। इसी के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए मुझे भेजा गया था।'

'कुछ सफलता मिली ?'

'काफी अंशों में सफलता मिली। मेरी सूचनाओं के आधार पर केन्द्रीय गृह मन्त्रालय ने कार्यवाही करके काफी संख्या में विद्रोही नागाओं और बहुत से चीनी जासूसों को गिरफ्तार कर लिया है। कार्यवाही चल ही रही थी, तभी आपका आदेश पहुँचा और मुझे तुरन्त इधर के लिये प्रस्थान करना पड़ गया। आप तो मारकोनी की तलाश में ही दक्षिण भारत में भटक रहे हैं !'

'हां !'

'अभी तक उसका कुछ पता नहीं लगा ?'

'अभी तक वह बराबर मछली की तरह फिसला जा रहा है जहां भी शक होता है, तुरन्त इन्टरपोल के सदस्य कार्यवाही करते हैं। लेकिन वह बडी सफाई से गायब हो जाता है।'

'अभी तक वह भारत के ही आस पास है ?'

'इन्टरपोल के मुख्यालय को जो सूचना है, उसके आधार पर तो यही कहा जा सकता है कि वह अभी तक भारत के ही आस

पास है। लेकिन निश्चित रूप से कोई बात नहीं कही जा सकती।'

'अच्छा बताइये, मुझे आपने तुरन्त आने का आदेश क्यों दे दिया ?'

मिर्जा साहब मुस्कराये—'मैं इतनी देर से सोच रहा था, शायद इस सम्बन्ध में अपनी यौगिक शक्ति से सहारा लेकर स्वयं जान जाओ···।'

'इसके लिये मैंने प्रयत्न किया। अगर आप कह रहे हैं तो···?'

'नहीं, अब मैं स्वयं बताता हूं।' मिर्जा साहब विराट की बात काट कर बोले—'तुम भूत प्रेतों पर विश्वास करते हो ?'

'हां···।' विराट ने स्पष्ट और संतुलित स्वर में उत्तर दिया—'उतना ही, जितना मैं इस बात पर विश्वास करता हूं कि आपका, मेरा तथा अन्य लोगों का अस्तित्व है। ऐसा इसलिये क्योंकि योगी जानता है कि इस जीवन से परे भी दूसरे जीवन का अस्तित्व है।'

'हालांकि इस वैज्ञानिक युग में ऐसी बातें अनर्गल लगती हैं, लेकिन मैं इस बात से इन्कार नहीं करता कि विज्ञान इतना उन्नति करने के बावजूद भी अधूरा है। प्रकृति के ऐसे अनगिनत रहस्य हैं, जिन तक विज्ञान अभी नहीं पहुंच सका है। इसलिये भूत-प्रेतों के सम्बन्ध में विवाद से यह समस्या सुलझने वाली नहीं। जब तक इस सम्बन्ध में कोई ठोस प्रमाण न मिल जाये। अच्छा यह बताओ, कोई व्यक्ति यदि प्रेत बाधा से ग्रसित हो तो उसे कैसे मुक्ति मिल सकती है ?'

'दो उपायों द्वारा। या तो कोई तगड़ा प्रेत साधन हो या फिर योग द्वारा।'

'योग द्वारा प्रेत और प्रेत बाधा पर विजय पाई जा सकती है ?'

'निश्चित रूप है।' विराट दृढ़ स्वर में बोला—'क्योंकि योग ईश्वरीय क्रिया के अन्तर्गत आता है, जब कि प्रेत साधना आसुरी क्रिया का एक अंग है। ईश्वरी क्रिया आसुरी क्रिया पर सदैव भारी रही है…ये बातें आप किस संदर्भ के अन्तर्गत पूछ रहे हैं ?'

उत्तर में मिर्जा साहब ने क्रम से डाक्टर प्रेत के आगमन से लेकर अब तक की सारी घटनायें बता डालीं और अन्त में बोले—'गोपाली और ताऊ का विचार है कि डाक्टर प्रेत के चक्कर से छुटकारा तुम्हारे ही द्वारा मिल सकता है। साधारण स्थिति में शायद मैं तुम्हें तुरन्त न बुलाया। लेकिन मधु चांदना और विक्रांत इस देश की धरोहर हैं। आई० डी० सी० चीफ होने के कारण उसकी सुरक्षा की सर्वाधिक जिम्मेदारी तुम्हारे ऊपर है। इसलिये मैंने तुरन्त बुला लिया।'

सुनकर विराट गम्भीर हुआ।

'आपके प्रति मैं अत्यधिक अनुग्रहित हूं मिर्जा चचा!' विराट नम्र एवं गम्भीर स्वर में बोला।

'मेरे प्रति क्यों ?'

'आपने मुझे बहुत ठीक समय बुला लिया। सचमुच देश की सर्वोच्च सुरक्षा से सम्बन्धित प्रश्न है और इसकी सर्वाधिक जिम्मे-दारी मेरी है मुझे इस बात का दुख है कि मैं अभी तक अपने विभाग का फैलाव विस्तृत रूप में नहीं कर पाया हूं। जब कि आई० डी० सी० चीफ होने के नाते यह मेरी प्रथम जिम्मेदारी है कि देश के किसी भी भाग में विध्वंसन कार्यवाही हो रही हो तो उसकी सूचना मेरे पास हो। अगर इस समय आप न आये होते तो मैं अन्धेरे ही में रहता और यहां फिर कोई अप्रिय दुर्घटना हो जाती।'

'तुम अपने विभाग का विस्तार क्यों नहीं कर रहे हो, जब कि इस सम्बन्ध में तुम्हें सभी अधिकार प्राप्त है ?'

हंसा विराट, 'दरअसल चचा, आप मुझे मार-मार कर स्टीम बना रहे हैं।'

'क्या मतलब ?'

'मैं बुनियादी तौर पर योगी हूं।'

'यह पहाड़ा रटना अब बन्द करो। योगी और साधु तथा इसी प्रकार के अन्य असामाजिक व्यक्ति अपने लिये भले ही कुछ भी करें लेकिन देश और समाज के लिये उनका महत्व बिल्कुल व्यर्थ होता है। जबकि ईश्वर हमें इसीलिये मनुष्य योनी में जन्म देता है। जिससे रूप देश और समाज का जितना भला कर सकते हैं करें।'

'आपकी बात से मैं पूरी तरह सहमत हूं। इसीलिये तो मैंने आपकी आज्ञा मानकर आई० डी० सी० चीफ जैसा जिम्मेदारी का पद स्वीकार कर लिया। लेकिन अभी मैं पूरी तरह अनुभवहीन हूं। इसी कारण अपने विभाग के विस्तार के लिये योग्य आदमियों का चुनाव नहीं कर पा रहा हूं। इस सम्बन्ध में आप भी मेरी कोई सहायता नहीं कर रहे।'

'देखो विराट...!' मिर्जा साहब विराट की बात काट कर गम्भीर स्वर में बोले—'मैं अन्तर्राष्ट्रीय नियमों के अन्तर्गत बंधा हूं। इंटरपोल का विशिष्ट सदस्य होने के नाते किसी केस के विशेष की भलाई के लिये मुझे कुछ नहीं करना चाहिये। चाहे वह मेरी मातृभूमि ही क्यों न हो। मैंने उन नियमों का उल्लघंन करके भारत के लिये आई० डी० सी० जैसा महत्वपूर्ण विभाग बनवा दिया और तुम्हारी योग्यताओं के आधार पर उसके चीफ के पद पर तुम्हारी नियुक्ति करा दिया। मैं जानता हूं कि यौगिक शक्ति और छाया सिद्धि के कारण किसी भी व्यक्ति को पहचानने की तुम्हारे में अपूर्व क्षमता है। अब तुम अगर अपनी इस शक्ति का उपयोग न करो तो इसमें किसका दोष है ?'

विराट बहुत शांतिपूर्वक मिर्जा साहब की इतनी लम्बी बात

सुनता रहा ।

बात की समाप्ति पर वह मुस्कराया—'मानता हूं चचा मिर्जा, आपने बड़ी सफाई से मेरे पर एक सर्वाधिक महत्व-पूर्ण जिम्मेदारी सौंप दी है जिसके योग्य मैं तनिक भी नहीं था ।

लेकिन फिर भी मैं आपकी आशाओं पर तुषारापात नहीं करूंगा ।' एक महीने के अन्दर आपको शिकायत नहीं रहेगी । इस डाक्टर प्रेत वाले मामले से निपटते ही मैं अपने विभाग का सुदृढ़ एवं सुनियोजित ढंग से विस्तार करूंगा ।'

'मुझे तुम्हारी बात से प्रसन्नता हुई । हां, तुम्हारी यौगिक शक्ति द्वारा लीविन ठीक हो जायेगी न !'

'आशा तो यही है चचा जी ?'

'और डाक्टर प्रेत का सामना करने के लिये···।'

'उसके लिये दो रास्ते हैं । पहला तो यह कि लीविन का सहारा लिया जाय । आप जैसा बता रहे हैं, ली डाक्टर प्रेत का माध्यम रही है । उस पर यौगिक प्रयोग करके डाक्टर प्रेत के पास पहुँचा जा सकता है ।'

'और ?'

'दूसरा उपाय यह है कि यहीं रह कर डाक्टर प्रेत के दूसरे आक्रमण की प्रतीक्षा की जाय । दूसरी बार जब वह आयेगा तो मैं उसको जकड़ लूंगा ।'

'क्या इतने शक्ति शाली प्रेत साधन को जकड़ना सम्भव है ?'

'बिल्कुल !' विराट दृढ स्वर में बोला—मैंने आपको बताया न कि आसुरी शक्ति के ऊपर दैवी शक्ति हमेशा भारी होती है ।'

'मेरे ख्याल से यही दूसरा रास्ता ठीक है । क्योंकि अगर तुम ली का सहारा लेकर किसी दूसरी जगह डाक्टर प्रेत को घेरने

गये और वह इधर आ गया तो परेशानी होगी।'

'ठीक है, मेरे विचार से भी यही रास्ता ठीक रहेगा।'

'तो अब गोपाली के यहां चला जाय।'

'चलिये।'

दोनों चल पड़े।

मिर्जा साहब ने बैरे को बुलाकर बिल चुकता किया और बाहर आकर टैक्सी करके गोपाली के यहां चल पड़े।

चीन के सर्वोच्च सुरक्षा अधिकारी पाम्रोविन का विशेष कक्ष !

डाक्टर प्रेत के चेहरे पर कठोरता थी और वह तीव्र स्वर में अपना मत प्रगट कर रहा था—'जनरल···तुमने मेरी निगरानी की कड़ी व्यवस्था कर रखी है और लाल सैनिकों को यह आदेश दिया कि अगर मैं चीन से बाहर जाने की चेष्टा करूं तो मुझे फौरन गोली मार दी जाय।'

हालांकि जनरल पाम्रोविन को सर्वोच्च स्तर पर अधिकार मिल गये थे कि वह डाक्टर प्रेत के प्रति कठोर रूख अपनाये। लेकिन वह बहुत सतर्क और समझदार व्यक्ति था। उसमें आदमी को और आदमी के मन की बातों को समझने की अपूर्व क्षमता थीं। इसलिये चीन की षड़यन्त्रकारी राजनीति में अनेक प्रतिद्वन्दियों को परास्त करके वह इतने उच्च स्तर के गोपनीय पद पर पहुंचा था।

इस समय डाक्टर प्रेत के स्वभाव और बातचीत से वह

समझ रहा था कि या तो भारतीय डाक्टर मधु चांदना का अपहरण करने में यह सफल हो गया है, अथवा अन्य कोई रास्ता उसे मालूम हो गया है जिससे वह इस कार्य में विजय पा सकता है। तभी वह ऐसे कड़े स्वरों में बात कर रहा है।

इसलिए,

इस समय उसने राजनीतिज्ञों जैसी चतुराई से काम लिया।

अपेक्षाकृत नम्र स्वर में वह बोला—'इसके लिये मैं विवश हूं असीम डाक्टर प्रेत ! आप तो जानते हैं सर्वोच्च स्तर पर मिली आज्ञा की मैं अवहेलना नहीं कर सकता।'

'क्या कारण है।' डाक्टर प्रेत भड़का—'अगर मैं प्रेत साधना के लिए चीन से कहीं बाहर जाता हूँ तो वहां भी नहीं जा सकता हूं।'

'आप बिल्कुल जा सकते हैं। बस आपको इसकी सूचना देनी होगी।'

'ताकि आप मेरे साथ सूचना अधिकारी मेरी निगरानी के लिये भेज सकें।'

'मैंने कहा न, अपनी ओर से मैं ऐसा कोई अशोभनीय कदम नहीं उठाना चाहता। लेकिन सर्वोच्च आज्ञा के सामने तो मैं विवश हूं।'

'आप और चीन के सर्वोच्च अधिकारी इस बात को जानते है कि अगर मैं अपने प्रेतों को आज्ञा दूं तो पूरे चीन में भयंकर तबाही और उत्पात हो सकता है।'

'मैं दूसरों की बात नहीं जानता। लेकिन कम से कम मैं इस सच्चाई से पूरी तरह परिचित हूं।'

'मैंने चीन की ओर चीनी अधिकारियों की बहुत सेवा की है जनरल।' डाक्टर प्रेत कुपित स्वर में कहता गया—'लेकिन मेरी सेवाओं के बदले में मुझे इतना घृणित पुरस्कार मिल रहा

है। मैं अपने देश चीन को बेहद प्यार करता हूं। इसी का परिणाम है कि चीनी अधिकारियों से इतना अपमान पाने के बावजूद भी मैं चुप हूं और बदले की भावना से कोई भी कदम नहीं उठा रहा हूं।'

'निश्चय ही यह आपकी महानता है डाक्टर प्रेत।' राजनीतिज्ञों जैसी चतुरता के साथ जनरल पाओविन नम्र स्वर में बोला—'मैं आपकी भावना से सर्वोच्च अधिकारी को अवगत कर दूंगा।'

जनरल पाओविन की राजनीतिज्ञ सरीखी चतुरता से डाक्टर प्रेत के ऊपर प्रभाव पड़ा और वह अपेक्षाकृत नम्र पड़ा।

पहले की अपेक्षाकृत नम्र स्वर में वह बोला—'सुनिये जनरल पाओविन।'

'आज्ञा दीजिये डाक्टर प्रेत!'

'उस भारतीय डाक्टर मधु चांदना को लाना और विक्रांत से बदला लेना। चीन की ही नहीं मेरी भी प्रतिष्ठा का प्रश्न है।'

'मैं इस बात को महसूस कर रहा हूं माननीय!'

'मैंने अपने दादा तालावान को बुलाया था। उन्होंने मुझे डाक्टर मधु चांदना का अपहरण करने का एक रास्ता बताया है लेकिन उसे पूरा करने के लिये कोई भी ऐसा काम करने के लिए आपकी सहायता की आवश्यकता होगी।'

'आप मुझे आज्ञा दीजिये। मैं आपके लिये और चीन के हितों के लिये कोई भी सेवा करने को प्रतिपल तैयार हूं।'

'आपको दो काम करने हैं।'

'बताइये।'

'एक तो आपको लाल मिट्टी से डाक्टर मधु चांदना का पुतला तैयार करना होगा।' जिसकी शक्ल में और डाक्टर मधु

चांदना की शक्ल में रत्ती भर भी अन्तर न हो।'

'यह काम हो जायेगा। दूसरा बताइये।'

'आपको ग्यारह विभिन्न नस्लों के आदमियों का प्रबन्ध करना होगा।'

'ग्यारह विभिन्न नस्लों के आदमी !···इसका क्या होगा।'

'डाक्टर मधु चांदना के पुतले के सामने उन आदमियों की बलि देनी होगी और उनके रक्त से उस पुतले को स्नान कराना होगा।'

'क्या इसके अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं है ?'

'बिल्कुल नहीं।' डाक्टर प्रेत कठोर स्वर में बोला—'अगर आप मेरे द्वारा डाक्टर मधु चांदना का अपहरण करना चाहते हैं तो आपको वह उपाय करने ही होंगे, जो मैं बता रहा हूं। अन्यथा फिर मेरी कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।'

जनरल पाओविन कुछ क्षणों तक सोचता रहा।

अन्त में वह निर्णायक स्वर में बोला—'यह काम भी हो जायेगा और बताइये।'

'ये दोनों ही मेरे पास अमावस्या तक पहुंच जाना चाहिये क्योंकि ठीक अमावस्या की रात में बारह बजे मुझे यह बलि देकर साधना करनी होगी।'

इस साधना के बाद क्या डाक्टर मधु चांदना आ जायेगा।'

'नहीं। इसके बाद एक मास तक प्रतीक्षा करनी होगी। एक मास बाद अगली अमावस्या को मैं उस पुतले को लेकर भारत के महानगर बम्बई जाऊंगा···।' डाक्टर प्रेत ने कहा और फिर वह तमाम उपाय बताने लगा जो उसके दादा तानवान ने बताया था।

बात समाप्त करते हुए डाक्टर बोला—'आपको इस बात का पूरा प्रबन्ध करना होगा कि जिस समय बम्बई में डाक्टर मधु चांदना मेरे पास आ जाये, वहां से तुरन्त मैं उसे लेकर प्रस्थान

कर सकूं। दादा तानवान ने कहा है कि अगर इसमें जरा भी बिलम्ब हुआ तो भयकर अनिष्ट हो सकता है।'

'बिल्कुल भी विलम्ब नहीं होगा। आपने जैसा कहा है, सारा प्रबन्ध उसी अनुसार हो जायेगा।' जनरल पाम्रोविन ने दृढ़ शब्दों में आश्वासन दिया।

कुछ देर बाद डाक्टर प्रेत वहां से रवाना हो गया।

●

बिराट को देखकर गोपाली और ताऊ इस प्रकार प्रसन्न हुए, जैसे उन्हें कहीं का गड़ा हुआ खजाना अचानक मिल गया हो।

यह अलग बात है कि ताऊ ने अपनी प्रसन्नता दबाकर तुरुप जड़ दिया—'बेटा विराट, माना कि तुम्हारे में बहुत गुण है, यह भी माना कि तुम लायक लड़के हो। लेकिन इसका यह मतलब कतई नहीं है कि तुम अपना फर्ज भूलकर इधर उधर मस्ती मारते रहो या इसका क्या मतलब हुआ कि इतने दिन से हम तुम्हारे लिये झक मार रहे हैं और तुम्हारा कोई पता ही नहीं।

विराट बड़े शांत स्वर में मगर तीखा व्यंग करता था।

इस समय भी उसने ऐसा ही किया। बड़े शांत स्वर में उसने तीखा व्यंग किया—'बात यह है ताऊ जी, कि छोटे जैसा बड़ों को देखते हैं, वैसा ही सीखते हैं। दुर्भाग्य से आपने कभी जिम्मेदारी नहीं महसूस की। हमेशा इधर उधर भटकते रहे उसी का असर अब हम लोगों पर पड़ रहा है।

गोपाली ने तुरन्त विराट की पीठ ठोंकी 'जियो खुश रहो बेटा ! यकीनन जब तक तुम्हारे जैसे नौजवान इस भिश्ती वाले को जूता नहीं लगायेंगे, इसकी अक्ल ठिकाने नहीं आ सकती अच्छा यह बताओ कि तुम्हें विश्वास है कि तुम्हारी यौगिक शक्ति से ली ठीक हो जायेगी।'

इस प्रश्न का गम्भीर उत्तर दिया विराट ने—'विश्वास शब्द का प्रयोग केवल भगवान ही कर सकते हैं, गोपाली चाचा। साधारण इन्सान तो केवल 'आशा' शब्द प्रयोग करने का अधिकारी है। उसी के अनुसार मैं कहता हूं कि अगर गुरू की कृपा हुई तो मैं अवश्य ही ली को आरोग्य करने में सफलता प्राप्त कर लूंगा।'

'और डाक्टर प्रेत का सामना ?'

'उसके लिये भी आप चिन्ता न करें। आसुरी शक्ति पर सदैव दैवी शक्ति भारी होती है।'

गोपाली के आग्रह पर सब लोगों ने चाय पी और पहले विक्रांत और जगत से मिलने के लिये डाक्टर मधु चांदना के बगले की ओर चल पड़े।

प्रोग्राम बना, पहले विक्रांत और जगत से मिला जायेगा··· उसके बाद ली के उपचार के लिये हास्पिटल प्रस्थान किया जायेगा।

उसी प्रोग्राम के अनुसार !

पहले गोपाली और ताऊ मिर्जा, मोहन, मार्टिन और विराट को लेकर डाक्टर मधु चांदना के यहां पहुंचे।

जैसा कि स्वाभाविक था।

विराट को देखकर जगत और विक्रांत दोनों को अत्याधिक प्रसन्नता हुई।

कुछ औपचारिक बातों के बाद हास्पिटल चलने का प्रोग्राम बना, जहां ली भरती थी।

विक्रांत भी अब क्योंकि पूर्ण स्वस्थ था, इसलिये वह भी साथ हो लिया।

हास्पिटल में।

ली की अवस्था में कोई परिवर्तन नहीं आया था।

वह न हिलती-डुलती थी···न कुछ खाती-पीती थी। बस, लेटी हुई एकटक छत की ओर देखती रहती थी। उसे कमजोरी न आये, इसलिये नली के द्वारा जबर्दस्ती फलों का रस पिलाया जाता था।

उपचार करने वाले डाक्टर परेशान थे। क्योंकि उन्हें रोग समझ में नहीं आया था और वैज्ञानिक होने के कारण वे इस बात को माननें को तैयार नहीं थे कि प्रेत बाधा के कारण ली की ऐसी अवस्था हुई है।

विज्ञान में प्रेत अस्तित्व को कोई मान्यता नहीं दी गई है।

जबकि,

परा–मनोवैज्ञानिकों ने, जिन्हें गोपाली उपचार के लिये लाये थे, ली को देखने के बाद स्पष्ट घोषणा की थी कि इस युक्ती के ऊपर बहुत भयंकर प्रेत क्रिया की गई है, जिसके कारण इसका चेतनमन सुन्न हो गया है। इसे फिर से गतिशील और चेतन बनाना अगर असम्भव नहीं है तो कठिन अवश्य है।

उपचार कर रहे हास्पिटल के डाक्टरों ने इसे महज मजाक समझा था।

हास्पिटल के इन्चार्ज डा० दारूवाला की अध्यक्षता में आठ डाक्टरों का एक पूरा दल ली के रोग को समझने की कोशिश कर रहा था। लेकिन इतने दिनों बाद भी वे किसी निश्चित परिणाम पर नहीं पहुँच सके थे।

जिस समय गोपाली का दल हास्पिटल पहुँचा···सन्ध्या ढल रही थी और शाम के छः बज चुके थे।

डाक्टर दारूवाला आठ डाक्टरों और कुछ अन्य विशेषज्ञों के साथ अपने कमने में बैठे हुए ली से सम्बन्धित उस रिपोर्ट का अध्ययन कर रहे थे, जो ली के सम्बन्ध में अब तक प्राप्त हुई थी।

गोपाली से क्योंकि डा० दारूवाला का परिचय 'याराना' टाइप का था, इसलिये सबके साथ वह सीधे उनके कमरे में पहुँच गये।

इतने लोगों को एक साथ आया देखकर जहां एक ओर सभी लोग हड़बड़ा कर उठ खड़े हुए, वहीं डा० दारूवाला ने मुस्करा कर प्रश्न किया—'क्या बात है गोपाली ? आज क्या हास्पिटल पर चढ़ाई करने का इरादा लेकर आये हो ?'

'तुम्हारे हास्पिटल में रखा ही क्या है डाक्टर ? सिवाय मरीजों और दवाओं के......। उठो...और ...मेरे मित्रों से मिलो...।'

गोपाली ने क्रम से ताऊ, मिर्जा मोहन मार्टिन, जगत, विक्रांत और विराट का परिचय सबसे कराया। विराट के सम्बन्ध में इतना अवश्य बताया कि वह जगत का भतीजा जैसा है और प्रेत विद्या में उसे गहरी जानकारी है।

डा० दारूवाला ने अपने साथ में सभी डाक्टरों का परिचय दिया। सभी ने एक दूसरे से हाथ मिलाये।

इस औपचारिकता के बाद मुस्कराते हुए डा० दारूवाला ने विराट से प्रश्न किया—'क्यों मिस्टर विराट, आप प्रेत अस्तित्व में विश्वास करते हैं ?'

विराट ने शांत मगर दृढ़ स्वर में उत्तर दिया—'विश्वास ही नहीं करता, बल्कि...मेरे साथ हर समय कुछ प्रेत रहते हैं। अगर आप लोग आज्ञा दें तो मैं प्रेतों के कुछ कारनामें दिखाऊं।'

जैसे विराट की बात महज मजाक हो।

सभी डाक्टरों की सम्मिलित हंसी उस कक्ष में गूंज उठी। डा० दारूवाला ने हसते हुये उपहास उड़ाने वाले भाव में कहा—'अवश्य! अगर ऐसा कोई चमत्कार आप दिखा सकें तो हम लोग आपके प्रति अनुग्रहीत होगे।'

गोपाली की पार्टी के सभी लोग शांत थे। क्योंकि उन्हें विराट की शक्ति पर गहरा विश्वास था।

और विराट!

वह युवक तो जैसे उत्तेजित होना जानता ही नहीं था।

पहले ही जैसे शांत स्वर में उसने उत्तर दिया—'किसी अप्रिय घटना के लिये मुझे दोष मत दीजियेगा डाक्टर!'

'बिल्कुल नहीं, हमें तो इस तरह के चमत्कार…।'

डा० दारूवाला की बात पूरी भी नहीं हो सकी।

विराट ने अपनी छाया को चुपचाप आज्ञा दी।

और…!

डा० दारूवाला का शरीर इस तरह हवा में उठ गया, जैसे किसी स्प्रिंग के जरिये उन्हें उछाल दिया गया हो।

इतना ही नहीं।

सभी डाक्टरों ने अनुभव किया कि उनके सिर पर कोई अज्ञात आदमी चपत मार रहा है। सभी उस अज्ञात आदमी को पकड़ने के लिये इधर-उधर हाथ मारने लगे। इस क्रिया में वे एक दूसरे को मार भी बैठे। लेकिन वह अज्ञात आदमी पकड़ में नहीं आया।

गोपाली की पार्टी…इस तमाशे को देख कर हंस रही थी…।

जबकि,

डाक्टरों की पार्टी विराट के इस चमत्कार से बद-हवास थी…।

केवल विराट एकदम शांत और स्थिर खड़ा था।

अधर में लटके हुए डाक्टर दारूवाला को विराट ने शान्त स्वर में सम्बोधित किया—'क्या ख्याल है डाक्टर दारूवाला? चमत्कार देख लिया या कुछ करामातें और दिखाऊं? मेरे प्रेत आपको इसी तरह टांगे हुए पूरी बम्बई की सैर करा सकते हैं···।'

क्या उत्तर दें डाक्टर दारूवाला?

वह तो इस एक ही चमत्कार में इस तरह बौखला गये थे कि उनसे कोई उत्तर नहीं देते बन रहा था। विराट के एक ही चमत्कार से सभी डाक्टरों की वैज्ञानिकता समाप्त हो गई थी।

बौखलाये से डा० दारूवाला बोले—'मैं मान गया भाई विराट···कृपया मुझे नीचे उतारो।'

गोपाली ने तुरन्त व्यंग किया—'क्या ख्याल है डाक्टर, अगर तुम्हें आदमी से कुम्हार का गधा बना दिया जाये। विराट के प्रेत यह करामात भी दिखा सकते हैं।'

लेकिन डा० दारूवाला की हिम्मत तो दूसरा कोई चमत्कार देखने की हो ही नहीं रही थी। वह लगभग घिघियाते से बोले—'मजाक मत करो गोपाली···मैं मान गया कि प्रेत अस्तित्व होता है···कृपया विराट से मुझे नीचे उतारने को कहो।'

विराट ने स्वयं ही अपनी छाया को आदेश दिया और बिना किसी झटके के बहुत आहिस्ता से डा० दारूवाला का शरीर वापस कुर्सी पर आ गया।

इसके साथ ही सभी डाक्टरों के सिरों पर होने वाली चांदमारी रुक गई।

और···!

डाक्टरों का दल इस प्रकार आश्चर्य से आंखें फाड़े विराट को देख रहा था जैसे वह भूलोक का प्राणी ही न हो।

गोपाली आगे बढ़े और डा० दारूवाला के पास पहुँच कर

उनका कन्धा थपथपाते हुए बोले—'कहो प्यारे डाक्टर, क्या ख्याल है ? प्रेत अस्तित्व पर अब भी विश्वास करने को तैयार हो या नहीं ?'

डा० दारूवाला ने गहरी सांस खींची—'क्या बताऊं गोपाली ? कुछ समझ नहीं पा रहा हूं । विज्ञान हमें प्रेत अस्तित्व पर विश्वास करने की आज्ञा नहीं देता । लेकिन जो कुछ इस क्षण अपनी आंखों से देखा और अनुभव किया, उस पर अविश्वास भी नहीं किया जा सकता । वास्तव में हम कुछ समझ पाने की स्थिति में नहीं है ।'

'तुम कुछ भी समझना छोड़ दो प्यारे डाक्टर ! इस समय हम ली विन का उपचार करने के लिये विराट को लाये हैं । पहले वहां चलो । प्रेत अस्तित्व के बारे में विराट बाद में तुम्हें विस्तृत रूप में समझा देगा ।'

'क्या इतनी जल्दी ली का उपचार होना और उसका स्वस्थ होना सम्भव है ?'

डा० दारूवाला के प्रश्न का उत्तर दिया विराट ने—'उस युवती को देखने के बाद ही मैं इस सम्बन्ध में कुछ राय दे सकूंगा ?'

एक गहरी उत्सुकता सभी को थी ।

यूं मित्र मण्डली के उपस्थित सभी सदस्यों को यह विश्वास था कि विराट ली को अपने यौगिक उपचार से अवश्य स्वस्थ कर देगा । लेकिन इसमें कितना समय लगेगा, इसे जानने की सभी को तीव्र उत्सुकता थी ।

डा० दारूवाला के पथप्रदर्शन में सब लोग उस स्पेशल वार्ड में पहुंचे, जहां ली विन को विशेष सुरक्षा के अन्तर्गत रखा गया था ।

ली विन की जान को खतरा था, इसलिये बम्बई के पुलिस अधिकारियों ने गोपाली के परामर्श पर उसकी सुरक्षा का कड़ा

प्रबन्ध किया था। दस सशस्त्र पुलिस के जवानों की टोली हर समय उस स्पेशल वार्ड के पहरे पर रहती थी। उन्हें ग्रार्डर था कि किसी भी ग्रनजाने ग्रादमी को उस वार्ड में प्रवेश न करने दें। यदि कोई ग्रादमी जबर्दस्ती उस वार्ड में प्रवेश करना चाहे ग्रौर चेतावनी देने के बावजूद भी न मानें तो फौरन उसे गोली मार दी जाये।

वार्ड में घुसते ही दरवाजे के पास सभी को विराट ने रोक दिया।

उसने मित्र मण्डली के सदस्यों से कहा—'मेरी छाया बता रही है कि इस कमरे में जो युवती है, उसके दिमाग को भयानक तांत्रिक क्रिया द्वारा ग्रवचेतन कर दिया गया है।'

'इसका मतलब...?' गोपाली ने कहना चाहा।

लेकिन उनकी बात बीच में विराट ने काट दी—'ग्रभी कोई मतलब मत निकालिये गोपाली चाचा! पहले मुझे सारी स्थिति समझ लेने दीजिये। ग्राप सब लोग यहीं रुक जायें... डा० दारूवाला।'

'कहिये मिस्टर विराट!'

'ग्राप लोगों को यहीं दरवाजे के पास बैठने का प्रबन्ध करा दें। मरीज तक मैं ग्रकेले ही जाऊंगा।'

जैसे विराट की ग्राज्ञा सर्वोपरि हो।

डा० दारूवाला ने वार्ड की नर्स को ग्रादेश दिया ग्रौर तुरन्त सबके बैठने का प्रबन्ध वहीं दरवाजे के पास कर दिया गया।

विराट ग्रकेले ली विन के पास पहुंचा।

वह पलंग पर चित्त लेटी एक टक छत की ग्रोर देख रही थी। शरीर में कोई हरकत नहीं थी। यहां तक कि पलकें भी स्थिर थीं।

विराट झुक-झुक कर लगभग पन्द्रह मिनट तक उसका निरीक्षण करता रहा। आंखें देखीं। चेहरा देखा।

उसके बाद वापस आकर मिर्जा साहब से बोला—'मिर्जा चचा !'

'बोलो म्यां भतीजे।'

'वास्तव में यह युवती प्रेत क्रिया द्वारा इस प्रकार नहीं हो गई है।'

'तो···?'

'उस डाक्टर प्रेत ने इस युवती के साथ एक बेहद बेहया किस्म का गूंगा और बहरा प्रेत इस युवती के साथ चिपटा दिया है। इसी कारण न यह बोल पाती है और न सुन पाती है···।'

'अरे···।' विराट की बात पर सभी को गहरा आश्चर्य हुआ।

'मेरा ख्याल है मैं इसे एक घन्टे में स्वस्थ कर दूंगा। अलबत्ता इस युवती को थोड़ा शारीरिक कष्ट अवश्य होगा। मसलन यह छूट पायेगी। बिस्तर पर उछलेगी। हो सकता है, कुछ चोट भी आ जाय। ऐसा सब इसलिए होगा कि मेरी छाया इस युवती के शरीर में प्रविष्ट प्रेत से लड़ेगी। अन्तिम विजय मेरी होगी। युद्ध में वह प्रेत समाप्त हो जायेगा और यह युवती होश में आ जायेगी।'

डाक्टरों को विराट की बात पर गहरा आश्चर्य हुआ।

डाक्टर दारुबाला आश्चर्य से बोले—'क्या कह रहे हैं मिस्टर विराट ! जिस रोग को अभी तक हम लोग समझ भी नहीं पाये उसे ही आप एक घण्टे में ठीक कर देंगे।'

विराट ने सदैव जैसे शांत स्वर में उत्तर दिया—'मैं जो कुछ कह रहा हूं खूब सोच समझकर और बिल्कुल ठीक कह रहा हूं डाक्टर ! आप देखेंगे कि गुरु की कृपा से एक घन्टे में यह

युवती पूर्ण स्वस्थ हो जायेगी। हां, कुछ कमजोरी अवश्य रह सकती है। कृपया कुछ सामान का प्रबन्ध कर दें।'

'बताइये !'

'एक लोटा शुद्ध जल। जल अगर हैन्ड पम्प का हो तो अच्छा है। कुछ थोड़े से फूल और दस अगर बत्तियां।'

'मैं अभी इन चीजों को मंगाता हूं।' डाक्टर दारु वाला उठ गये।

लगभग पन्द्रह मिनट बाद स्वयं डाक्टर दारू वाला सब चीजें उठाये हुये आ गये। क्या पता विराट का प्रभाव था या अन्य कोई बात···डाक्टर दारूवाला ने इस समय जूते नहीं पहन रखे थे। हाथ पैर धोकर सभी चीजें हाथों में उठाये हुये इस प्रकार आये जैसे किसी मन्दिर में प्रवेश कर रहे हो।

और विराट !

इस समय उसके शरीर पर वस्त्र के नाम पर केवल कच्छा और लंगोट था। उसके कुन्दन जैसे दमकते हुये गठे शरीर को वार्ड में उपस्थित नर्स ललचाई दृष्टि से देख रही थी। वही नहीं वहां उपस्थित सभी पुरूष भी विराट के शरीर को ईर्ष्या जनित आश्चर्य के भाव से देख रहे थे। इस समय विराट कहीं से भी तो भू लोक का मानव नहीं लग रहा था। पूर्ण रूप से देवता।

डाक्टर दारू वाला ने विराट का यह देव तुल्य रूप देखा तो एक क्षण के लिये स्तब्ध से खड़े रह गये। विराट उनके हाथ से सारा सामान लेता हुआ शांत गम्भीर स्वर में बोला—'आपने क्यों कष्ट किया डाक्टर।'

डाक्टर दारू वाला मुग्ध भाव से बोले—'इसमें कष्ट जैसी क्या बात है मिस्टर विराट ! आप जब मानव हित से लिये इतना बड़ा काम कर रहे हैं तो यह हमारा स्वाभाविक कर्त्तव्य हो जाता है कि हम आपकी अधिक से अधिक सहायता करें।

वैसे यह बात स्वीकार करने में मुझे कोई हिचक नहीं है कि कोई अनजानी सी शक्ति मुझे आपकी सहायता के लिये प्रेरित कर रही थी।'

विराट सभी लोगों को सम्बोधित करता हुआ बोला—'कृपया कुछ भी देखें तो अपनी जगह छोड़कर न उठें। शांत बैठ कर देखते रहे।'

सब सामान लेकर विराट ली के पास पुनः पहुँचा। मंत्रोच्चार करते हुये उसने पलंग के चारों ओर लोटे के जल का छिड़काव किया। थोड़ा सा जल हाथ में लेकर ली के मुंह को पोछा। उसके पूरे शरीर पर जल के छींटे मारे। पलंग पर चारों ओर फूल रखें। डाक्टर दारूवाला माचिस और अगरबत्ती दोनों ही चीज लाये थे। विराट ने दस अगर वत्तियां जलाई और उन्हें लेकर ली के चारों ओर परिक्रिमा करने लगा।

चमत्कार हुआ।

जो ली लगभग एक मास से बिल्कुल हिल-डुल नहीं रही थी। एकदम शांत, स्थिर पड़ी रहती थी। उसके शरीर में आश्चर्यजनक रूप से चेतना का संचार हुआ।

उसका शरीर पलंग पर उछलने लगा और उसके मुख से ऊजी बसा 'गों गों' जैसा स्वर निकलने लगा।

इस चमत्कार को देखकर सभी डाक्टरों के मुख से आश्चर्य मिश्रित चीखें निकलने लगी। गोपाली ने डांटा—'यह क्या तरीका है। कृपया आप लोग अपने पर नियंत्रण रखिये और जो कुछ हो रहा है उसे धैर्य पूर्वक देखिये।'

गोपाली की गर्जना से सभी डाक्टर शांत हो गये।

उधर!

विराट ने परिक्रिमा समाप्त कर ली थी और अगर बत्तियों को पास रखे स्टूल पर खोंस दिया था।

आश्चर्य!

अगरबत्तियों से निकलने वाला धुआं हिल भी नहीं रहा था। वह किसी चमत्कार के द्वारा उठकर सीधे पलंग पर लेटी ली के ऊपर फैलता जा रहा था।

विराट ली के सिर की ओर जमीन में समाधि की मुद्रा में आंखें मून्द कर बैठ गया था और ली का शरीर आश्चर्यजनक ढंग से पलंग पर लगभग दो–दो फिट ऊपर उछल रहा था। उसके मुंह से 'गों गों' जैसा शब्द लगातार निकल रहा था।

डाक्टरों के लिये निश्चित रूप से यह एक चमत्कार था जिसे वे आंखें फाड़े आश्चर्य से देख रहे थे। ये सब उनके लिये जादूगरी के तमाशे से कम नहीं था।

अचानक !

लेटी हुई ली पलंग पर खड़ी हो गई और इस प्रकार अपने हाथ फैलाकर चलने लगी जैसे किसी से लड़ रही हो। उसके मुंह से निकलने वाली चीखें बढ़ गई थी।

कई बार वह पलंग पर गिरी। एक बार उसका सिर भी पलंग के पाये से टकराया और खून निकल पड़ा। डाक्टर दारू वाला ने उठ कर ली के पास जाना चाहा। लेकिन गोपाली ने उनका हाथ पकड़ कर उन्हें शांत बैठे रहने का संकेत किया।

लगभग आधा घण्टा इस तरह की लड़ाई चलती रही।

आधा घण्टा बाद ली बिस्तरे पर गिर कर इस तरह तड़पने लगी जैसे उसका प्राणांत हो रहा हो। वह बुरी तरह हाथ पैर पटक रही थी और उसके मुंह से भयानक रूप से चीखें निकल रही थी।

बिल्कुल ऐसा ही दृश्य था जैसे कोई ली का गला दबाकर उसके प्राण लेने की चेष्टा कर रहा हो।

यह स्थिति लगभग पन्द्रह मिनट तक रही।

पन्द्रह मिनट बाद वह शांत हो गई। जो आंखें हर समय खुली रहती थी वे इस समय बन्द थी।

और !

लगभग दस मिनट बाद ली के मुंह से कमजोर सी आवाज निकली—'पा···नी···।'

डाक्टर दारूवाला ने फिर उठाना चाहा। लेकिन गोपाली ने मंद मगर कठोर स्वर में डांटा—'तमाशा मत करो डाक्टर ! हमारा कोई भी काम विराट की सारी साधना पर पानी फेर देगा।'

'लेकिन ली पानी···।'

'मैं भी सुन रहा हूं। ली की चिन्ता तुमसे ज्यादा मुझे है। लेकिन जब तक विराट आज्ञा नहीं देता, हमारे लिये कोई भी कदम उठाना अहितकर होगा।'

लगभग पांच मिनट बाद विराट ने धीरे २ अपनी आंखें खोली और गम्भीर स्वर में उच्चारण किया—'जय भैरव···जय बाबा भूनेश्वर नाथ···।'

इन बीचों लगातार ली पानी को रट लगाये हुये थी।

विराट ने शान्त स्वर में पूछा—'कैसी तबियत है मिस ली ?'

'मैं···ठीक हूं···मुझे पानी चाहिये।

'अभी पानी मिलता है।' विराट ने हाथ हटा लिया और पलंग पर रखे हुए फूलों को उठाकर बैठे हुये लोगों के पास आया, अपना हाथ फैलाकर उसने उसमें रखे हुये फूलों को दिखाया ! सारे फूल इस तरह झुलस कर काले पड़ गये थे जैसे उन्हें आग पर रख दिया गया हो।

विराट ने गम्भीर स्वर में बताया—'गूंगे प्रेत को मैंने समाप्त कर दिया है। ये झुलसे हुये फूल इस बात का प्रतीक है। डाक्टर दारूवाला···।'

मंत्रमुग्ध से डाक्टर दारूवाला खड़े हो गये और सम्मान-जनक स्वर में बोले– 'क्या आज्ञा है मिस्टर विराट।'

'अब ली सामान्य मरीजों जैसी है। उसके शरीर में बेहद कमजोरी है। इस समय उसे किस तरह के उपचार की आवश्यकता है, इस बारे में जायजा लें। मेरा काम अब समाप्त हो गया।'

'हम लोग अब ली के पास जा सकते हैं?'

'बिल्कुल। अब तो आप ही लोगों का काम है। गोपाली चाचा…।'

'बोलो बेटा!' गोपाली खड़े हो गये।

'मैं मिर्जा चचा के साथ जा रहा हूं। इन फूलों को समुद्र के किनारे जलाकर राख समुद्र में प्रवाहित करनी होगी। मैं कल आपके पास आ सकूंगा।' तब आगे के कार्यक्रम पर बात होगी।'

'मैं भी साथ चलूं बेटा विराट!' जगत ने पूछा।

'ऐसी कोइ आवश्यकता नही है चाचा जी।' विराट ने शान्त स्वर में उत्तर दिया—'आपका यहां रहना आवश्यक है—।'

विराट अपने कपड़े पहनने लगा।

डाक्टर दारूवाला ने नर्स को ग्लूकोज का पानी तैयार करने की आज्ञा दी। सभी लोग विराट के प्रति इस तरह कृतज्ञ थे कि उसकी प्रशंसा करने के लिये उन्हें शब्द नहीं मिल रहे थे। जब कि सभी कुछ न कुछ कहना चाहते थे।

विक्रांत आगे बढ़ा और विराट के प्रति अपना आभार प्रदर्शन करने के लिये उसे अपनी बांहों में बांध लेना चाहा। लेकिन विराट पीछे हट कर बोला—'मुझे अभी छूना नहीं भाई जी…मेरा शरीर अभी प्रेत द्वारा ढका हुआ है। आज रात भर की साधना के बाद मैं इसके अभिशाप से मुक्त हो पाऊंगा।

कल मैं जब मिलूंगा तो आप अपना आर्शीवाद मुझे दीजिये।'

विक्रांत ने विराट की बात मानी।

वह अपनी जगह पर रुक गया। लेकिन अपने मन के उदगार को उसने शब्दों में व्यक्त कर दिया।

'विराट, तुम सचमुच कितने महान हो, इसे मैं आज महसूस कर रहा हूं। ली को स्वस्थ करके तुमने व्यक्तिगत रूप से मेरे ऊपर बहुत बड़ा एहसान किया है।'

'आप ऐसी बात कहकर मुझे क्यों लज्जित कर रहे हैं भाई जी ! मैं आपका छोटा भाई हूं आप लोगों के आर्शीवाद से अगर मैं आप लोगों के किसी काम आ सकूं, तो इससे बढ़ कर सौभाग्य की बात मेरे लिये और क्या होगी···चलिये मिर्जा चचा !'

मिर्जा चचा चुपचाप विराट का अनुसरण करते हुये वार्ड के बाहर निकल गये।

सभी लोग विमुग्ध से जाते हुये विराट को देख रहे थे।

❁

चीन का नगर सियान !

यूं इस नगर में ऐसा कुछ नहीं था, जो दर्शनीय हो अथवा जिसके आकर्षण से बंधकर दर्शक यहां आयें।

एकदम सामान्य सा नगर सियान !

चीन के अन्य नगरों में जिस तरह आबादी का घनत्व बहुत ज्यादा है, उसी तरह सियान नगर का भी था।

फिर भी।

यह छोटा सा नगर चीन में अत्याधिक महत्वपूर्ण बन गया था। इस छोटे से नगर में जैसे चीनी सत्ता की राजनीति निश्चित की जाती थी।

और।

राजधानी पीकिंग द्वारा लिये किये किसी निर्णय की एक बार अपेक्षा भी की जा सकती थी। लेकिन सियान नगर में लिया गया निर्णय अन्तिम व सर्वोपरि था। इस नगर के निर्णय को काटने की क्षमता जैसे किसी में भी नहीं थी।

कारण ?

यूं ऊपर से देखने में कारण बहुत छोटा था और उसका कोई राजनैतिक महत्व भी नहीं थी। एक तरह से देखा जाये तो कारण इतना नगण्य था कि उसे हास्यास्पद भी कहा जा सकता था।

यहां, सियान नगर के उस भाग में, जहां नगर के अन्य भागों की अपेक्षा आबादी कम थी, हुआनसांग उर्फ डाक्टर प्रेत का निवास था।

देखने में बेहद साधारण सा व्यक्ति। साथ ही सत्ता में उसका कोई पद भी नहीं था। यहां तक कि वह चीनी कम्युनिष्ट पार्टी का सदस्य भी नहीं था। इसके बाद भी अपनी प्रेत साधना द्वारा उसने चीन में, चीनी शासन में महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त करली थी।

डाक्टर प्रेत की बात काटने का साहस चीन में किसी को भी नहीं था। यहां तक कि सर्वोच्च शासक माओत्से तुंग भी, जिनकी हर बात को चीनी सत्ता में कानून का रूप दिया जाता था, डाक्टर प्रेत की हर बात को मानते थे।

लेकिन···।

जब से भारत से डाक्टर प्रेत विक्रांत से पराजित होकर

लौटा था, उसके तेज में जैसे ग्रहण लग गया था। एक बार उसे ऐसा महसूस हुआ था, जैसे उसका बनाया हुआ प्रतिष्ठा का महल गिरने वाला है। चीनी सत्ता में जो उसने विशेष अधिकार प्राप्त किये, वे सब समाप्त होने वाले हैं। साथ ही ऐसा भी हो सकता है कि उसे कठोर यातना अथवा मृत्यु दंड तक भोगना पड़े।

कम्युनिज्म में ऐसा होता ही है। बलपूर्वक अधिकार एवं सत्ता प्राप्त किये जाते हैं। लेकिन जहां पहले की अपेक्षा दूसरा कोई शक्तिशाली व्यक्ति पैदा हुआ, वह अपने से पहले व्यक्ति का अस्तित्व तक मिटा डालता है।

ऐसा कम्युनिज्म में हमेशा से होता आया है।

इसीलिये तो···।

जरा सा इस बात का संकेत मिलते ही कि डाक्टर प्रेत में अब पहले जैसी अमानवीय शक्ति नहीं रह गई है और वह विक्रांत जैसे एक सामान्य से व्यक्ति से पराजित हो गया है, चीनी सत्ताधीशों की नजर डाक्टर प्रेत की ओर से बदल गई।

यहां तक कि जनरल पाओविन ने डाक्टर प्रेत के साथ सर्वोच्च शासक माओ की आज्ञा से ऐसा व्यवहार किया, जैसे डाक्टर प्रेत बहुत नगण्य व्यक्ति हो।

डाक्टर प्रेत की समस्त शक्ति और पहले की गई सेवाओं को चीनी शासक तुरन्त भूल गए और डाक्टर प्रेत के साथ इस तरह का व्यवहार किया जैसे उससे बढ़कर कोई अपराधी न हो।

क्रोध से पागल हो उठा डाक्टर प्रेत।

इच्छा हुई कि अपने द्वारा वशीभूत किये गये प्रेतों को आज्ञा दे और जहां तक सम्भव हो, चीनी गणराज्य में तहलका मचा दे। यह दिखा दे कि डाक्टर प्रेत अभी शक्तिहीन नहीं हो गया है। इन्सान से टकराने की उसमें शक्ति है।

अगर···।

शांतिपूर्वक सोचने पर डाक्टर प्रेत ने यह पाया कि इस तरह की कार्यवाही से उसकी खोई हुई प्रतिष्ठा वापस नहीं मिलेगी। यह उपाय केवल क्षणिक होगा और ऐसा हो सकता है कि मौका मिलते ही गोली बारूद का प्रयोग करके उसके अस्तित्व को ही समाप्त कर दिया जाये।

साथी ही···।

भारतीय जासूस एजेन्ट क्रास विक्रांत ने जो उसका भयानक अपमान किया, उससे बदला लेना सबसे आवश्यक था। उसी के कारण उसे अपने शक्तिशानी माध्यम लीविन से हाथ धोना पड़ा, जिसके बिना डाक्टर प्रेत अधूरा था। विक्रांत के कारण ही भयानक रूप से पराजित होकर भारत से भागना पड़ा और उसी के कारण चीन में ऐसा अपमान सहना पड़ा, जिसकी बजह से उसकी सारी प्रतिष्ठा ही जैसे समाप्त हो गई।

विक्रांत से बदला लिये बिना उसका जीवन एकदम व्यर्थ था। वास्तविक अपराध तो विक्रांत का ही था। जब तक विक्रांत को इस बात की सजा नहीं मिलती, उसके दिल को चैन नहीं आ सकता था।

यह एक ऐसी बात थी, जिसके कारण डाक्टर प्रेत के मन में चीनी शासकों के प्रति जो भी क्रोध की भावना थी, वह समाप्त हो गई। सारा क्रोध एक केन्द्र बिन्दु विक्रांत पर आकर स्थिर हो गया और डाक्टर प्रेत ने निश्चय कर लिया, या तो वह विक्रांत से बदला लेगा या अपना जीवन स्वयं समाप्त कर लेगा।

तभी तो···।

अपने दादा तानवान के प्रेत को बुलाने के लिये उसने भयंकर आराधना की और अन्त में उसे बुलाने में सफल भी हो गया।

उसके दादा तानवान के प्रेत ने जो उपाय बताया, उसे

डाक्टर प्रेत ने जनरल पाम्रोविन को बता दिया था और अब वह निश्चित था कि अन्तिम विजय उसकी ही होगी।

तीन दिन बाद अमावस्या की रात थी।

वह रात जब ग्यारह विभिन्न नस्लों के निरीह इन्सानों की बलि दी जानी थी।

जब से डाक्टर प्रेत जनरल पाम्रोविन को अपने दादा तानवान के प्रेत द्वारा बताये उपाय को बताकर आया था, तबसे निरन्तर प्रेत साधना में लगा हुआ था। मानव बलि देने के पहले उसे एक विशेष प्रकार की पूजा करनी थी। तभी उसके द्वारा दी गई बलि प्रेत साधना के लिये सार्थक होनी थी।

दिन के ग्यारह बजे।

डाक्टर प्रेत लगभग आधा घन्टा पहले ही अपनी साधना से उठा था और अब भोजन इत्यादि के लिये जा रहा था। भोजन में वह उबले मांस के अलावा कुछ नहीं लेता था।

वह अपने साधनागृह से उठकर ड्राइंग रूम में आया ही था, तभी फोन की घन्टी घनघना उठी।

इस फोन की घन्टी बहुत कम अवसरों पर बजती थी। क्योंकि सामान्य आदमी तो डाक्टर प्रेत से बात करने की हिम्मत ही नहीं करता था। सत्ता के जो सर्वोच्च अधिकारी थे, वही डाक्टर प्रेत से बात करने की हिम्मत कर पाते थे।

डाक्टर प्रेत ने आगे बढ़कर फोन का रिसीवर उठाया और माउथपीस पर घरघराती आवाज में बोला—'हलो···डाक्टर प्रेत बोल रहा हूं।'

'लाल क्रांति जिन्दाबाद डाक्टर प्रेत। मैं जनरल पाम्रोविन बोल रहा हूं।'

'हूं···कहिये जनरल।'

डाक्टर प्रेत की ऐसी गुर्राती सी आवाज निकली, जैसे जनरल पाम्रोविन उसका साधारण सेवक मात्र हो।

सचमुच !

कितना बदलाव आ गया था डाक्टर प्रेत में।

वही डाक्टर प्रेत, जो विक्रांत से पराजित होने के बाद जब भारत से लौटा था और जनरल पाम्रोविन के सामने उपस्थित हुआ था तो उसके स्वर में कितना भय था।

लेकिन आज।

अपने दादा का संरक्षण प्राप्त होते ही डाक्टर प्रेत की हीन भावना एकदम समाप्त हो गई थी और सहज, स्वाभाविक गर्व की भावना उसके मन में आ गई थी।

दूसरी ओर से जनरल पाम्रोविन का नम्र स्वर सुनाई दिया—'मैं यह निवेदन करना चाहता हूं डाक्टर प्रेत···।'

'जो कहना हो, उसे संक्षेप में कह डालो जनरल।' डाक्टर प्रेत ने बात काटी—'मेरे पास समय नहीं है। मुझे साधना करनी है। उस भारतीय कुत्ते विक्रांत से बदला लेने के लिये मुझे लम्बी साधना करनी पड़ रही है।'

'निश्चय ही यह प्रसन्नता की बात है। महान माम्रो को भी यह विश्वास है कि आप अब की अवश्य सफलता पायेंगे और चीन का मुख उज्जवल करेंगे।'

'आपने फोन करने का कष्ट कैसे किया जनरल ?'

डाक्टर प्रेत इस प्रकार बोल रहा था, जैसे इन सब बातों से उसका कोई मतलब ही न हो।

कमाल का कूटनीतिज्ञ था जनरल पाम्रोविन भी।

डाक्टर प्रेत द्वारा इस प्रकार उपेक्षापूर्वक बात करने के बावजूद भी जरा भी उत्तेजित नहीं हुआ। पहले के समान ही नम्र स्वर उसका सुनाई दिया—'आपने जिस तरह के ग्यारह व्यक्तियों को लाने का आदेश दिया था, वे आ गये हैं डाक्टर प्रेत।'

'ठीक है।'

'आप कृपया एक बार उन्हें देख लें ।'

'समय मिलने पर मैं देखने आ जाऊंगा ।'

'अगर आप आज्ञा दें तो उन्हें आपके निवास स्थान पर पहुँचा दिया जायेगा ।'

'अभी नहीं । जब दादा तानवान आज्ञा देंगे तो मैं आपको बता दूंगा ।'

'जैसी आपकी आज्ञा······! हमारे लिए अन्य कोई आदेश ?'

'डाक्टर मधु चांदना की मूर्ति का क्या हुआ ?'

'मूर्ति एकदम तैयार है । बस फिनशिंगटच देना है जो आज शाम तक हो जायेगा ।'

'सब चीजें आज रात तक हर हालत में तैयार हो जानी चाहिए जनरल ।' डाक्टर प्रेत गुर्राया—परसों अमावस्या है । हो सकता है कल सुबह मुझे उनकी आवश्यकता पड़े ।'

'बिल्कुल हो जायेगा डाक्टर प्रेत ।'

'याद रखना जनरल । अगर इस मामले में कोई भी गड़बड़ हुई तो सारी जिम्मेदारी आपकी होगी···।' डाक्टर प्रेत इस तरह बोला—जैसे जनरल पाओविन का वह आफिसर हो ।

'कोई भी गड़बड़ नहीं होगी डाक्टर प्रेत । सारा काम आप की आज्ञानुसार ही पूरा होगा ।'

'ठीक है । मैं आज रात में या कल सुबह फोन करूंगा ।' इतना कहने के साथ ही डाक्टर प्रेत ने रिसीवर झटके के साथ क्रेडिल पर रख दिया ।

न नमस्ते···न कोई अभिवादन ।

डाक्टर प्रेत के लिये जैसे इन बातों का कोई महत्व ही नहीं था ।

भारत की महानगरी बम्बई में !

डाक्टर प्रेत की माध्यम लीविन अब प्रेत बाधा से मुक्त थी और वह उसी दिन से सहज होने लगी थी। जब से विराट ने अपने यौगिक प्रयोग से उसे प्रेत बाधा से मुक्त किया था।

वह खाना खाती थी, पानी पीती थी, बातें करती थी और जिस बात की उसे आवश्यकता होती थी, उसे बता देती थी।

लेकिन बहुत दिनों तक डाक्टर प्रेत का माध्यम बने रहने और प्रेत बाधा से ग्रसित रहने के कारण उसके में बहुत कमजोरी आ गई थी और उसके में खून की बहुत कमी हो गई थी। इस समय उसे चिकित्सा की आवश्यकता थी। इसलिये उसे अस्पताल में ही रखा गया था।

अलबत्ता उसकी सुरक्षा के लिये व्यापक प्रबन्ध किए गए थे, जिससे डाक्टर प्रेत अथवा चीनी जासूसों की ओर से ली विन को समाप्त करने का अगर कोई प्रबन्ध किया जाय तो उसे असफल किया जा सके।

साथ ही !

मित्रमडली के जो भी सदस्य बम्बई में थे, गोपाली, ताऊ, विक्रांत और जगत, ये लोग रोज लीविन को देखने के लिये आते थे। विराट और मिर्जा मोहन मार्टिन गायब से थे। तीन दिन पहले तक वे लोग बराबर आते रहे थे। लेकिन तीन दिन से वे दोनों ही लापता थे।

मिर्जा मोहन मार्टिन तो यह कह कर लापता हो गए थे कि मुझे तिजारत के सिलसिले में कुवैत जाना है। उन्होंने कहा था, दरअसल अब माल दिल्ली से आया है। अगर मैं इसे खुद जाकर कुवैत नहीं पहुँचाऊंगा तो हो सकता है, वहां के तिजारती इसे न लें। अगर मेरा जाना निहायत जरूरी न होता तो यकीनन मैं यहीं रहकर आप लोगों की खिदमत करता रहता।

दूसरी ओर विराट !

उसने कहा था, मुझे आप सबकी सुरक्षा के लिए कुछ विशेष यौगिक साधना करनी पड़ेगी। विशेष कर लीविन को उस अमानुष डाक्टर प्रेत से सदैव के लिए छुटकारा दिलाने के लिए मुझे ऐसा व्यापक यौगिक प्रबन्ध करना ही पड़ेगा, जिससे ये हमेशा के लिए उससे मुक्ति पा सके। साथ ही इस बात को भी देखना होगा कि डाक्टर प्रेत नामक वह अमानुष मेरे देश भारत में यदि किसी तरह का कुचक्र करने का प्रयत्न करे तो उसका मुझे पूर्णभास हो जाये। इन सारी बातों के लिये लगभग एक सप्ताह तक मुझे कठोर यौगिक साधना करनी होगी। इसलिये मैं आप लोगों के पास नहीं आ पाऊंगा।'

विराट की बात भी तर्क युक्त थी। साथ ही उसके ही द्वारा इस समय मित्र मंडली एवं भारत को डाक्टर प्रेत नामी उस दैत्य से संरक्षण मिल सकता है, इस तथ्य को सभी स्वीकार कर रहे थे। इसलिये सबको ही विराट को भी छुट्टी देनी पड़ी।

अलबत्ता अकेले में जगत ने विराट से कहा भी—'बेटा, ऐसा न हो कि उधर तुम तप साधना में लगे रहो और इधर डाक्टर प्रेत आकर यार पार्टी का आमलेट बनाकर सफाचट कर जाये। सर्वाधिक खतरा मुझे विक्रांत और लीविन की ओर से है।'

विराट ने दृढ़ स्वर में उत्तर दिया—'ऐसा कुछ भी नहीं

होगा चाचा जी।'

विराट के स्थान पर अगर अन्य कोई इस प्रकार दृढ़ शब्दों में अपना मत प्रगट करता तो शायद जगत भड़क कर कहता —'अबे बोल तो ऐसा रहा है जैसे तू डाक्टर प्रेत का बाप है या अल्ला मियां के कारखाने का भेजा हुआ चौकीदार है, जिसकी वजह से डाक्टर प्रेत इधर कभी नहीं आयेगा।'

लेकिन विराट की शक्तियों से जगत अच्छी तरह परिचित था। न केवल परिचित था, बल्कि बहुत कुछ अपनी आंखों से देख भी चुका था। इसलिये उसे विश्वास था कि यह हठयोगी युवक गलत प्रलाप नहीं कर रहा है। कुछ सोच समझ कर ही इसने इतनी दृढ़ता से अपना ऐसा मत प्रगट किया है।

सो उसने अलग ढंग से अपनी बात कहनी चाही—'लेकिन फिर भी···।'

लेकिन विराट तो तुरन्त समझ गया कि जगत कहना क्या चाहता है। सो वह सहज मुस्कान के साथ बोला—'आपके मन में जो कुछ है, वह मैंने समझ लिया है चाचाजी! लेकिन विश्वास करें, चिंता जैसी बात तनिक भी नही है। आपके स्पष्टीकरण के लिये मैं बता दूं, मैंने ऐसा प्रबन्ध कर लिया है कि अगर आप लोगों में से किसी के ऊपर भी डाक्टर प्रेत किसी तरह का आक्रमण करेगा अथवा किसी तरह की विपत्ति आयेगी तो मुझे तुरन्त उसका आभास मिल जायेगा और मैं आप लोगों की सेवा में उपस्थित हो जाऊंगा।'

जगत ने सहज उत्सुकता प्रगट की—'वह कैसे?'

विराट ने समाधान किया—'कुमारी लीविन सहित मैंने आप सभी लोगों की फोटो प्राप्त करली हैं।'

'फिर?'

'आप सबकी फोटो पर साधना के अन्तर्गत मैं नित्य ध्यान लगाऊंगा। यदि मेरी अनुपस्थिति में आप में से किसी के ऊपर

भी विपत्ति आती है तो मुझे तुरन्त पता लग जायेगा। ऐसी स्थिति में मैं तुरन्त सेवा में उपस्थित हो जाऊंगा !'

इस तरह।

जगत को समझाकर विराट भी अर्न्तध्यान हो गया।

विराट के आने से और लीविन के स्वस्थ हो जाने के बाद मित्र मंडली के सभी सदस्य निश्चिंत से हो गये थे। जहां तक चीनी जासूसों के किसी तरह के आक्रमण का प्रश्न था, उससे खुफिया विभाग के सदस्य पूरी तरह निपटने में सक्षम थे। भय था तो केवल डाक्टर प्रेत से। जिसके पास अमानवीय शक्तियां थीं। विराट के आने से यह समस्या भी सहज हो गई थी।

साथ ही।

गोपाली की यह बात तभी स्पष्ट हो गई थी कि प्रेत क्रिया से ज्यादा सशक्त यौगिक क्रिया होती है।

लीविन को प्रेत बाधा से मुक्त करने के लिये बड़े-बडे प्रेत साधकों और परामनो वैज्ञानिकों ने प्रयोग किये थे। लेकिन वे असफल रहे थे। सभी का एक मत था—इस महिला के साथ कोई ऐसी प्रेत क्रिया की गई है, जिसका समझ पाना सम्भव नहीं है। कोई बहुत ही सशक्त प्रेत साधक ही इसे प्रेत बाधा से मुक्ति दिला सकता है। अथवा कोई योगी।

जिस बात को बहुत प्रयत्न करने के बाद भी बड़े-बड़े प्रेत साधक नहीं समझ पाये थे, उसे विराट ने कुछ ही मिनटों में समझ लिया था।

और !

अपनी चमत्कारिक यौगिक शक्ति द्वारा उसे दूर भी कर दिया था।

ऐसे में मित्र मंडली का निश्चिंत होना स्वाभाविक ही था।

जब तक विराट सामने था, सब चिन्ता मुक्त थे। सबको यह दृढ़ विश्वास था, डाक्टर प्रेत नामक वह पिशाच अगर

आयेगा, अथवा किसी तरह की कार्यवाही करेगा तो विराट उसका मलीदा बना देगा। जब तक विराट नहीं आया था, तो जो भय की लहर छाई हुई थी। वह एकदम समाप्त हो गई थी और सभी चीनी जासूसों से सतर्क होकर मौज मस्ती का जीवन बिता रहे थे।

अलबत्ता चीनी जासूसों की ओर से पूरी सतर्कता रखी गई थी और बराबर इस बात की खोज रखी जा रही थी कि चीनी जासूस किसी तरह की हरकत न कर सकें। साथ ही भारत में जो चीनी जासूसों का जाल सा फैला हुआ था, उसकी भी खोज-बीन जारी थी।

लेकिन !

विराट के जाने से थोड़ी सी चिंता फैली।

हालांकि विराट ने जगत से जो कुछ कहा था, उसे उसने मित्र मंडली के सभी सदस्यों को बता दिया था। गोपाली और ताऊ विराट की बात से पूरी तरह आश्वस्त थे। क्योंकि वे लोग उसका कारनामा अपनी आंखों से देख चुके थे।

विक्रांत पर ध्यान लगाकर ही विराट फ्रांस से पोरोद्वीप पहुंचा था और वहां से मैरिओन द्वीप। इसलिये इस बात का पूरा विश्वास था कि जैसा विराट ने कहा है, उसके अनुसार मित्र मडली पर किसी तरह की बिपत्ति आते ही विराट को तुरन्त पता लग जायेगा और वह उपस्थित हो जायेगा। इसमें अविश्वास या शंका जैसी कोई बात ही नहीं थी।

लेकिन !

विराट के इस दृढ़ आश्वासन के बावजूद भी मित्र मंडली का एक सदस्य परेशान था।

वह था विक्रांत।

दरअसल वह अपने लिये परेशान नहीं था।

हालांकि डाक्टर प्रेत से उसकी उठा पटक हो चुकी थी।

लेकिन इसके बावाजूद भी उसे अब भी इतना दृढ़ आत्म विश्वास था कि अगर डाक्टर प्रेत नाम का लुटिया चोर फिर आया और अब की फिर उससे टक्कर हुई तो ऐसी मार लगायेगा कि रहे नाम साईं का। अबकी मामला एकदम आरपार कर देगा।

इतने आत्म विश्वास के बाद भी विक्रांत चितित था।

अपने लिये नहीं। लीविन के लिये।

यूं देखा जाये तो लीविन नारी थी और उसके लिये विक्रांत का बहुत अधिक चिंतित होना स्वाभाविक नहीं था। क्योंकि विक्रांत के जीवन में अब तक इतनी नारियां आ चुकी थीं कि अब उनकी गिनती भी विक्रांत को याद नहीं थी। इसलिये नारी के रूप में लीविन के लिये विक्रांत का चिंतित होना अस्वाभाविक सा था।

लेकिन !

आदमी के मन को कभी नहीं समझा जा सकता।

प्रकृति के उन्नत रहस्यों को सुलझाने समझने के लिये मनुष्य प्रयत्नशील है। लेकिन स्वयं अपने मन को समझ पाना जैसे आदमी के लिये सबसे बड़ी अनबूझ पहेली थी।

विक्रांत के लिये कहा जाता था कि उसके ऊपर नारी का, नारी मन का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वह यथार्थवादी है और यादों में डूबना उसे जरा भी पसन्द नहीं।

लेकिन लीविन को लेकर वह जिस तरह परेशान और चिंतित था, उसे देखकर ऐसा लगता था जैसे विक्रांत में बहुत बड़ा बदलाव आ गया है।

हांलाकि विक्रांत और लीविन की मुलाकात क्षणिक थी। मात्र कुछ घन्टों की। इस क्षणिक मुलाकात में विक्रांत में इतना बड़ा परिवर्तन आ जाना अजीब सा लग रहा था।

लेकिन परिवर्तन आया था, इस बात से भी इन्कार नहीं किया जा सकता था।

दरअसल होटल गेलार्ड के कमरा नम्बर बत्तीस में बिताये गये कुछ ही घन्टों में विक्रांत ने लीविन को अच्छी तरह समझ लिया था और पाया था कि यह चाइनीज युवती चीन में जन्म लेने के बाद भी बेहद भोली है। चीन की आम युवतियों में जैसा छल कपट और शंकालुपन देखा जाता है, वैसा कुछ इस युवती लीविन में तनिक भी नहीं है।

तब तक डाक्टर प्रेंत नामी उस नर पिशाच से बिक्रांत की मुलाकात भी नहीं हुई थी। हालांकि लीविन ने विक्रांत को डाक्टर प्रेत के बारे में बता दिया था। लेकिन इसके बावजूद भी विक्रांत उस समय तक इन बातों को महज कल्पना समझ रहा था।

अलबत्ता उसने यह जरूर महसूस किया था कि भोली भाली लीविन किसी भी कारण से डाक्टर प्रेत नाम के किसी अज्ञात व्यक्ति से बेहद भयभीत है।

उस समय विक्रांत ने अपने प्रयत्नों से लीविन के मन में आत्मविश्वास भरने की भरपूर कोशिश की थी और समझा था, यह सब महज मजाक है।

लेकिन !

उसके बाद जो दृश्य उसने अपनी आंखों से देखा और जिस ढंग से उसका सामना डाक्टर प्रेत नामी उस नरपिशाच से हुआ वह सब अत्यधिक भयावह था। विक्रात को न चाहते हुये भी यह विश्वास करना पड़ा कि लीविन का भय व्यर्थ नहीं है।

यह तो सौभाग्य की ही बात थी जो विक्रान्त डाक्टर प्रेत जैसे नरपिशाच से बच गया अन्यथा जीवन समाप्त होने में कोई कसर नहीं रह गई थी।

उसके बाद से ही विक्रांत के मन में इस चीनी युवती लीविन के लिये स्नेह की भावना भर गई थी।

इसलिये नहीं कि लीविन जवान थी और बेहद खूबसूरत

भी !

सौन्दर्य और यौवन का विक्रांत के लिये जैसे कोई महत्व नहीं रह गया था वास्तव में जब तक विक्रांत के जीवन में इतनी युवतियां आ चुकी थी कि सौन्दर्य और यौवन का महत्व उसके लिये लगभग गौण सा हो चुका था ।

बात दरअसल इतनी थी कि लीविन के भोलेपन ने विक्रांत को अत्यधिक प्रभावित किया था ।

उसने यह महसूस किया था कि लीविन अत्यधिक भोली युवती है और अनायास ही डाक्टर प्रेत जैसे नरपिशाच के पंजों में जकड़ी गई है ।

लीविन के भोलेपन से प्रभावित होकर ही विक्रांत ने इस बात का दृढ निश्चय किया था कि किसी भी तरह हो वह डाक्टर प्रेत के पंजों से लीविन को सदैव के लिये मुक्ति दिलवायेगा । साथ ही उसके मन का खोया हुआ आत्मविश्वास जगायेगा ।

जब तक विराट ने आकर लीविन को स्वस्थ नहीं कर दिया था तब तक विक्रांत मन ही मन कितना व्यथित था, इसे सिवाय उसके और कोई नहीं जानता ।

किसी को भी नहीं मालूम कि विक्रांत ने मन ही मन इस बात का दृढ़ निश्चय कर लिया था कि अगर लीविन स्वस्थ नहीं हुई तो वह चीन जायेगा और उस नरपिशाच डाक्टर प्रेत को पकड़ कर लायेगा ।

उसके बाद !

कहावत है, मार के डर से भूत भी भागते हैं ।

विक्रांत ने निश्चय कर लिया था कि चाहे कुछ भी हो जाये जान पर खेल कर भी वह डाक्टर प्रेत को पकड़ कर लायेगा और ऐसी मार लगायेगा कि या तो डाक्टर प्रेत मरकर वास्तव में प्रेत श्रेणी में पहुंच जायेगा या लीविन को स्वस्थ कर देगा ।

लीविन से विक्रांत को अनायास ही इतना मोह क्यों हो उठा था। इसके बारे में स्वयं वह नहीं जानता था।

जबकि,

'मोह, प्यार और स्नेह के बन्धनों में उसने कभी अपने को नहीं जकड़ा था। ऐसी अनुभूतियों से वह हमेशा दूर भागने की शीश करता था। क्योंकि वह जानता था ऐसी भावुकतापूर्ण अनुभूतियां मन को सदैव कमजोर कर देती है और आगे बढ़ने के रास्ते में रूकावट आ जाती है।

लेकिन जाने कौनसा अज्ञात कारण था जो वह लीविन के स्नेहपाश में जकड़ उठा था।

सचमुच।

मानव मन को कोई भी तो नहीं समझ सका है।

शायद प्रकृति की सर्वाधिक अनबूझ पहेली मानव मन ही है।

इसीलिये विराट के जाने से सर्वाधिक परेशान विक्रांत ही था। अपने लिये नहीं, लीविन के लिये।

वह सोचता था विराट की अनुपस्थिति में डाक्टर प्रेत आ गया और लीविन के ऊपर उसने कोई घातक क्रिया कर दी तो क्या होगा ? कैसे उसे बचाया जा सकेगा ?'

शायद जीवन मे प्रथम बार विक्रांत अपने को इस तरह असहाय सा महसूस कर रहा था।

इसके पहले जाने कितने भयानक अपराधियों से विक्रांत का पाला पड़ चुका था। विश्व के क्रूरतम अपराधियों के बीच में विक्रांत का नाम किसी बम के धमाके से कम नहीं था।

इतना ही नहीं।

अमरीका, ब्रिटेन, चीन, पुर्तगाल, पाकिस्तान इत्यादि राष्ट्रों के जासूस विक्रांत के नाम से कांपते थे और विक्रांत के सामने आने से घबड़ाते थे।

लोगों का कहना था कामदेव सरीखा सुन्दर यह युवक जासूस विक्रांत देखने में जितना सुन्दर है, वक्त पड़ने पर जल्लाद से भी ज्यादा भयंकर हो उठता है। दुश्मन को ऐसी मौत मारता है कि खुद मौत का भी कलेजा कांप उठे और जिसे प्यार करता है उसके लिये कलेजा भी निकाल कर रख दें।

क्योंकि !

विक्रांत का सिद्धांत था, दोस्ती बड़ी चीज होती है।

वही विक्रांत !

जीवन में प्रथम बार बेहद असहाय सा हो उठा था।

केवल इसलिये कि जबकि उसका पाला डाक्टर प्रेत जैसे व्यक्ति से पड़ा था जो अमानवीय शक्तियों का मालिक था। वह कब, किधर से और किस तरह आक्रमण कर दें, इस बारे में कोई नहीं जान सकता था।

डाक्टर प्रेत जैसे नरपिशाच से तो हठयोगी विराट ही टकरा सकता था।

इसीलिये विराट के जाने से विक्रांत परेशान था।

विराट ने जिस समय अपने जाने की बात कही थी उस समय सबके सामने तो विक्रांत ने कुछ नहीं कहा था लेकिन एकांत में उसने विराट को पकड़ लिया था और लगभग कातर स्वर में बोला था—

'भाई विराट···।'

विराट उसके हाथ पकड़कर स्नेहपूर्वक बोला था—'मैं आपकी बात समझ रहा हूं भाई जी।'

'लेकिन···।'

'चिन्ता जैसी कोई बात नहीं है···वैसे मैं न तो सर्वज्ञ हूं और न देवता बनने का ही दावा करता हूं। मैं एकदम सामान्य मनुष्य हूं। हां, गुरू भूतेश्वरनाथ की कृपा से मेरे में कुछ दैविक शक्तियां आ गई हैं उन्हीं के सहारे मैं इस बात को कह सकता हूं

कि आप लोगों को तनिक भी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। गुरू की कृपा हुई तो मुझ अकिंचन के होते वह नरपिशाच डाक्टर प्रेत आप लोगों का किसी प्रकार का अनिष्ट नहीं कर सकता।'

'लेकिन लीविन...।'

'उन मानवीया महिला के सम्बन्ध में भी मैं यही बात कह रहा हूं। गुरू की कृपा हुई तो डाक्टर प्रेत उनका बाल भी बांका नहीं कर सकता।'

'लेकिन...।'

'कहा न भाई जी आप तनिक भी चिंतित न हों। आप यही कहना चाहते हैं न कि मेरी अनुपस्थिति में डाक्टर प्रेत आ गया और उसने लीविन को किसी तरह का अनिष्ट पहुंचाने की चेष्टा की तो क्या होगा।'

विक्रांत ने आश्चर्य से विराट का मुख देखा।

सचमुच !

यही बात तो उसके मन में थी। विराट के अनगिनत यौगिक चमत्कार वह देख चुका था। इसलिये अपने मन की आश्चर्य की स्थिति पर उसने शीघ्र ही काबू पा लिया।

'हां...मैं यही कहना चाहता था।'

विराट मुस्कराता हुआ सहज स्वर में बोला—'मैं इसके लिये ही आपसे कह रहा हूं कि तनिक भी चिंतित न हो...यह मैं जानता हूं कि आप अति यथार्थवादी व्यक्ति है। भूत प्रेत और यौगिक शक्तियों जैसी बातों पर विश्वास नहीं करते...लेकिन मेरे साथ रहते हुये आपने कई बार यौगिक शक्तियों का चमत्कार देखा है। इसीलिये कुछ अंशों में यौगिक शक्तियों पर विश्वास करने लगे हैं। प्रेतलीला हालांकि अपनी आंखों से आप देख चुके हैं उसके बाद भी इस मामले में अभी आप संशय में हैं। आपका

यथार्थवादी मन प्रेत अस्तित्व स्वीकार करने को तैयार नहीं होता। इसके बाद भी आप यह अनुभव करते हैं कि वह नर-पिशाच डाक्टर प्रेत सशक्त प्रतिक्षण व्यवस्था होते हुये भी कुमारी लीविन अथवा आप लोगों में से किसी का भी अनिष्ट कर सकता है।'

'तुम कहना क्या चाहते हो विराट ?'

'वास्तव में, मैं आपके मन की शंका का निषकरण करना चाहता था। लेकिन इस समय बहुत से आवश्यक कार्य हैं। इसलिये इस सम्बन्ध में हम लोग फिर कभी बात करेंगे···आप कुमारी लीविन के लिये चिंतित है, उसका मैं उपाय कर दे रहा हूं। जिससे मेरी अनुपस्थिति में किसी तरह का कोई भय न रहे।'

'कैसा उपाय ?'

विराट ने अपने हाथ में एक थैला ले रखा था। उसमें से एक बोतल निकाली। उसमें सफेद रंग का पानी भरा हुआ था।

उसे विक्रांत को देते हुये बताया—'यह मन्त्रों द्वारा अभि-सिंचित जल है भाई जी। जब तक मैं न आऊं तब तक इसमें की कुछ बूंदे कुमारी लीविन के शरीर पर रोज सुबह छिड़क दिया कीजियेगा। मन्त्रों द्वारा इस जल में ऐसी शक्ति आ गई है कि इसके विद्युत प्रभाव के कारण कोई असुरी शक्ति, जैसे प्रेत इत्यादि लीविन के पास आने का साहस न कर सकेगी।'

'मान लो, इसके बाद भी डाक्टर प्रेत द्वारा चलाया कोई अस्त्र काम कर गया·· तब ?'

'वैसे तो गुरू की कृपा से ऐसा होना असम्भव हीं है अगर ऐसा कोई कृत्य हो भी गया तो इस बोतल में जितना जल है उससे लीविन को नहला दीजियेगा। मैं समझता हूं उसके बाद

कोई भी आसुरी शक्ति इसकी विद्युत शक्ति के सामने टिक नहीं सकेगी।'

इस तरह।

विक्रांत को भी आश्वासन देकर विराट विदा हो गया था।

जीवन बहुत सामान्य ढंग से बीत रहा था।

यूं गृहमन्त्रालय की ओर से डाक्टर प्रेत एवं चीनी जासूसों के लिये जिस तरह की सतर्कता एवं सुरक्षा व्यवस्था की गई थी, बम्बई में उन सबकी देख-रेख का मुख्य भार सरकारी रूप से विक्रांत के ऊपर था। लेकिन इसके बावजूद भी विक्रांत का अधिक समय लीविन के पास बीत रहा था। केवल इसलिये कि उसकी आत्मशक्ति बढ़े और मन में साहस का संचार हो।

मित्र मंडली के सदस्य भी इस बात को समझ रहे थे। इसलिये कुछ नहीं कहते थे।

●

बम्बई से दूर, पूना के एक अभिजात होटल में!

मित्र मंडली के सदस्य अगर देखते तो निश्चित रूप से उन्हें क्रोध आता।

बात थी भी क्रोध आने वाली।

मिर्जा मोहन मार्टिन ने गोपाली इत्यादि से कहा था कि वह व्यापार के सिलसिले में कुवैत जा रहे हैं। अपने बात व्यवहार से एवं भावभंगिमा से उन्होंने ऐसा प्रगट भी किया था जैसे उन्हें कुवैत जाना बहुत आवश्यक हो। अगर वह नहीं गये तो बहुत

बड़ा नुकसान होगा।

दूसरी ओर विराट !

उसने मित्रमंडली के सदस्यों को यह आश्वासन दिया था कि वह योग साधना के लिये कहीं दूर जा रहा है, जिससे वह डाक्टर प्रेतनामी उस नरपिशाच के सम्भावित आक्रमण का मुकाबला कर सके।

लेकिन !

पूना के इस अभिजात होटल के एक शानदार कमरे में मिर्जा मोहन मार्टिन और विराट बैठे हुये बात कर रहे थे।

निश्चय ही यह बात मित्रमंडली के सदस्यों के लिये क्रोध का कारण बन सकती थी। क्योंकि उन लोगों की दृष्टि से दोनों ने धोखेबाजी की थी।

जबकि,

मिर्जा मोहन मार्टिन और बिराट के लिये कुछ गोपनीय विस्तृत बातें करने के लिये इस तरह का एकांत आवश्यक था। इसीलिये बम्बई छोड़कर दोनों दूर पूना स्थित इस अभिजात होटल में आये थे।

मिर्जा साहब और विराट के बीच बम्बई में ही इस स्थान पर मिलने की बात तय हो चुकी थी। इसीलिये मिर्जा साहब पहले ही यहां पहुँच चुके थे और विराट उनके पहुँचने के दो दिन बाद पहुँचा था।

इस समय सुबह के दस बज रहे थे।

विराट कुछ ही देर पहले नित्य की पूजा और ध्यान इत्यादि से निवृत्त हुआ था और फल व दूध लेकर तरोताजा हो गया था, मिर्जा साहब भी जलपान से छुट्टी पा चुके थे और अब दोनों बैठे हुये गम्भीर वर्तालाप कर रहे थे।

विराट कोई बात पहले ही मिर्जा साहब से कह चुका था। इसी के स्पष्टीकरण के लिये उसने पूछा—'तो क्या कह रहे हैं

मिर्जा चचा !'

मिर्जा साहब हंसे—'भई विराट, क्या मुझे भी तुम अपनी ही तरह योगी समझने लगे हो।'

'उससे भी अधिक आपके समक्ष तो मेरा महत्व कुछ भी नहीं है मिर्जा चचा ! संसार में जो कुछ महत्व पा सका हूं वह सब आपके ही प्रयत्नों एव आर्शीवाद से ही तो···लेकिन योगियों वाली बात आपने कैसे कह दी।'

'इसलिये कि तुमने न तो बात का कोई ओर-छोर बताया न कोई संकेत दिया। बस सीधे यही तोप दाग दी—क्या कह रहे हैं मिर्जा चचा। ऐसे में भला मैं क्या जान सकता हूं कि तुम किस सम्बन्ध में पूछ रहे हो।'

मुस्कराया विराट—'हमारे मिर्जा चचा इस तरह भूल जाने वाले नहीं हैं। इस बात को मैं अच्छी तरह जानता हूं। यह अलग बात है कि आप इस बात को याद करने की कोशिश ही न करें कि हम लोगों के बीच रात क्या बात हुई थी।

'रात···।' मिर्जा साहब की पेशानी पर सिलवटें पड़ गई। जैसे वह इस बात को याद करने की कोशिश कर रहे हों कि रात उनके और विराट के बीच में ऐसी क्या खास बात हुई थी जिसके बारे में विराट इस समय पूछ रहा है।

विराट ने उन्हें असमजस की स्थिति से तुरन्त उभार लिया 'इतना अधिक परेशान होने की आवश्यकता नहीं है मिर्जा चचा, मैं आपको बताये दे रहा हूं···आपसे रात में मैंने कहा था कि मैं डाक्टर प्रेत से निपटने के लिये चीन जाना चाहता हूं।'

'और मैंने यह कह दिया था कि इस सम्बन्ध में सोचकर मैं सवेरे बताऊंगा—यही ना······।' मिर्जा साहब ने बात काटी।

'जी हां ! इसी सम्बन्ध में मैं आपके विचार जानना चाहता हूं। वास्तव में प्रश्न केवल डाक्टर प्रेत नामी उस नरपिशाच

का नहीं है। प्रश्न है भारत के विरुद्ध चीन द्वारा रचे जा रहे षड़यन्त्र का। कोई शत्रु सामने आकर वार करते हैं तो उससे निश्चित रूप से लड़ा जा सकता है। लेकिन जो शत्रु चीते जैसा रुख अपनाता है और अचानक ही, बिना किसी संकेत और सूचना के आक्रमण कर देता है उससे तो सर्वाधिक खतरा होता है। यह तो आप भी स्वीकार करेंगे कि चीन ने भारत के विरुद्ध एक सुनियोजित षड़यन्त्र की रचना की है और यहां के उग्रवादियों को छापामार युद्ध में प्रशिक्षित कर वह गृहयुद्ध जैसी स्थिति पैदा कर देना चाहता है। उसके घृणित षड़यन्त्र से भारतीय सुरक्षा को कितना बड़ा खतरा पैदा हो गया है, इस बात से आप इंकार नहीं कर सकते।'

'मैं इंकार कहां कर रहा हूं। चीन ने सन् १९६२ से ही जो घृणित रवैया अपना रखा है वह किसी से छिपा तो नहीं।'

'इसका अर्थ यही हुआ कि आप मेरी चीन जाने की बात से पूरी तरह सहमत हैं।'

'नहीं।' मिर्जा साहब ने दो टूक उत्तर दिया।

'हालांकि कोई बात अगर आप कह दें तो उसका स्पष्टीकरण कराने का मुझे कोई अधिकार नहीं है।'

'गलत !' मिर्जा साहब ने टोका—'भारतीय सुरक्षा परिषद के चीफ होने के कारण इस देश की सुरक्षा की सर्वाधिक जिम्मेदारी तुम्हारे ऊपर है। इसलिये किसी भी बात का स्पष्टीकरण करने कराने का तुम्हारा मौलिक अधिकार है।'

'यहां पर हम लोग चचा भतीजे के रूप में बैठे बात कर रहे हैं। इससे भी अधिक जासूसी प्रशिक्षण में आप मेरे आदि गुरु हैं। गुरु का सम्मान करना सबसे प्रथम कर्तव्य होता है चचा मिर्जा !'

'गलत !'

विराट मुस्कराया—'इसमें गलत क्या है ?'

'सारी बातें ही गलत है।'

'जैसे ?'

'हम लोग यहां चचा भतीजे के रूप में बिलकुल नहीं बैठे हैं। तुम आई० डी० सी० चीफ के रूप में भारत की सुरक्षा के सम्बन्ध में मुझ से कुछ राय लेना चाहते हो। हालांकि मैं इन्टरपोल का विशेष सदस्य हूं। इस नाते किसी भी देश की आन्तरिक स्थिति के बारे में राय देने का मुझे कोई अधिकार नहीं है। लेकिन भारत मेरी मातृ भूमि है। इसलिये इससे मेरा स्वभाविक मोह है। इसलिये मैं तुम्हें कुछ व्यवहारिक सलाह दे सकता हूं।'

'पद चाहे कोई भी हो, लेकिन उससे व्यवहारिक जीवन के सम्बन्धों की गरिमा कभी कम नहीं होती।'

'यह भी गलत ! जो सम्बन्धों के चक्रव्यूह में फंसा रहता रहता है। वह वास्तविक कर्तव्य कभी निभा नहीं सकता।'

विराट हंसा—'जानता हूं, तर्क में आप से नहीं जीत सकता ...न सही चचा भतीजे के सम्बन्ध के कारण, गुरु शिष्य की प्राचीन परम्परा के कारण तो मुझे किसी बात का स्पष्टीकरण कराने का कोई अधिकार नहीं।'

'यह बात बिल्कुल ही गलत !' मिर्जा साहब तपाक से बोले—इस बात से मैं इन्कार नहीं करता कि जासूसी के क्षेत्र में मैं तुम्हारा आदि गुरु हूं। तुम्हारे में गुरु के प्रति जो आदर की भावना है, वह वास्तव में प्रशंसनीय है। लेकिन उसके बाद भी गुरु कोई बात कहें तो बिना उसका स्पष्टीकरण किये हुये आंख मूंद कर चुप-चाप उस बात को मान लेना बिलकुल गलत है। इससे कभी बौद्धिक विकास नहीं होता।'

विराट जैसे पराजित हुआ। उन्मुक्त हंसी के बीच बोला—'इस बात को मैं स्वीकार कर चुका हूं कि आपसे तर्क में मैं नहीं जीत सकता। क्योंकि मेरे गुरु भूतेश्वरनाथ ने तर्क शास्त्र की

मुझे शिक्षा नहीं दी और सांसारिक होने के बाद भी व्यवहारिक ज्ञान में मैं अभी अधूरा हूं।···आपकी सारी बात सिरोधार्य ! अब कृपया स्पष्ट करें कि मेरा चीन जाना क्यों ठीक नहीं है।'

मिर्जा साहब का चेहरा एकदम गम्भीर हुआ। धीर गम्भीर स्वर में वे बोले—'इसके कई कारण हैं विराट ! पहला कारण तो यह है कि चीन की भौगोलिक स्थिति के बारे में तुम्हें कोई ज्ञान नहीं है। बिना ऐसे व्यक्ति को साथ लिये, जो चीन की भौगोलिक स्थिति के बारे में वृहद जानकारी रखता हो, चीन में प्रवेश करना मेरे ख्याल से बिलकुल गलत है।'

'मैं आप की राय से सहमत नहीं हूं मिर्जा चचा ! विराट भी गम्भीर था।'

'होना भी नहीं चाहिये। यह मेरी व्यक्तिगत राय है। इसका यह कतई मतलब नहीं है कि उससे तुम या कोई भी व्यक्ति सहमत होता। लेकिन इसके बाद भी मैं असहमति का कारण जानना चाहूंगा।'

'आपने जिस चक्रव्यूह में मुझे फंसा दिया है···।'

'चक्रव्यूह कैसा ?'

'यही—भारतीय सुरक्षा परिषद का अध्यक्ष पद। यह किसी चक्रव्यूह से कम नहीं है जब कि मैं इसके तनिक भी योग्य नहीं हूं।'

'इस बात को बार–बार दोहराने से कोई लाभ नहीं। तुम अगर इस पद के योग्य न होते तो मैं कभी श्री भी माननीय राष्ट्रपति जी से तुम्हारे लिये सिफारिश न करता।'

'चलिये आप की ही बात सही है। लेकिन इस बात से तो इन्कार नहीं किया जा सकता कि मेरे ऐसे हटयोगी के लिये यह चक्रव्यूह जैसी ही बात है। लेकिन जब आपने मुझ पर विश्वास करके मेंरे ऊपर यह जिम्मेदारी सोपीं है तो इसका दायित्व उठाने का मैं पूरा प्रयत्न कर रहा हूं।'

'ऐना होना भी चाहिये। मुझे तुम्हारे ऊपर विश्वास था, तभी इस प्रकार का दायित्व सौंपा गया।'

'भारतीय सुरक्षा के विरुद्ध कभी भी कोई देश किसी प्रकार का भी षड़यन्त्र रच सकता है। इससे तो आप इन्कार नहीं कर सकते।

'हां, ऐसा हो सकता है किसी देश की सत्ता की राजनिति किस करवट बैठे, इस सम्बन्ध में कोई दृढ़ता पूर्वक कुछ नहीं कह सकता।'

'वैसी स्थिति में, इस बात का आभास पाते ही कि अमुक देश भारतीय सुरक्षा के प्रति किसी तरह का षड़यन्त्र कर रहा है, मेरा यह कर्त्तव्य हो जाता है कि मैं उस देश में जाऊं और उस षड़यन्त्र को विफल करने की कोशिश करूं।'

'मैं तुझसे सहमत हूं।'

'यह कोई आवश्यक तो नहीं है कि मैं उस देश में पहले ही से गया होऊं। अथवा मुझे उसका पूर्ण भौगोलिक ज्ञान प्राप्त हो इस बात की भी कोई गारन्टी नहीं है कि हर देश में जाने के पहले मुझे ऐसा कोई विश्वसनीय सहायक मिल जाय, जो उस देश विशेष के सम्बन्ध में सम्पूर्ण जानकारी रखता ही हो। साथ ही मेरे पास इतना समय भी नहीं हैं कि मैं सम्पूर्ण विश्व के छोटे बड़े देशों का भ्रमण करके उनके सम्बन्ध में सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त कर लूं।'

'इतनी लम्बी पहली बताने की क्या जरूरत है। संक्षेप में बताओ, तुम कहना क्या चाहते हो ?'

'मुझे केवल इतना ही कहना है मिर्जा चचा, कि जैसे भविष्य में कभी कोई देश भारत के विरुद्ध अगर कोई षड़यन्त्र रचता है तो उसका आभास पाते ही कर्त्तव्य पूर्ति के लिये मुझे उस देश में जाना ही होगा—चाहे उस देश की भौगोलिक जानकारी हो या न हो—उसी तरह वर्तमान समय में सही रूप से कर्त्तव्य

निर्वाह के लिये चीन जाना आवश्यक है। यह समय कर्त्तव्य की पुकार है और इसे पूरा करना हर रूप में आवश्यक है।'

मिर्जा साहब मात्र क्षण के लिये रुके। उसके बाद बोले— 'तुम्हारी यह बात अपनी जगह पर बिलकुल सही है। लेकिन उसके बाद भी कुछ कारणों से मैं इस समय तुम्हारा चीन जाना उचित नहीं समझता।'

'कृपया उसे भी स्पष्ट करें ?'

'पहली बात तो यह है कि चीन के साथ भारत के दोस्त सम्बन्ध भंग हैं। प्रकट रूप में न सही, लेकिन वास्तविक रूप में चीन भारत का प्रबल शत्रु है'''।'

'यह बात तो बिलकुल स्पष्ट है।'

तुम्हारा रंग रूप एव कद ऐसा है कि तुम चीनियों के बीच छिप नहीं सकते ! वैसे में शत्रु के बीच घिर जाना स्वभाविक है।

'ऐसा तो कहीं भी, किसी भी देश में हो सकता है मिर्जा चचा।'

मिर्जा साहब और अधिक गम्भीर हो उठे। उन्होंने शब्दों पर जोर डालते हुये कहा—'इन सब बातों को अगर छोड़ भी दिया जाये तो इससे भी अधिक एक गम्भीर समस्या है। तुम चीन में जाकर वहां षड़यन्त्र का केन्द्र बिन्दु ढुढ़ोगे, जबकि वास्तविक खतरा इस समय डा० प्रेत से है। ऐसा हो सकता है तुम उधर चीन में जाओ और इधर डा० प्रेत भारत में आकर तहस-नहस मचा दे। मैं समझता हूं इस समय डा० प्रेत से टकराने की ओर उसका षड़यन्त्र विफल करने की शक्ति केवल तुम्हारे में है। ऐसी स्थिति में, मैं समझता हूँ भारत के हित के लिये और विक्रांत तथा डाक्टर मधु चांदना सहित अन्य जितने भी लोग इस केस से सम्बन्धित हैं, उनके जीवन एवं सुरक्षा के लिये तुम्हारा भारत में ही रहना श्रेयकर है। इसके बाद भी मैं केवल राय दे सकता हूं।

अन्तिम निर्णय तुम्हारे ही हाथ में है।

विराट क्षण भर तक सोचता रहा।

मिर्जा साहब की बातों में तथ्य था और जिस स्थिति का वर्णन उन्होंने किया था, उसके अनुसार उसका फिलहाल भारत में ही रहना आवश्यक था।

उसने निर्णायक स्वर में उत्तर दिया—'तो ठीक है मिर्जा चचा। मैं भारत में ही रहकर उस नर पिशाच डाक्टर प्रेत की प्रतीक्षा करूंगा। जब कभी वह आयेगा तो गुरू भूतेश्वर नाथ की कृपा से मेरे ही हाथों उसका वध होगा।'

इस समय विराट का चेहरा ब्रह्म तेज से दमक रहा था। मिर्जा साहब को सन्तोष था कि वह विराट को समझाने में सफल रहे।

अन्त में यही तय रहा।

●

बम्बई का सेंट जेवियर हास्पीटल !

इसी हास्पिटल के एक विशेष कक्ष में लीविन के रहने की व्यवस्था थी। कमरे के बाहर सशक्त प्रतिरक्षा व्यवस्था थी।

यूं डाक्टर प्रेत के जाने के बाद अभी तक ऐसी कोई दुर्घटना नहीं हुई थी जिससे भय जैसी कोई बात हो। किन्तु सतर्कता के नाते सजग कार्यवाही में किसी तरह का अन्तर नहीं आने दिया गया था।

विक्रांत आमतौर पर रात में डाक्टर मधु चांदला की

कोठी पर रहता था। लेकिन जब से विराट गया था···तब से उसने रात में सेंट जेवियर हास्पिटल में रहने की व्यवस्था कर ली थी।

किसी विशेष उद्देश्य से नहीं।

मात्र इसलिये कि उसे लग रहा था, लोविन के जीवन के लिए खतरा है और चीनी शासक उसका जीवन समाप्त करने के लिये कोई भी कठोर पग उठाने में नहीं चूकेगें।

क्या होगा अथवा कोई कठिन परिस्थिति आने पर विक्रांत कौन सा उपाय करेगा। इस बारे में उसने कोई निश्चय नहीं किया था।

बस एक ही बात दिमाग में थी कि अगर चीनियों की ओर से कोई अमानवीय आक्रमण हुआ तो किसी भी रूप में वह उसका सामना अवश्य कर सकेगा।

साथ ही।

उसने यह भी महसूस किया था कि उसके रहने पर लीविन अपने में आत्म-शक्ति महसूस करती है और मन पर छाया रहने वाला डाक्टर प्रेत का भय लगभग समाप्त हो जाता है।

हालांकि ताऊ ने व्यंग कसा था—'बेटा लम्बू, तुम कितने परसेन्ट हरामी हो यह हम अच्छी तरह जानते हैं। लीविन के इश्क के चक्कर में तुम पंहरेदारी का नाटक कर रहे हो। लेकिन मेरा भी नाम ताऊ है। अगर तुम्हें मजनू स्टाईल में जूते नहीं लगवाये तो नाम बदल देना।'

विक्रांत भला इन बातों की परवाह कहां करने वाला था। सो हर आरोप को ठुकरा कर अपना हास्पीटल में अपना डेरा जमा दिया था।

दूसरी ओर डाक्टर मधु चांदना की कोठी पर जगत रह रहा था। ऐसा उसने केवल विक्रांत के अनुरोध पर ही किया

था ।

सामान्य सुरक्षा एवं देख-रेख का भार गोपाली ने अपने ऊपर ले रखा था ।

जैसा कि स्वाभाविक था ताऊ गोपाली के साथ रहकर उन्हें सहयोग दे रहा था ।

यह अलग बात है कि ताऊ अपनी आदत के अनुसार हर समय गोपाली को गाली दिया करता था और इस बात की धमकी भी कि न तो मैं भारत सरकार का नौकर हूं और न तुम्हारे बाप का गुलाम । कतई जरूरी नहीं है कि मैं तुम्हारे साथ कुत्ता टाईप चौकीदारी करूं ।

लेकिन ।

गोपाली ताऊ के स्वभाव से अच्छी तरह परिचित थे और यह जानते थे कि बड़बड़ करने के बाद भी उनका साथ देंगे और जब तक डाक्टर प्रेत का भय पूरी तरह समाप्त नहीं हो जाता और स्थिति एकदम सामान्य नहीं हो जाती, ताऊ वापस नहीं जायेगा ।

ऐसे में एक रात ।

तब रात के नौ बजे थे और विक्रांत लीविन के पास बैठा बातें कर रहा था । बातें कुछ ऐसे विषय में चल रही थी कि लीविन बार–बार ठहाका लगाने को बहुत विवश हो रही थी ।

दरअसल विक्रांत लीविन को यह समझा रहा था कि चीनी खानदानी अफीमची होते हैं इसलिये किसी बात को सोचने समझने की ताकत उनमें नहीं होती ।

इसी संदर्भ में विक्रांत एक चुटकला सुना रहा था । चुटकला कुछ इस प्रकार था कि एक बार रात के समय एक फौजी कैम्प में भैंस घुस आयी उस वक्त फौजी कैम्प के सभी जवान अफीम

की पिनक में थे। यहां तक कि उस कम्पनी का कमान्डर भी अफीम की लम्बी डोज लेकर अन्टा गाफिल पड़ा हुआ था।

हुआ यूं कि जो पहरेदार कैम्प के बाहर पहरा दे रहा था वह भी अफीम की पिनक में झपकी ले रहा था। उसने जब भैंस को आते देखा तो अफीम के नशे में उसे ऐसा लगा कि कोई टैंक चला आ रहा है। उसने आव देखा न ताव, तुरन्त राईफल से हवाई फायर किया और इसके साथ ही चिल्ला पड़ा'''दुश्मन ने टैंक से चढ़ाई कर दी है''''''होशियार'''''' खबरदार !'

फलस्वरूप।

पूरे कैम्प में खलबली मच गयी।

कर्नल लू चांग ने क्योंकि अफीम की लम्बी डोज ले रखी थी, इसलिये उसके सहायकों ने उसे झकझोर कर जगाया और समझाने की कोशिश की कि दुश्मन ने टैंकों के साथ कैम्प पर चढ़ाई कर दी।

कर्नल लू चांग अफीम के नशे में चिल्लाया—'अटैक।'

उसके बाद उस कैम्प में किसी ने भी यह देखने की कोशिश नहीं की कि वास्तव में आने वाला जन्तु भैंस है या शत्रु का टैंक।

दनादन फायरिंग होती रही। अफीम के नशे में तो कुछ भी ज्ञात नहीं हो सका। अलबत्ता सुबह यह जरूर देखने में आया कि कर्नल लू चांग ने अपने आपको खुद ही गोली मार ली थी'''और उसका शरीर भैंस के गोबर में लिथड़ा हुआ पड़ा था।

जैसा कि स्वाभाविक था, लीविन इस चुटकुले को सुनकर खूब हंसी।

यही तो चाहता था विक्रांत।

लगभग इसी तरह के चुटकुले विक्रांत रोज सुनाता था।

उद्देश्य यह था कि लीविन डाक्टर प्रेत के बारे में कुछ न सोचे और अपने आपको हल्का–फुल्का और स्वस्थ महसूस करती रहे ।

बातचीत में रात के दस बज चुके थे । विक्रांत लीविन के पास से उठने ही वाला था । क्योंकि डाक्टरों नें कह रखा था अधिक देर तक जागना लीविन के स्वास्थय के लिए हितकारी नहीं

तभी ······

शीशा टूटने की आवाज हुई और एक गोली लीविन के शरीर के ऊपर से निकलती हुई सामने दीवार में जा लगी ।

बाल बाल बची लीविन ।

निश्चित रूप से अगर गोली जरा सी नीचे आई होती तो लीविन समाप्त हो चुकी होती ।

दो काम एक साथ हुये ।

नम्बर एक — लीविन के मुंह से चीख निकल पड़ी ।

नम्बर दो — विक्रांत तेजी से उस खिड़की की ओर झपटा जिसका शीशा तोढ़कर गोली अन्दर आयी थी ।

बिना इस बात का ख्याल किये हुए कि आक्रमणकारी अभी खिड़की के पीछे हो सकता है, विक्रांत ने झटके से खिढ़की खोली और बाहर जम्प लगा गया ।

हांलाकि चारों ओर सशस्त्र पहरा था । लेकिन जरा सी चूक हो जाने से यह दुर्घटना घट गयी थी ।

जो सिपाही पीछे की ओर पहरे पर नियुक्त था वह देर कुछ के लिये टहलता हुआ आगे बढ़ गयाथा । आक्रमणकारी मौके की तलाश में था और मौका मिलते ही उसने फायदा उठा लिया था ।

रिवाल्वर में साइलेंसर लगा हुआ था । इसीलिए गोली चलने की आवाज भी नहीं हुई थी । अन्यथा पैहरे पर तैनात रक्षक तुरन्त दौड़ पड़ते ।

विक्रांत ने बाहर जम्प लगाते ही देखा एक मनुष्याकृति लगफग पचास कदम आगे तेजी से भागती जा रही है ।

भागने वाला नाटे कद का था और बहुत फुर्ती से भाग रहा था ।

लेकिन यह उसका दुर्भाग्य ही था कि उसका पीछा करने के लिए जल्लाद की तरह मशहूर जासूस विक्रांत दौड़ पड़ा था…।

यह एक अलग बात थी कि आक्रमणकारी काफी दूर पहुँच चुका था । लेकिन इतनी दूर भी नहीं कि विक्रात ऐसे जासूस की पकड़ से वह दूर निकल जाये ।

विक्रांत तूफान की गति से भागा और कुछ ही क्षणों में आक्रमणकारी के सिर पर यमदूत की तरह पहुंच गया ।

और ।

आक्रमणकारी सम्हल पाये इसके पहले ही विक्रांत का भरपूर कैरेट चाप उसकी गर्दन पर पड़ा ।

उस व्यक्ति के मुंह से एक चीख सी निकली और वह जमीन पर लुढ़क पड़ा ।

विक्रांत उसके ऊपर छलांग लगाने ही वाला था… कि तभी……!

यह नहीं कहा जा सकता कि वह आदमी था या बिजली का पुतला ।

विक्रांत के हाथों भयंकर कैरेट चाप खाने के बाद भी जिस तेजी से वह उठ खड़ा हुआ यह बात निश्चय ही विस्मयकारी थी…।

विक्रांत उसके ऊपर छलांग लगाने के लिये उछला था । लेकिन वह व्यक्ति विक्रांत से भी ज्यादा तेज निकला । उसने झुकाई दी और विक्रांत के पेट में अपने सिर से भरपूर टक्कर मारी ।

फलस्वरूप ।

अपने ही दांव में गच्चा खा गया विक्रांत ।

उस आदमी की चोट पेट पर घातक पड़ी थी और विक्रांत झोंके के साथ पीछे उलट गया ।

विक्रांत उठ पाता इसके पहले ही उस नाटे ने जो कि चीनी था विक्रांत पर जम्प लगा दी । विक्रांत द्वारा कैरेट चाप लगने के बाद उसके हाथ से रिवाल्वर छूट कर दूर जा गिरा था । अन्यथा वह फायर करने में जरा भी न हिचकता ।

विक्रांत उठ नहीं सका, उसके पहले ही उस चीनी ने उसे दबोच लिया ।

विक्रांत ने महसूस किया कि चीनी शत्रु भयानक है…। क्योंकि दबोचते ही उसने विक्रांत की गर्दन दबानी शुरू कर दी थी । साथ ही अपने घुटने से वह विक्रांत का पेट भी दबा रहा था…।

असहनीय पीड़ा से तड़प उठा विक्रांत ।

क्षण भर को उसे लगा कि शायद उसकी मौत इस शुद्र चीनी के हाथों ही होनी है ।

लेकिन इतनी जल्दी हार जाये तो उसे विक्रांत ही क्यों कहा जाये ?

जिन्दगी में असंख्य बार मौत…उसके नजदीक आकर पराजित हुई थी । क्योंकि विक्रांत ने मौत को हमेशा खिलौना समझा था ।

इस क्षण भी…जबकि वह दुर्दान्त चीनी विक्रान्त की जान लेने के लिए सम्पूर्ण प्रयत्न कर रहा था, विक्रांत ने हिम्मत नहीं हारी ।

अपने डगमगाते साहस को सम्पूर्ण शक्ति लगाकर संजोया और असहनीय पीड़ा के बावजूद पैरों को झटके से उठाकर उसने

चीनी की गर्दन को कैंची की तरह कस लिया।

जीवन और मृत्यु के बीच भयानक कशमकश !

शायद यह युद्ध तब तक चलता जब तक कि कोई निर्णायक स्थिति न आ जाती। लेकिन पीछे पहरे पर नियुक्त सिपाही ने इस युद्ध को देख लिया था और दूसरे तमाम रक्षकों को सूचित करने के लिए सीटी बजा दी थी।

चेतावनी की सीटी सुनते ही सुरक्षा के लिए तैनात सभी रक्षक उस ओर दौड़ पड़े।

लगभग तीस रक्षकों ने अपनी राइफलें उस चीनी की ओर तान ली साथ ही चेतावनी दी गयी—'तुरन्त खड़े हो जाओ। वरना हम गोली चलाने के लिये विवश हो जायेंगे।'

इस चेतावनी का चमत्कारिक असर हुआ।

वह चीनी इस तरह उठ खड़ा हुआ जैसे सचमुच विवश सा हो गया हो।

लेकिन···!

जरा सी भूल हुई और उससे सारा खेल ही गड़बड़ हो गया।

बिजली की गति से चीनी ने अपना हाथ अपनी जेब में डाला और बिक्रान्त कुछ समझ पाये। इसके पहले ही उस चीनी ने जेब से हाथ निकाल कर मुंह के अन्दर कुछ रख लिया।

विक्रांत को समझते देर नहीं लगी कि चीनी ने जहर खा लिया है। वह बाज की तरह झपटा।

लेकिन देर हो चुकी। चीनी ने जो जहर मुंह में रखा था वह शायद सायनाइड किस्म का कोई तेज जहर था।

तभी तो···।

हालांकि विक्रांत ने बहुत ही तेजी दिखाई थी···। लेकिन इसके बावजूद भी चीनी को बचाने में वह सफल नहीं हो

सका था ।

मृत चीनी की गरम लाश विक्रांत के हाथों पर झूल पड़ी ।

विक्रांत ने लाश को धीमे से जमीन पर लिटा दिया और सैनिकों को आदेश दिया—'यह मर चुका है इसे पोस्ट मार्टम के लिये पहुँचा दो ।'

आदेश देने के साथ ही वह चीनी की लाश छोड़कर लीविन के वार्ड की ओर बढ़ गया क्योंकि वह जानता था इस दुर्घटना से लीविन अत्याधिक भयभीत हो उठी होगी ।

अलबत्ता उसका दिमाग बड़ी तेजी से काम कर रहा था और वह सोच रहा था, इतनी सतर्कता के बावजूद चीनी जासूसों का शिकंजा बराबर कसता जा रहा है ।

गोपाली को इस सम्बन्ध में सूचना देना आवश्यक था जिससे आवश्यक कार्यवाही की जा सके । लेकिन उससे भी आवश्यक कार्य था लीविन के भयभीत मन को सांत्वना देने का ।

इसीलिये वह तेजी से वार्ड की ओर बढ़ गया ।

●

वार्ड में पहुँचकर विक्रांत ने देखा लीविन पलंग पर बैठी हुई थी उसका चेहरा सफेद हो रहा था और वह इस तरह कांप रही थी जैसे उसे भयंकर जाड़ा बुखार चढ़ा हो । साथ ही वह उस खिड़की की ओर आंखें फाड़े देख रही थी जिधर से गोली आई थी ।

विक्रांत ने ऐसी स्थिति की पहले ही कल्पना कर ली

थी।

वह लीविन के पास पहुंचा और उसके कन्धे पर स्नेह से हाथ रखता हुआ बोला—'क्या बात है ली। तुम इस तरह भय-भीत क्यों हो ?'

लीविन ने कंपकंपाती आवाज में उत्तर दिया—'सब व्यर्थ है विक्रांत···वे लोग बहुत सशक्त है···मुझे मरने से कोई नहीं रोक सकता।'

–'क्या बकवास है।' विक्रांत झुंझलाया।'

'बकवास नहीं, मैं सच कह रही हूं···मुझे अपने में सपने मौत दिखाई दे रही है।'

विक्रांत की तबियत हुई कि इसी क्षण लीविन का गला दबा दे और कहे कि मौत देखने की जरूरत क्या है। मैं डायरेक्ट मृत्युलोक ही पहुंचा देता हूं।

लेकिन परिस्थिति ऐसी नहीं थी।

लीविन मानसिक रूप से इस समय अत्याधिक भयभीत थी और उसमें आत्मबल का जाग्रत होना आवश्यक था इसीलिये मन की झुंझलाहट के बावजूद भी विक्रांत उसे समझाने में विवश हुआ।

वह बोला—'देखिये ली, जिन्दगी और मौत आदमी के वश की बात नहीं होती। जब तक किसी का जीवन होता है उसे कोई मार नहीं सकता और जिस क्षण उसकी मौत आ जाती है उसे कोई बचा नहीं सकता। मौत एक आदि सत्य है। कितने भी प्रयत्न के बावजूद आज तक कोई इससे छुटकारा नहीं पा सका। इसीलिये तुम्हें मौत से इस कदर भयभीत नहीं होना चाहिये।'

'लेकिन···।'

'कहा न ली कि इस समस्या पर जितना अधिक सोचेगी उतना ही दिमाग परेशान होगा। हम लोग पूरी तरह तुम्हारी

सुरक्षा व्यवस्था के लिये प्रयत्नशील है। क्योंकि तुम्हारा जीवन हमारे लिये सर्वाधिक मूल्यवान है। इसके बावजूद भी अगर कोई दुर्घटना हो जाती है तो उसे हमे हंसते हुये स्वीकार करना होगा। मैं इतना ही कहना चाहूँगा कि तुम्हारी रक्षा के लिये विराट ऐसा योगी और भारतीय सुरक्षा की सारी मशीनरी इस समय कार्यरत है। इसलिये अधिक तो कुछ नहीं समझा सकूंगा। बस इतना ही कहूंगा कि तुम्हें साहस से काम लेना चाहिये जिससे हम डाक्टर प्रेत जैसे नरपिशाच और चीनी हरामियों का षड़यन्त्र विफल कर सकें।'

विक्रांत इसी तरह कुछ देर तक और लीविन को समझाता रहा।

तुरन्त इसका असर हुआ।

लीविन अपने को अपेक्षाकृत स्वस्थ महसूस करने लगी और उसके मन का भय बहुत अंशों में दूर हो गया।

उसके बाद विक्रांत उठा और फोन करके उसने गोपाली को सारी सूचना दी।

सुनकर गोपाली चिन्तित हुये और उत्तर में कहा मैं तुरन्त पहुँच रहा हूं।

दूसरी ओर विक्रांत ने जगत को फोन करके सारी स्थिति बताई। साथ ही अपनी ओर से मन की सम्भावना व्यक्त की। उसने कहा—'ददागुरू, इधर तो जो हुआ, वह तो होकर निपट लिया। जो खुदागंज का टिकट लेकर आया था वह बिना टिकट ही खुदागंज पहुँच गया। लेकिन मुझे डर है कि डाक्टर मधुचांदना के ऊपर भी चीनी हरामी आक्रमण करेंगे इसीलिये···।'

जगत ने भड़क कर बात काटी—'बेटा लम्बू, अपनी खाल में रहो। आदमी जब अपने को जरूरत से ज्यादा बुद्धिमान समझता है तो उल्लू का पट्ठा हो जाता है।'

'मेरे कहने का मतलब यह है···।'

जगत ने अबकी बार भी बात नहीं पूरी होने दी—'तुम्हारे कहने का जो मतलब है उसे अपनी अम्मा लीविन को सुनाते रहो। जहां तक तुम्हारे बाप मधुचान्ना का सवाल है उसके लिये अभी मैं काफी हूं। तुम्हारे ऐसे जाने कितने लोड़ों को जासूसी सिखाकर खाने-कमाने के लिये छोड़ चुका हूं। इसीलिये मुझे किसी तरह का निर्देश देने की आवश्यकता नहीं। मैं अपनी जिम्मेदारी अच्छी तरह समझ रहा हूं इसलिये इधर का फिकर छोड़कर अपनी अम्मा लीविन को सम्हालो।' इसके साथ ही जगत ने टेलीफोन सम्बन्ध विच्छेद कर दिया।

विक्रांत ने सन्तोष की सांस ली।

उसे विश्वास था कि गुरू जगत के होते हुये डाक्टर मधुचांदना के साथ किसी तरह की अशोभनीय घटना नहीं हो सकती।

दूसरी ओर गोपाली और ताऊ सारी सुरक्षा व्यवस्था सम्हाल लेंगे। इसलिये उस ओर से भी चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं है।

इस समय मुख्य कार्य लीविन को सम्हालने का था इसलिये विक्रांत फोन करके वापिस ली के पास पहुँच गया और अपने चुटकलों द्वारा उसे फिर से सामान्य करने की कोशिश करने लगा।

उधर अपनी कोठी में गोपाली।

जिस समय विक्रांत का फोन उन्हें प्राप्त हुआ वह ताऊ के साथ बैठे हुये व्हिस्की पी रहे थे। साथ ही वर्तमान परिस्थिति पर विचार विमर्श भी हो रहा था।

ऐसी ही स्थिति में विक्रांत का फोन प्राप्त हुआ।

सारी बातें सुनने के बाद गोपाली ने ताऊ को बताया।

अपनी आदत के अनुसार सारी बात सुनते ही ताऊ भड़ककर बोला—'दरअसल ये सारा गड़बड़ घुटाला एक योगी और एक

भोगी के कारण हो रहा है।'

क्या मतलब ?'

'मतलब बिल्कुल साफ है रेगिस्तानी ऊंट। जहां तक लीविन पर गोली चलने का सवाल है, मेरा ख्याल है कि किसी का कोई पूरा आशिक विक्रांत के आशिकी पहाड़े को बरबाद तो नही कर पाया होगा और उसने विक्रांत को समाप्त करने के लिये गोली दाग दी होगी।'

'क्या बकवास है।'

'बकवास नहीं मेरे लाल। ताऊ जो कहता है वह हन्ड्रेड परसैंट सही बात होती है। अगर लीविन हमारे तुम्हारे बीच की लिमिटेड कम्पनी न होती तो कसम मिस्र के पीरामिडो की, मैं न जाने कब का तुम्हें जूते मार-मार कर खुदागज पहुँचा चुका होता।'

'ताऊ···।'

'चीखो मत बेटा मोची वाले ! जो कह रहा हूं डंके की चोट से कह रहा हूं। तुम्हारे चीखने से मामले की असलियत में कोई फर्क नहीं आ जायेगा। सच्चाई वही है जो मैंने कहा है। अब मेरी दूसरी बात भी सुनो···।'

'देखो ताऊ मामला बहुत गम्भीर है।'

'अबे तो मैं कब कह रहा हूं कि मामला किस्सा हातिम ताई का है। मेरी पूरी बात सुन लोगे तो अपने आप सारी बात समझ में आ जायेगी। मेरे कहने का इतना ही मतलब है कि वह योगी टाईप छोकरा बिराट अगर यहां से गायब न हो गया होता तो इस तरह मामले का ऊंट गड़बड़ाकर खेती चरने न आ जाता। इसलिये मैं कह रहा हूं कि असली मामला विशुद्ध रूप से योगी व भोगी के बीच में है।'

गोपाली जानते थे कि ताऊ कोई बात भी सीधे नहीं करता, लेकिन इसके साथ यह बात भी सत्य थी कि जीवन के प्रतिपल

को मौज-मस्ती से जीते हुये ताऊ भयंकर से भयंकर गुत्थियां भी सुलझा लेता था।

वही नहीं, मित्रमंडली के अधिकांश सदस्य, गोपाली, ताऊ, जगत, लिली, बागारोफ, इत्यादि सभी जीवन जीना जानते थे। इसीलिये जाने कितनी बार मौत इन लोगों के पास आकर भी पराजित हुई थी।

केवल इसीलिये कि ये सभी लोग जीवन का सही अर्थ समझते थे और यह जानते थे कि दुःख अवसाद, चिन्ता से कभी किसी समस्या का हल नहीं होता। केवल मौज मस्ती भरे हंसमुख जीवन द्वारा आदमी अद्वितीय जीवनी शक्ति प्राप्त करता है और कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी वह विजयी बनता है—।

गोपाली ने बचा हुआ पेग उठाया और उसे एक ही सांस में खाली करके वह बोले—'तुम्हारी बात अपनी जगह पर ठीक है है ताऊ, लेकिन सवाल इस बात का है कि इस समय क्या करना चाहिये।'

ताऊ ने तडाक से उत्तर दिया—'हास्पिटल पहुँच कर उस चीनी युवती ली से कहना चाहिये कि अपने पुराने आशिक के पास वापिस चली जाय और विक्रांत को मजनू की तरह विलाप करता छोड़ दे। मामले की गाड़ी अपने आप सही जगह पर आ जायेगी।'

गोपाली भड़क उठे—'ताऊ कभी तो किसी बात को गम्भीरता से लिया करो।'

ताऊ ने आंखें निकाली—'क्या मतलब ? तेरे ख्याल से बेटा मैं राग बेसुरा अलाप रहा हूं। अगर तू यह समझता है कि मुहर्रमी सूरत बनाने से मामले का ऊंट खुद ही हमारे पास चलता फिरता चला आयेगा तो चल मैं बकायदा विलाप करना शुरू कर देता हूं।'

'समझने की कोशिश करो ताऊ...।'

'देख बे रेगिस्तानी ! अब ज्यादा लैक्चर देने की जरूरत नहीं है। मैं अभी फौरन हास्पिटल पहुँचता हूं तू इधर अपनी फौज सम्हाल और चीनी चोरों की नींद हराम कर दे।' और इसके साथ ही ताऊ ने बोतल उठाकर लगभग दो पैग व्हिस्की एक सांस में ही खाली कर दी और उठकर चलने के लिये तैयार हो गया।

गोपाली ने उसकी बांह पकड़ी—'हास्पिटल जाने से कोई समस्या हल नहीं होगी ताऊ।'

'तो क्या तेरे साथ बैठकर मर्सिया पढ़ने से मामले का पोस्ट-मार्टम होगा।'

'नहीं, सबसे पहले तो मैं फोन द्वारा बम्बई की पुलिस और यहां सक्रिय जासूसों को सूचना देकर सचेत करता हूं। इसके बाद मैं राजेश से फोन द्वारा सम्बन्ध स्थापित करके सारी स्थिति को बताता हूं और उनसे कहता हूं कि वह केन्द्रिय ग्रहमन्त्रालय द्वारा अविलम्ब यह आदेश भिजवाये कि बम्बई या देश के किसी भी हिस्से में जो भी चीनी दिखाई दे, उन्हें अविलम्ब गिरफ्तार कर लिया जाये और जो चीनी भागने की कोशिश करें उन्हें बिना हिचक गोली मार दी जाय। इस समय सुरक्षा के लिये यह सर्वाधिक आवश्यक है।'

ताऊ वापस बैठ गया—'दरअसल बेटा गोपाली, दिक्कत की बात यह है कि यह भारत है और यहां के मामले में अगर मैं टांग अड़ाने की कोशिश करूंगा तो जाहिर है, तुम्हारे ऐसे हरामी अडंगी मार कर गिरा देंगे। इसलिये जैसा तुम ठीक समझो करो। फिलहाल तो मैं आदमी से खच्चर बना, तुम लोगों के बीच फंस गया हूं। इसलिये जैसा कहोगे वैसा ही करना पड़ेगा।'

इसके बाद।

गोपाली ने फोन उठाकर बम्बई पुलिस के आई० जी० से फोन द्वारा सम्बन्ध स्थापित करके सारी स्थिति बताई और इस सम्बध में आवश्यक कदम उठाने के लिये राय दी।

इसके बाद उन्होंने राजेश के पास दिल्ली फोन किया और सारी बातें बताने के बाद कहा कि चीनियों की गिरफ्तारी के लिये गृहमन्त्रालय द्वारा अविलम्ब कदम उठाया जाना आवश्यक है…।

राजेश ने आश्वासन दिया वह तुरन्त ऐसा प्रबन्ध करा रहे हैं।

●

चीन का नगर सियान और उसमें स्थित हुआनसांग उर्फ डाक्टर प्रेत का निवास स्थान !

काले रंग का यह विशाल मकाम सियान वासियों के लिये ही नहीं बल्कि पूरे चीन वालों के हृदय में भय का संचार करता था।

सामान्य नागरिक की बात तो दूर बड़े-बड़े कलेजे वाले भी इस मकान की ओर जाने से घबराते थे। इसका कारण यह था कि डाक्टर प्रेत ने अपनी कार्यवाहियों द्वारा ऐसे भय का वातावरण बना दिया था कि लोग उसके नाम तक से घबराते थे।

इसी काले रंग के मकाम में।

रात के ठीक बारह बजे थे और डाक्टर प्रेत अपनी साधना में लगा हुआ था।

अपने उसी विशेष साधना गृह में, जिसमें वह सदैव प्रेत साधना किया करता था, इस समय डाक्टर प्रेत अपनी साधना में लगा हुआ था।

उसके सामने हवनकुंड जल रहा था और वह समाधि मुद्रा में हवनकुंड के सामने बैठा था। पास ही एक चौकी पर कई विभिन्न पत्रों में कई तरह के तरल पदार्थ, कुछ विशेष प्रकार की हवन सामग्री एवं बहुत सी मानव खोपड़ियां रखी हुई थी।

डाक्टर प्रेत उन विभिन्न पत्रों में से कभी कुछ उठाकर हवनकुंड में डालता और कभी कुछ। साथ ही वह लगातार मुंह से कोई विशेष प्रकार का मन्त्र बुदबुदाता जा रहा था।

जब भी वह कोई चीज हवनकुण्ड में डालता था तो लपट सी उठती थी। लेकिन एक विशेष बात यह थी कि हर बार लपट एक ही रंग की नहीं होती थी। कभी उसका रंग काला कभी गहरा लाल, कभी पीला और कभी एकदम सफेद होता था। इस समय डाक्टर प्रेत का रूप अत्यधिक भयानक हो रहा था। उसके शरीर पर किसी जानवर की खाल का एक कच्छा मात्र था। इसके अतिरिक्त सर्वांग शरीर नग्न था। इस समय उसका काला और झुलसा हुआ शरीर ऐसा लग रहा था जैसे यह सचमुच जीवित प्रेत हो। उसकी आंखें एकदम लाल हो रही थीं और ऐसा लग रहा था जैसे किसी मानव की आंखें न होकर जलते हुए शोले हों।

अचानक डाक्टर प्रेत ने एक पात्र में भरा हुआ कोई तरल पदार्थ पूरा का पूरा उस हवनकुण्ड में डाल दिया।

भयानक दुर्गंध फैली।

बिल्कुल वैसी ही दुर्गन्ध जैसी मांस के जलने पर होती है।

निश्चित रूप से यह तरल पदार्थ आदमी के शरीर की चर्बी थी, जिसके कारण इतनी भयंकर दुर्गन्ध फैली।

इस तरल पदार्थ के पड़ते ही हवनकुण्ड से बहुत ऊंची नीले रंग की लपट उठी और इसके साथ ही मेज पर रक्खी हुई खोपड़ियां बड़ी तेजी से उछलने लगीं।

ऐसा लगा जैसे कमरे के अन्दर भयंकर भूचाल सा आ गया हो।

अजीब तरह की सूं-सूं की आवाज होने लगी और ऐसा लगा जैसे कुत्ते और सियार भयानक आवाज में रो रहे हों। वातावरण बहुत ही भयावना हो उठा।

और इसके साथ ही डाक्टर प्रेत तेजी से उठकर साष्टांग दण्डवत् की मुद्रा में जमीन पर लम्बा लेट गया।

धीरे–धीरे हवनकुण्ड से उठने वाली लम्बी लपट धुंए में बदल गयी और बिल्कुल ऐसा लगने लगा जैसे कोई विशालकाय मनुष्याकृति खड़ी हो।

इसके साथ ही कमरे में उठा हुआ तूफान धीरे-धीरे थम गया। अलबत्ता खोपड़ियां बड़ी तेजी से उछलती रहीं और डाक्टर प्रेत उसी तरह जमीन पर लेटा रहा।

अचानक!

बिल्कुल ऐसा लगा जैसे कोई बहुत घिसा हुआ रिकार्ड बज रहा हो। निश्चित रूप से यह आवाज डाक्टर प्रेत के दादा तानवान प्रेत की थी।

'क्या बात है हुआन···तुमने मुझे क्यों याद किया ?'

डाक्टर प्रेत उठा और विनीत मुद्रा में हाथ जोड़े हुए वह बोला—'आप तो जानते हैं दादा जी कि जब मैं भयानक विपत्तियों में घिर जाता हूं तभी आपको कष्ट देता हूं।'

'मुझे सब मालूम है···फिलहाल तुम्हारे ऊपर कोई विपत्ति नहीं है। तुम निर्विघ्न रूप से अपना काम करते रहो। मैं तुम्हारे सितारे देखने में समर्थ हूं और मैं देख रहा हूं कि फिलहाल तुम्हारे सितारे बिल्कुल गर्दिश में नहीं हैं और इस काम में

तुम्हारी जीत होगी।'

'यह सब आपकी महान कृपा का फल है दादा जी! अगर आप कृपा न करते तो इतनी बड़ी असफलता पाने के बाद मैं कभी भी अपनी खोई हुई इज्जत न पाता। चीनी अधिकारियों ने तो मुझे दूध की मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दिया था। अगर आपकी महान कृपा न मिलती तो शायद मैं आत्महत्या कर लेता।'

'तुम मुझे बहुत प्यारे हो हुआन। इसीलिये मैं सारी कोशिश करके तुम्हें हमेशा बचाता रहता हूं। लेकिन इतना याद रखना कि विक्रांत के सितारे तुमसे भी ज्यादा सशक्त हैं। जितना कुछ मैंने बताया है, उसे पूरा करने में अगर तुमने जरा भी गड़बड़ी की तो तुम भयानक मुसीबत में फंस जाओगे—इसे अच्छी तरह याद रखना।'

'आपने जो कुछ बताया है, उसमें जरा भी गड़बड़ नहीं होगी महान दादा जी।'

'अगर गड़बड़ नहीं हुई तो यह तुम्हारे ही लाभ के लिये होगा। मुझे क्यों बुलाया है?'

'परसों अमावस्या है।'

'मुझे मालूम है। हर अमावस्या प्रेतों के लिये वरदान होती है। क्योंकि माह में इसी रात को प्रेतों को अद्वितीय शक्ति प्राप्त हो जाती है और इस रात को वे बड़े से बड़ा काम कर सकते हैं।'

'आपने मुझे जो अनुष्ठान बताया है, वह अमास्या को करना है।'

'अगर तुम विजयी होना चाहते हो तो तुम्हें अवश्य ऐसा करना होगा।'

'जनरल पाओविन ने मुझे फोन द्वारा सूचना दी है कि ग्यारह विभिन्न नस्लों के आदमी एकत्रित कर लिये गये हैं और डाक्टर

मधु चांदना की मूर्ति भी लगभग तैयार है।'

'मुझे मालूम है···मुझे सब मालूम है।'

'जनरल पाओविन ने उन ग्यारह आदमियों को और डाक्टर मधु चांदना की मूर्ति देखने के लिये मुझे बुलाया है। मैंने आपको इसीलिए कष्ट दिया कि उन सबको देखने के लिये मुझे जाना चाहिये या नहीं?'

'कोई जरूरत नहीं है। मैं सब कुछ देख चुका हूं।'

'तो क्या वे सब चीजें ठीक हैं।'

'बिल्कुल ठीक हैं। मैंने सब कूछ देख लिया है। तुम्हें ये सब देखकर अपना समय नहीं खराब करना चाहिये। इन सब बातों को छोड़कर तुम केवल अपनी साधना में लगे रहो और अमावस्या के लिये तैयारी करो।'

'जैसी आज्ञा दादा जी।'

'अब मैं जा रहा हूं।'

'केवल एक बात और बताने की कृपा करें दादा जी।'

'पूछो।'

'परसों अमावस्या की रात्रि को आप भी उपस्थित रहेंगे?'

'बिल्कुल रहूंगा। जिस समय तुम बलि दोगे, उस समय मैं तुम्हारे शरीर में प्रवेश करूंगा, जिससे किसी तरह की गड़बड़ी न हो सके और तुम निर्विघ्न रूप से अपना अनुष्ठान पूरा कर सको···अच्छा अब मैं जा रहा हूं।

डाक्टर प्रेत तुरन्त दंडवत की मुद्रा में जमीन पर लेट गया।

इसके साथ ही हवनकुण्ड से ऊंची उठी धुंए की लपट, जिसने मनुष्याकृति ले रखी थी, धीरे-धीरे नीचे बैठने लगी। कमरे में फिर ऐसा लगा, जैसे भयंकर तूफान आया हो।

खोपड़ियां तेजी से उछलने लगीं। हवा के प्रचंड झोंकों से दरवाजा बार-बार खुलने बन्द होने लगा।

कुछ क्षण ऐसी स्थिति रही। उसके बाद सब कुछ सामान्य हो गया। तानवान का प्रेत वापस जा चुका था। डाक्टर प्रेत उठकर बैठ गया। जब उसका चेहरा काफी सामान्य था।

●

गोपाली ने फोन द्वारा राजेश को बम्बई में घटने वाली दुर्घटना का विवरण दे दिया था। राजेश ने यह आश्वासन भी दे दिया था कि वह इस सम्बन्ध में अविलम्ब कार्यवाही कराने का प्रयत्न करेंगे।

ऐसा हुआ भी।

राजेश ने केन्द्रीय गृहमंत्रालय से मिलकर तुरन्त कार्यवाही कराई थी। वहां से महाराष्ट्र सरकार के नाम टेलीफोन द्वारा विशेष सदेश भेजा गया था। साथ ही केन्द्रीय खुफिया विभाग एवं विभिन्न प्रान्तों के खुफिया विभागों के एक विशेष दल को तुरन्त बम्बई रवाना कर दिया गया था।

फलस्वरूप !

सुबह होने के साथ ही बम्बई नगर में जासूसों की गतिविधियां बढ़ गई थीं। सशस्त्र पुलिस की गश्त बढ़ा दी गई थी और सुरक्षा के लिये सैनिक स्तर पर कार्यवाही हो रही थी।

इतना ही नहीं।

देश के विभिन्न भागों में केन्द्रीय गृहमन्त्रालय द्वारा इस सम्बन्ध में सूचनायें प्रसारित करदी गई थीं। इसका नतीजा यह हुआ कि कोई भी संदिग्ध चीनी दिखाई दिया तो फौरन

गिरफ्तार कर लिया गया। केवल उन्हें ही छोड़ दिया गया, जितना पिछला रिकार्ड बहुत अच्छा था।

देश में व्यापक रूप से गिरफ्तारियां हुईं। चीनियों के विरुद्ध अभियान तेज कर दिया गया। लेकिन जिसके लिये इतना सब किया जा रहा था, वह बात बिल्कुल भी पूरी नहीं हुई।

ऐसा कोई भी सूत्र हाथ में नहीं आया, जिससे चीनी षड़यंत्र की जानकारी मिलती।

लूवांग के बाद कौन सा ऐसा शक्तिशाली चीनी था, जो चीनी जासूसी षड़यन्त्र का संचालन कर रहा था, इस सम्बन्ध में पुलिस और खुफिया विभाग कोई पता नहीं पा सके। फिर भी व्यापक रूप से खोजबीन और पूछताछ चालू थी।

यूं बम्बई के नागरिक जीवन में स्थिति बिल्कुल सामान्य थी। ऐसा कुछ भी नहीं किया गया था, जिससे सामान्य नागरिक भयभीत हों अथवा उन्हें इस बात का आभास हो कि कोई असामान्य सी घटना घट गई है, जिसके कारण सरकार इस ढंग से भी सतर्कतापूर्ण कार्यवाही करने को विवश हो गई है!

इस सम्बन्ध में गृहमंत्रालय का विशेष आदेश था कि ऐसी कोई भी कार्यवाही न हो, जिससे जन जीवन में भय की भावना फैले।

रात में टेलीफोन से सम्बन्ध स्थापित होने पर राजेश ने फिर इस बात की उत्सुकता दिखाई थी कि वे स्वयं बम्बई आकर स्थिति का नियन्त्रण करना चाहते हैं।

उत्तर में स्वभाव के अनुसार पहले तो गोपाली ने भड़क कर उत्तर दिया था, यानि कि इस बेतुकी बात का क्या मतलब है? तुम्हारे ख्याल से क्या हम लोग यहां भाड़ झोंक रहे हैं या तुम अपने को हम सबसे ज्यादा काबिल समझते हैं।

बाद में नम्रता पूर्वक उन्होंने राजेश को समझाया था, इस समय तुम्हारा दिल्ली रहना बहुत आवश्यक है। क्योंकि हमें कब कैसी आवश्यकता पड़ जाय, इस सम्बन्ध में कुछ निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता। किसी तरह की आकस्मिक सहायता पड़ने पर तुम्हीं उसे पूरी कर सकते हो। इस तरह तुम्हारा दिल्ली में ही रहना आवश्यक है।

राजेश विवश हो गये अलबत्ता उन्होंने गोपाली से इस बात का आश्वासन अवश्य ले लिया कि दिन भर में दो बार फोन करके उन्हें सारी स्थिति से अवगत करा दिया जाय।

इधर बम्बई में !

कार्यानुसार तीन दल बना दिये गये।

जगत के ऊपर यह कार्य सौंपा गया कि वह डाक्टर मधु-चांदना की सुरक्षा की पूरी जिम्मेदारी ले। उनकी कोठी छोड़कर फिलहाल कहीं न जाय।

हालांकि जगत इस बात से भड़क उठा था।

उसने गोपाली से कहा था, देखो गुरु मैं पेशे से ठग हूं। जासूसी न तो मेरा पेशा है और न सरकार मुझे इस बात के लिये तनख्वाह देती हैं। मैं तुम लोगों की मुहब्बत में दोस्ती निभा रहा हूं लेकिन इसका यह कतई मतलब नहीं है कि मुझे तुम लोग कोल्हू का बैल समझ कर इस तरह के फिजूल के काम में जोत दो।

लेकिन गोपाली जानते थे कि जगत की यह उछल कूद दिखावटी है।

भारत का कोई भी जिम्मेदार नागरिक जितना डाक्टर मधु चांदना की सुरक्षा के लिये चिंतित हो सकता है। उससे किसी भी हालत में जगत कम परेशान नहीं है।

अपने जीवन को दांव पर लगाकर भी वह डाक्टर मधु चांदना की सुरक्षा के लिये प्रयत्नशील होगा।

इसलिये उन्होंने दो टूक उत्तर दिया—'तुम्हारी तबियत हो तो बेहिचक डाक्टर मधु चांदना को असुरक्षित छोड़ कर चले जाना। हम में से कोई भी तुमसे यह शिकायत करने नहीं आयेगा कि तुमने ऐसा क्यों किया। क्योंकि निश्चित रूप से यह तुम्हारा काम नहीं है। लेकिन फिलहाल इसके अतिरिक्त कोई और प्रबन्ध नहीं हो सकता कि हम तुम्हारे ऊपर भरोसा करें और डाक्टर मधु चांदना की जिम्मेदारी तुम्हारे ऊपर छोड़ दें। अब तुम जानो, तुम्हारा काम जाने।'

इस तरह !

गोपाली ने जगत को ऐसी जिम्मेदारी के बीच जकड़ दिया जिससे उद्धार पाना फिलहाल उसके उसके लिये सम्भव नहीं था।

यूं जगत खुद भी अपनी जिम्मेदारियों को समझ रहा था और चीनी जिस तरह का षड़यन्त्र कर रहे थे, उसके लिये बेहद चिंतित था।

दूसरी व्यवस्था तो लीविन के सम्बन्ध में की गई थी।

लीविन की सुरक्षा के लिये सर्वाधिक उपयुक्त विक्रांत को समझा गया और उसकी देख रेख के लिये उसे ही नियुक्त कर दिया गया।

हालांकि ताऊ ने इस व्यवस्था का विरोध किया।

उसने गोपाली से साफ साफ कहा कि अगर हरामखोर बैल को हरे खेत में छोड़ दिया जायेगा तो वह पूरी खेती चर जायेगा विक्रांत बुनियादी तौर पर औरत खोर है और लीविन की सुरक्षा की जगह वह उसके साथ बाकायदा इश्क की कबड्डी खेलने लगेगा।

लेकिन।

गोपाली जानते थे कि ताऊ का यह प्रतिरोध केवल दिखावटी है। वास्तव में वह स्वयं इस बात को जानता है कि लीविन की

सुरक्षा के लिये सर्वाधिक उपयोगी विक्रांत ही हो सकेगा।

इसलिये विक्रांत की नियुक्ति लीविन की सुरक्षा के लिये सेंट जीवियर हास्पिटल में कर दी गई थी।

हालांकि स्वयं विक्रांत इस बात को पसन्द नहीं कर रहा था कि उसे इस तरह कैदी की तरह हास्पिटल के दायरे में बांध लिया जाये।

वह खुलकर खेलने का आदी था और चाहता था कि षड़-यंत्र के पीछे जो अभियान चलाया जा रहा है उसमें उसे भाग लेने का मौका मिले। इसलिये उसने गोपाली के सामने प्रस्ताव रखा कि लीविन की सुरक्षा के लिये कुछ अन्य लोगों को हास्पिटल में नियुक्त कर दिया जाये प्रतिरक्षा कर्मचारियों की संख्या बढ़ा दी जाये और उसे मैदान में उतरने का मौका दिया जाय।

लेकिन गोपाली ने उसे समझाया कि डाक्टर प्रेत के मामले में सर्वाधिक महत्वपूर्ण सूत्र लीविन है। अगर इसे किसी तरह की क्षति पहुंची तो हम डाक्टर के प्रेत तक या यूं कहा जाये कि चीनी षड़यन्त्र की जड़ तक पहुंचने में लगभग असफल हो जायेंगे और हमें एक लम्बी परेशानी का सामना करना होगा। इसलिये तुम्हारा हास्पिटल में ही रहना आवश्यक है।

विक्रांत ने विवशता पूर्वक गोपाली का वह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

तीसरी व्यवस्था गोपाली ने स्वयं सम्हाली।

नगर में चीनी षड़यन्त्र की विफलता के लिये जो कार्यवाही की जा रही थी। उसका संचालन गोपाली ने अपने हाथ में लिया अपने साथ उन्होंने ताऊ को रक्खा।

स्वभाव के अनुसार ताऊ ने उछल कूद मचाई और गोपाली से साफ कहा—'मैं न तुम्हारे बाप का नौकर हूं और न भारतीय सरकार का कर्मचारी। इसलिये मैं इस झंझट में कतई नहीं पड़ना चाहता। अगर तुमने ज्यादा परेशान करने की कोशिश की

तो मैं फौरन टिकट कटा कर पेरिस रवाना हो जाऊंगा ।'

गोपाली ने दो टूक उत्तर दिया—'रवाना होकर तो देखो। अगर बीच चौराहे पर तुम्हें गोली न मार दी गई तो मेरा नाम श्री रामकृष्ण गोपाली नहीं ।'

यह सब तो महज मजाक था ।

ताऊ दिल से भारत का मित्र था और यहां पनपने वाले किसी भी षड़यन्त्र को समाप्त करने के लिये वह सदैव तैयार रहता था ।

इस तरह चीनी षड़यन्त्र को समाप्त करने के लिये तीन तरफ से मोर्चा बन्दी कर दी गई, जिसका संचलान गोपाली स्वयं कर रहे थे ।

लेकिन सभी को विराट की आतुरता से प्रतीक्षा थी ।

जाने क्यों सबके मन में यह दृढ़ विश्वास था कि विराट के होते हुये किसी तरह की कोई अशोभनीय घटना नहीं घट सकती है ।

सर्वाधिक चिन्तित विक्रांत था ।

अपने लिये नहीं, लीविन के लिये ।

जाने क्यों इस चीनी युवती के प्रति विक्रांत के मन में इतना मोह जाग उठा था ।

शायद इसका कारण यह रहा हो कि उसने महसूस किया था कि लीविन सम्पूर्ण रूप से निर्दोष है । उसकी जिन्दगी दूध धुली है और डाक्टर प्रेत जैसे नर दानव के हाथ उसकी जिन्दगी बरबाद हो रही है ।

इसीलिये विक्रांत चाहता था कि विराट जल्दी से जल्दी वापिस आ जाये, जिससे लीविन के जीवन का खतरा टल जाये ।

क्योंकि अन्य लोगों की अपेक्षा विक्रांत को उस बात का सर्वाधिक विश्वास था कि विराट के होते हुये लीविन के साथ

किसी तरह की अशोभनीय घटना नहीं घट सकती।

शाम के चार बजे थे।

विक्रांत लीविन के पलंग के पास बैठा उससे बातें कर रहा था।

हांलाकि इस समय स्वभाव के अनुसार विक्रांत अत्याधिक प्रसन्न नहीं था और न सदैव की तरह चुटकले भरी बातें कर रहा था।

उसका मन विभिन्न तरह की बातें सोचकर चिन्ताग्रस्थ था और मात्र औपचारिकता के नाते वह लीविन से बात कर रहा था।

दरअसल कल रात जो दुर्घटना हो गई थी उसके बाद से लीविन अत्याधिक भयभीत थी और किसी तरह विक्रांत को छोड़ने के लिये तैयार नहीं थी। जब भी विक्रांत उठना चाहता तो विनीत आग्रहपूर्ण लीविन उसे अपने पास बैठने को विवश कर देती।

विक्रांत को मन ही मन झुंझलाहट भी हो रही थी।

कभी-कभी वह सोचता कि यह व्यर्थ की घन्टी उसने गले में बांध ली है। लेकिन अगले ही पल उसे लीविन की निरीहता पर दया आ जाती और इसे अपना सबसे बड़ा कर्त्तव्य मानकर वह उसका मन बहलाने के लिये कोशिश करने लगता।

ठीक ऐसे ही समय···।

तब जबकि विक्रांत लगभग काफी ऊबा हुआ था, अचानक किसी दैवी सहायता की तरह हठयोगी विराट ने वार्ड में प्रवेश किया।

उसे देखते ही विक्रांत को लगभग उसी तरह की प्रसन्नता हुई जैसे किसी मरुस्थल में भटकने वाले बेहद प्यासे यात्री को अचानक जलधारा दिखाई पड़ जाये।

वह उछलकर विराट की ओर बढ़ता हुआ उतावले स्वर में

बोला-- 'यार विराट…।'

विराट सहज स्वाभाविक शान्त स्वर में बोला—'चिन्तित मत होइये भाई जी। मुझे सब ज्ञात हो गया है। इसीलिये अविलम्ब मैं आ गया हूं। मैंने आपसे कहा था कि आपमें से किसी के ऊपर भी कभी कोई संकट आयेगा तो मैं तुरन्त उपस्थित हो जाऊंगा…। देखिये न, कुमारी 'ली' के ऊपर कल रात संकट आया और इस समय मैं आपकी सेवा में उपस्थित हो गया।'

विक्रांत विराट की बांह पकड़ कर बोला—'तुम्हारे उपस्थित होने से अचार बनेगा या मुरब्बा। मैं पूछता हूं जब तुम योग साधना में इतने ही आगे बढ़े हों तो क्यों नहीं चीनियों का एक साथ कबाड़ा कर देते ?'

विराट उसके साथ आकर कुर्सी पर बैठता हुआ बोला-'ऐसा सम्भव नहीं है भाई जी।'

'क्यों नहीं सम्भव है…? चीनी क्या तुम्हारे ताऊ चाचा लगते हैं…जो तुम उनके खिलाफ कुछ कार्यवाही नहीं करना चाहते ?'

दूसरा कोई होता तो विक्रांत की इस बात से भड़क उठता। लेकिन विराट हठयोगी था। हठयोग के तृतीय आयाम तक पहुंच कर तन और मन को उसने प्रखर अग्नि में इस तरह तपा डाला था कि किसी तरह की अनुभूतियां उसे विचलित नहीं करती थी।

विक्रांत के किये व्यग्य के उत्तर में विराट ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया—'ऐसी कोई बात नहीं है भाई जी। भारत मेरा देश है और चीनी मेरे देश के शत्रु। इसलिए उन्हें समाप्त करना मैं अपना सर्वाधिक महत्वपूर्ण कर्त्तव्य समझता हूं। लेकिन मेरी इतनी क्षमता नहीं है कि जहां-जहां चीनी षड़यन्त्र पनप रहा है उसे मैं जान सकूं।'

'क्षमता क्यों नहीं है ?' क्या तुम योगी से भोगी हो गए हो...?'

सुनकर हंसा विराट—'ऐसी कोई बात नहीं है भाई जी। योग के बारे में अभी आपको कोई ज्ञान नहीं है, इसलिये ऐसी बात कह रहे हैं। वास्तविकता यह है कि हठयोग के तृतीय आयाम में पहुंचा व्यक्ति अधिक से अधिक दस मील की परिधि में होने वाली किसी घटना के सम्बन्ध मे ज्ञान प्राप्त कर सकता है। इसीलिये मैं चीनी षड़यन्त्र को सम्पूर्ण रूप से विफल कर पाने में असमर्थ हूं। क्योंकि इसकी जड़ें देश में बहुत दूर-दूर तक फैली हुई है।'

विक्रांत को न तो योग के सम्बन्ध में कोई ज्ञान था और न उसकी जानकारी की कोई उत्सुकता। वह ठोस यथार्थवादी व्यक्ति था।

इसलिये लगभग ऊबे हुये स्वर में वह बोला—'देख भाई योगी, मैं इन सब लफड़ों में पड़ने वाला नहीं हूँ। मैं तो केवल इतना जानता हूं कि अगर तुमसे कुछ हो सकता है तो तुरन्त कर डालो। वरना हम लोग तो चीनी हरामियों का दाल-दलिया करेंगे ही।'

'मैं जिस योग्य हूं उसमें आप लोग किञ्चित् भी मुझे सेवा करने में पीछे नहीं पायेंगे...।'

'तुम दूसरों की सेवा बाद में करते रहना। पहले विशुद्ध रूप से मेरी एक सेवा कर डालो।'

'आज्ञा दीजिये।'

'तुम इस चीनी युवती की देख भाल करो। मैं यहां से फूटना चाहता हूं। गुरू गोपाली ने मुझे उल्लू का चरखा समझ कर मुझे इस चीनी युवती की देख–भाल करने के लिये इस तरह नियुक्त कर दिया है जैसे मैं इसका सभापति हूं।'

विराट ने सहज शान्त स्वर में उत्तर दिया—'ऐसा नहीं हो

सकता! भाई जी।'

'क्या नहीं हो सकता ?'

'मैं कुमारी ली की सुरक्षा का भार अपने ऊपर नहीं ले सकता।'

'क्यों नहीं ले सकता बे ! क्या तुझे इस बात का खतरा है कि अकेले में तुझे पाकर यह चीनी छोकरी तुझे इश्क का पहाड़ा पढ़ाने लगेगी और विश्वामित्र की तरह तेरी तपस्या भंग हो जायेगी।'

सुनकर हंसा विराट—'ऐसी कोई सम्भावना नहीं है भाई जी। हठयोगी के लिये हर नारी गंगा की तरह पवित्र है। बात केवल इतनी है कि कुमारी ली की सुरक्षा का सम्बन्ध विशुद्ध रूप से जासूसी कार्य है जबकि इसके बारे में मुझे तनिक भी ज्ञान नहीं है। मैं यौगिक क्रिया द्वारा डाक्टर प्रेत जैसे नर पिशाच से कुमारी ली को मुक्त कराने का भार तो वहन कर सकता हूं, किन्तु किसी तरह के आक्रमण से उनकी सुरक्षा करना मेरे लिये बिल्कुल असम्भव कार्य है।'

विराट ने जो कुछ कहा था वह विक्रांत के दृष्टि कोण से एक दम सही था। मित्र मण्डली का कोई भी सदस्य यह नहीं जानता था कि विराट देश की सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं गोपनीय संस्था आई० डी० सी० का अध्यक्ष है।

विक्रान्त'''सोचता सा बोला—'वैसे तो तुम्हारी बात एक दम ठीक है योगी भाई, लेकिन इससे मेरी परेशानी तो हल नहीं हो रही है।'

'आपकी परेशानी ?'

'बिल्कुल अपनी ही परेशानी के लिये तो मैं बोखलाया हुआ हूं। वरना दूसरे के फटे में टांग अड़ाने की मुझे भला क्या आवश्यकता थी। यार लोगों ने मुझे उल्लू का पट्ठा बनाकर यहां कैद कर दिया है। जबकि मैं ताल ठोक कर बाहर निकलना

चाहता हूं और यह देखना चाहता हूं कि चीनी हिजड़ों में हकीकत में कितनी ताकत है। इसीलिये मैं चाहता हूं कि मेरी मदद करो।'

'जैसी सहायता आप चाहते है, वह मैं देने में असमर्थ हूं भाई जी। सुरक्षा का भार तो आपको ही वस्न करना होगा। वैसे भी मुझे कुछ अन्य तरह की तैयारी करनी है।'

'कैसी तैयारी ?'

'मैंने समाधि लगाई थी। उसके द्वारा मुझे ज्ञात हुआ कि डाक्टर प्रेत नामी नर पिशाच बहुत शीघ्र फिर भारत आने वाला है। अबकी वह बहुत भयंकर विनाश लीला फैलाना चाहता है। वह अपने षड़यन्त्र में सफल न हो सके, इसके लिये मुझे लम्बी साधना करनी होगी, जिससे वह आपमें से किसी का भी अनिष्ट न कर सके। इसलिये साधना के अतिरिक्त अन्य किसी तरह की जिम्मेदारी उठाने में मैं असमर्थ हूं।'

'तो क्या तुम फिर अर्न्तध्यान होने वाले हो ?' विक्रांत ने बौखला कर पूछा।

विक्रांत की बात पर बरबस ही विराट को हसी आ गई। उसने उत्तर दिया—'पहली बात तो यह कि मैं साधना करने के लिये कहीं नहीं जाऊंगा। बम्बई में रह कर ही साधना करूंगा...और डाक्टर प्रत की प्रतीक्षा करूंगा। लेकिन परिस्थितियों वश मुझे जाना भी पड़ गया तो किसी भी आकस्मिक दुर्घटना के होते ही मैं तुरन्त उपस्थित हो जाऊंगा। जैसे इस समय आ गया!'

'यह नहीं हो सकता।'

'क्या ?'

'तुम्हें बम्बई से फिलहाल बिल्कुल बाहर नहीं जाना है। अगर किसी साधारण अपराधी से टक्कर लेनी होती तो मैं उसका आमलेट बनाकर हजम कर जाता। लेकिन जहां तक

डाक्टर प्रेत टाइप जीव का सवाल है, उससे मुझे भी घबड़ाहट होने लगी है।'

'ऐसा क्यों ?'

'ऐसा इसलिये प्यारे योगी कि पहले मैं प्रेत अस्तित्व पर तनिक भी विश्वास नहीं करता था। हालांकि डाक्टर प्रेत टाइप जन्तु से मेरी डायरेक्टर उठा पटक हो चुकी है। साथ ही मैंने अपनी आंखों से उसकी कुछ करामातें देखी है। उसके बाद भी मेरा मन इस बात का दृढ़ता से विश्वास नहीं कर रहा है कि प्रेत अस्तित्व वास्तव में होता है।'

'तब आप क्यों परेशान हैं ?'

'परेशान केवल इसलिये हूं कि डाक्टर प्रेत की जो करामातें देखी हैं, उससे यह विश्वास करने पर विवश हुआ हूं कि कुछ ऐसी अदृश्य शक्तियां अवश्य हैं, जिनके द्वारा असम्भव कार्य भी किया जा सकता है। डाक्टर प्रेत ने तो जो कुछ किया, वह किया ही, तुमने भी कुछ करामातें दिखाकर यह सिद्ध कर दिया कि तुम उसके भी बाप हो। इस लिये तुम्हारा बम्बई में रहना हर हालत में आवश्यक है।'

'आपकी आज्ञा शिरोधार्य ! जब आप लोगों ने मेरे ऊपर यह भार सौंपा है तो मैं प्राण देकर भी इसे पूरा करूंगा। अच्छा अब मुझे आज्ञा दीजिये।'

'क्या मतलब ?' विक्रांत ने चौंक कर पूछा।

'अभी तो मैं सीधे आपके पास आया हूं। गोपाली जी इत्यादि से मिला भी नहीं। इसलिये यहां से जाकर उन लोगों से मिलना भी आवश्यक है।'

'कोई आवश्यक नहीं है गोपाली गुरू तुम्हारे बाप नहीं हैं, जिनसे मिलना आवश्यक हो। सबसे आवश्यक मुझसे मिलना है। क्योंकि मेरी जाने तमन्ना की जान खतरे में है। इस हालत में मैं तुम्हें जाने की बिल्कुल इजाजत नहीं दे सकता।'

विराट ने समझाया—'आप बिल्कुल भी चिन्ता न करें भाई जी ! मैं जब तक बम्बई में हूं, आपको कुमारी ली को अथवा किसी भी अन्य को किसी तरह की प्रेत बाधा प्रताड़ित नहीं कर सकती। कल रात्रि में कुमारी ली के ऊपर गोली चलाई गई और रात्रि में ध्यान लगाने पर मुझे इस सम्बन्ध में ज्ञात हो गया। देखिये मैं इस समय अविलम्ब उपस्थित हो गया।'

विक्रांत ऊब कर बोला—'यार, तू कहना क्या चाहता है योगी ?'

'मात्र इतना ही कि मुझे यहीं बंध कर बैठने की कोई आवश्यकता नहीं है। बम्बई में मैं कहीं भी रहूंगा, यदि यहां किसी तरह की कोई विपत्ति आयेगी तो मुझे तुरन्त ज्ञात हो जायेगा। इसलिये मुझे आज्ञा दें। आवश्यकता पड़ने पर मैं तुरन्त उपस्थित हो जाऊंगा। लेकिन गोपाली जी से मिलना आवश्यक है।'

इस तरह !

विक्रांत को समझा कर विराट चला गया।

हालांकि विक्रांत की तनिक भी इच्छा नहीं थी कि विराट जाय। लेकिन वह इस बात को भी समझ रहा था कि गुरु गोपाली से भी विराट का मिलना आवश्यक है। क्या पता वहां किस तरह की आवश्यकता हो। इसलिये न चाहते हुये भी उसने विराट को जाने दिया।

विराट और विक्रांत के बीच जो भी बातें हो रही थीं, वे सब हिन्दी में। इसलिये लीविन उन्हें समझने में असमर्थ थी। लेकिन वह विराट के देवतुल्य रूप को अपलक देखती रही थी। इसके पहले भी जब विराट को देखने का अवसर उसे मिला था तो उसके देवतुल्य रूप पर से उसकी दृष्टि हटाये नहीं हटी थी।

उसने सदैव ऐसा महसूस किया था कि क्या विराट इसी पृथ्वी का मानव है ? क्या ऐसा सौन्दर्य, जिसे देखने से आत्मा स्वर्गिक सुख से भर जाती है, इस पृथ्वी पर कहीं ऐसा सम्भव है···?

इस समय भी···।

जब तक विराट बैठा रहा, ली उसके मुख को लगातार निहारती रही थी और जब वह उठ कर गया था तो वह उस दरवाजे की ओर अपलक देख रही थी, जिधर से निकल कर विराट गया था।

विक्रांत ने ली की यह मुग्ध अवस्था देखी तो उसके तन बदन में आग लग गई।

हालांकि वह इस बात को भी अच्छी तरह जानता था कि अद्वितीय, अतुलित सौन्दर्यवान होने के बावजूद भी किसी युवती की ओर विराट देखता तक नहीं। हालांकि युवतियों का झुण्ड उसकी ओर आकर्षित रहता है और विराट के एक इशारे पर अपनी जान न्योछावर करने को तैयार रहता है। लेकिन विराट के ऊपर इन बातों का कभी कोई प्रभाव नहीं पड़ा। न वह स्त्री संसर्ग को कोई महत्व ही देता है।

लेकिन इसके बावजूद भी जब कभी ऐसा कोई भी प्रसंग आता है, जब विराट की ओर कोई युवती इस तरह लालसा भरी दृष्टि से देखती थी तो विक्रांत जल कर खाक हो जाता था। दरअसल वह हीन भावना का शिकार हो जाता था।

विराट के आने के पहले मित्रमंडली में ही नहीं, संसार में उसका रूप अद्वितीय माना जाता था। युवतियां उसके पास से आने के लिये उसका प्यार पाने के लिये और उसके साथ सोने के लिये होड़ लगाये रहती थी।

लेकिन !

विराट के आने से उसके सौन्दर्य में जैसे ग्रहण लग गया था।

जब कभी भी ऐसा अवसर आता कि वह विराट के साथ होता तो युवतियां उसे उपेक्षित कर देती और विराट के देव-तुल्यरूप को इस तरह पिपासित नेत्रों से देखने लगती कि अगर उनका वश चलता तो विराट को लेकर भाग जाती। विराट के सामने विक्रांत के कामदेव सरीखे सौन्दर्य का जैसे कोई महत्व न रह जाता।

ऐसी स्थिति में विक्रांत हीन भावना का शिकार हो जाता और उसकी तबियत होती कि विराट को गोली मार दे।

इस समय भी ऐसी ही बात हुई।

ली को इस तरह अपलक उस द्वार की ओर देखते देखकर, जिधर से विराट गया था। विक्रांत एकदम क्रोधित हो उठा।

वह तीखे स्वर में बोला—'मैडम ली···जिसको तुम इस तरह ललाबी नजरों से देख रही हो, वह ऐसा पत्थर है जिस पर कभी दूब नहीं जम सकती।'

लीविन घबरा सी गयी। उसने बौखलाये हुये भाव में पूछा—'तुम क्या कह रहे हो?'

'वही जो तुम समझ कर भी ना समझ बन रही हो।' विक्रांत बोला—'तुम विराट को जिस मोहब्बत भरी निगाहों में देख रही थी उससे कोई फायदा होने वाला नहीं था। वह हठयोगी है तुम क्या अगर स्वर्ग की अप्सरा भी आ जाये तो इश्क के अखाड़े में वह उठा पटक करने को तैयार नहीं होगा।'

ली ने मुंह बिचकाया—'तुम बेहद गन्दे आदमी हो···।'

विक्रांत हंसा—'इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। आदमी बुनियादी तौर पर गन्दा होता है। मैंने एक हकीकत समझाई

है। जिससे तुम्हारे पास सनद रहे और वक्त जरूरत पर काम आ सके।'

'तुम जैसे खुद हो वैसा ही दुनिया में हर आदमी को समझते हो। मैं तो विराट के देवस्वरूप मुख को देख रही थी। निश्चित रूप से वह अद्वितीय है और संसार में ऐसा रूप दिखाई नहीं दे सकता। ऐसा लगता है जैसे वह इस संसार का व्यक्ति ही न हो।'

'ऐसे रूप से क्या फायदा। जिसका कोई उपयोग न हो सके।' विक्रांत बोला।

'तुम इस बात को नहीं समझोगे। कुछ रूप केवल देखने के लिये होते हैं। उनको पूजने की तो इच्छा होती है लेकिन उपभोग की इच्छा नहीं होती।'

विक्रांत हाथ उठाकर बोला—'ठहरो, ठहरो। मुझे लगता है कि तुम भावुक होती जा रही हो और भावुकता सबसे बड़ा पागलपन है। मेरा ख्याल है कि तुम पूरी तरह पागल हो। इसके पहले ही डाक्टर को बुलाकर तुम्हारा इलाज करा देना चाहिये।'

विक्रांत ने कुछ इस अन्दाज से यह बात कहीं कि ली अनायास ही खिलखिला कर हंस पड़ी।

गम्भीर होता हुआ वातावरण एक बारगी ही हल्का हो गया।

●

विक्रांत ही नहीं गोपाली भी विराट और मिर्जा मोहन मार्टिन की बड़ी आतुरता से प्रतीक्षा कर रहे थे। इसलिये नहीं कि उनके आने से किसी तरह की सुरक्षा व्यवस्था में सहायता

मिलती अथवा चीनी जासूसों का षड़यन्त्र विफल करने में वे लोग किसी तरह का योगदान करते ऐसी कोई बात नहीं थी।

हालांकि मित्र मंडली के सभी सदस्यों को अब मिर्जा मोहन मार्टिन एवं बिराट का व्यक्तित्व रहस्यपूर्ण लगने लगा था लेकिन दृढ़तापूर्वक कोई भी यह समझ पाने में असमर्थ था कि वास्तव में वे लोग है क्या।

वैसे भी गोपाली इस समय इस झंझट में उलझना नहीं चाहते थे कि उन दोनों का व्यक्तित्व क्या है और वास्तव में वे दोनों क्या काम करते हैं।

असल में बात यह थी कि गोपाली को ऐसा कुछ महसूस हो रहा था कि डाक्टर प्रेतनामी वह पिशाच किसी भी समय आकस्मिक रूप में आ सकता है। उससे निपटने के लिये विराट का होना अनिवार्य था। इसीलिये वह आतुरता से दोनों की प्रतीक्षा कर रहा था।

गोपाली ऐसा अहसास क्यों कर रहे थे, इस बारे में उन्हें स्वयं पता नहीं था। कोई ठोस आधार भी नहीं था। बस मन से कोई ऐसी आवाज निकल रही थी जिसके कारण उन्हें ऐसा अहसास हो रहा था।

ऐसे में एक दिन।

तब जबकि वह ताऊ के साथ रक्षा व्यवस्था सम्बन्धी बातों पर विचार विमर्श कर रहे थे, तभी नौकर ने आकर सूचना दी कि मिर्जा साहब आये हैं।

सुनकर गोपाली प्रसन्नता से झूम उठे। मिर्जा साहब के आने का स्पष्ट मतलब था कि या तो विराट भी साथ में आया होगा अथवा उसके सम्बन्ध में कोई निश्चित सूचना मिल जायेगी।

जबकि स्वभाव के अनुसार ताऊ ने अपने ढंग से प्रतिक्रिया

व्यक्त की—'यार गोपाली, जाने क्यों इस मिर्जा टाइप बुड्ढे को देखते ही मुझे रंडी के दलालों की याद आ जाती है और मन करता है कि इसकी खोपड़ी पर गिनकर एक सौ इक्यावन जूते लगाऊं…।'

गोपाली ने डांटा—'कतई जरूरत नहीं है ताऊ कि हर आदमी को तुम अपनी ही नस्ल का समझो। होश में रहो और ढंग से बातें करो।'

'चलो हो गया होश में, अब बुलाओ उस अफलातून को और लगा लो गले…।'

तभी प्रवेश, द्वार से मिर्जा साहब की आवाज सुनाई दी—'मैं खुद ही आ गया हूं म्यां ताऊ! तुम्हें परेशान होने की कतई जरूरत नहीं है।'

ताऊ भी अपने ढंग का अनोखा ही आदमी था। वह आंख बन्द करके जल्दी २ चिल्लाने लगा—'जल तू…जलाल तू…आई बला को टाल तू…।'

जबकि,

गोपाली उठे और हाथ बढ़ाकर उन्होंने इस तरह मिर्जा साहब को आलिंगन में बांध लिया जैसे सचमुच उनसे मिलने को बहुत बेकरार हो। मिर्जा साहब ने भी उनके स्वागत का उसी तरह जोश के साथ उत्तर दिया।

ताऊ इस मौके पर भी नहीं चूका। उसने जोर से नारा लगाया—'भूत प्रेत जब मिलते हैं तो ऐसा ही नजारा दिखाई देता है।'

गोपाली स्नेह पूर्वक मिर्जा साहब को बैठाते हुये बोले—'इसकी बात का ख्याल मत कीजियेगा मिर्जा साहब! यह आदमी बुनियादी तौर पर कमीन श्रेणी का है।'

'आप बजाह फरमाते हैं गोपाली साहब!' मिर्जा साहब ने तपाक से उत्तर दिया—'लखनऊ में एक भिश्ती था उसे भी

सब लोग ताऊ कहते थे। वह भी इसी तरह की बातें किया करता था। दरअसल जिन्हें भी ताऊ कहा जाता है वे बुनियादी तौर पर आफ माईन्ड होते हैं इसलिये मैं उनकी बातों का बुरा नहीं मानता।'

ताऊ चिल्लाया—'बेटा मिर्जा होश में रह कर बातें करो। मैं तुम्हारा ही नहीं तुम्हारे बाप का भी असली ताऊ हूं......।'

'यकीनन ऐसा होगा।' मिर्जा साहब गर्दन हिलाते हुये बोले—'मेरे मरहुम अब्बा हुजूर कहा करते थे कि उनके ताऊ मरने के बाद प्रेत बन गये हैं और जाकर मिश्र में बस गये हैं। अब मुझे यकीन आ गया कि आप ही वह प्रेत ताऊ है...।'

मिर्जा साहब की बात पर गोपाली ने एक जोरदार ठहाका लगाया। जबकि ताऊ ऐसे फाड़ खाने वाले भाव से मिर्जा साहब और गोपाली को देखने लगा जैसे उन्हें कच्चा ही चबा जायेगा।

मिर्जा साहब ने तुरन्त रिमार्क कसा—'इस तरह आंखें फाड़ कर मत देखो ताऊ। वरना आंखे फटकर पुतली बाहर आ जायेगी और तुम सूरदास कहलाने लगोगे।'

'सूरदास कहलाऊं या कबीर दास...।' ताऊ चिल्लाया—'तुम्हारे बाप के पास शिकायत करने नहीं जाऊंगा। लेकिन इतना याद रखो मिर्जा बेटा कि मैंने तुम्हें आदमी से कबूतर न बना दिया तो मेरा नाम भी ताऊ नहीं।'

और इसके साथ ही ताऊ उठकर बाहर जाने लगा।

लेकिन गोपाली ने उसका हाथ पकड़ कर जोर से डांटा—'हर बात की एक सीमा होती है ताऊ। लोग कहते हैं कि बुढ़ापे के साथ अक्ल आ जाती है लेकिन मैं देख रहा हूं कि जितने तेजी से तुम बूढ़े हो रहे हो उतनी ही तेजी से तुम्हारी अक्ल भी

गायब होती जा रही है। हमारे सामने इतना नाजुक मसला है और तुम बेसुरा राग अलाप रहे हो इस समय जरूरी है कि हम लोग मिलकर बैठ कर समस्या का समाधान निकाले।'

ताऊ बैठ तो गया लेकिन इस समय मुंह फुलाये रहा जैसे लड़ाका बीबी हो।

गोपाली ने नौकर को चाय लाने का आदेश दे दिया और तब तक केवल औपचारिक बातें ही होती रही, जब तक कि चाय नहीं आ गई और उसे सब लोगों ने पीना नहीं शुरू कर दिया।

गोपाली ने चाय पीते हुये पूछा—'आप अचानक कहां गायब हो गये थे मिर्जा साहब ?'

'आप तो जानते ही हैं गोपाली साहब कि मैं तिजार्ति आदमी हूं। तिजारत के सिलसिले में कब कहां जाना पड़ जाये। इसके बारे में क्या बताया जा सकता है। बहरहाल मैं हाजिर हो गया हूं। मेरे लायक जो खिजमत हो उसे फौरन बताइये। मैं पूरा करने की हरचन्द कोशिश करूंगा।'

गोपाली ने गम्भीरता से उत्तर दिया—'असल में विराट का कोई पता नहीं और मुझे कुछ ऐसा महसूस हो रहा है कि डाक्टर प्रेत नामी वह नरपिशाच बहुत जल्दी फिर वापस आने वाला है।'

'ऐसा आपने कैसे सोचा ?'

उत्तर में गोपाली ने हास्पीटल वाली घटना मिर्जा साहब के सामने बयान कर दी, जिसमें लीविन के ऊपर गोली चलाई गई थी।

मिर्जा साहब ने ऐसा भाव प्रगट किया जैसे उन्हें इस सम्बन्ध में कुछ भी मालूम न हो। जबकि वास्तविकता यह थी कि बम्बई से पूना जाने के पहले मिर्जा साहब ने इन्टरपोल के कुछ सदस्यों को बम्बई की घटनाओं की देख-रेख के लिये नियुक्त

कर दिया था। इसलिये ज्यों ही लीविन के ऊपर गोली चलाई गई थी उसके दो घन्टे के अन्दर ही मिर्जा साहब को ट्रांसमीटर के द्वारा सूचना मिल गई थी और उन्होंने ही विराट को सारी घटनाओं के सम्बन्ध में सूचित किया था।

इस समय उसी सूचना के आधार पर विराट और मिर्जा मोहन मार्टिन बम्बई वापिस आ गये थे।

इतना ही नहीं।

मिर्जा साहब ने आते ही इन्टर पोल के सदस्यों को सुरक्षा सम्बन्धी आवश्यक निर्देश दे दिये थे। दूसरी ओर विराट ने मामा शकुनि को तुरन्त बम्बई आने के लिये फोन द्वारा सूचना दे दी थी।

इसीलिए सुबह आने के बावजुद भी वे लोग इस समय मिल पा रहे थे।

मिर्जा साहब ने आश्चर्य प्रगट किया—'यह तो बहुत खतरनाक बात है। आप लोगों ने इसके मुत्तालिक क्या किया है?' मिर्जा साहब ने आश्चर्य से पूछा। उनकी आवाज में आश्चर्य ही नहीं भय की भावना भी थी। जैसे गोली लीविन के ऊपर ही नही स्वय उनके ऊपर चलाई गई हो।

गोपाली ने उत्तर दिया—'सुरक्षा का जो भी व्यापक प्रबन्ध हो सकता है, उसे हमने कर दिया है। इतना ही नहीं, बम्बई और उसके आस पास तथा देश के विभिन्न भागों में जितने भी चीनी हैं उनकी धरपकड़ शुरू हो गयी है और काफी तादाद में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया है।'

यकीनन ऐसा होना लाजिमी था। वरना चीनी लुटेरे इस मुल्क को गारत में मिला देते। क्या बताऊं, कि मुझे अगर एक बन्दूक मिल जाये तो मैं सारे चीनियों को गोली मार दूं।'

ताऊ तुरन्त बोल पड़ा—'बोल तो ऐसा रहा है बेटा जैसे

बन्दूक न हुई मुन्नी जान की सारंगी हो गई। खानदान में तो सब लोग रंडियों के यहां सारंगी बजाते आये और मियां मिर्जा बन्दूक चलाने की बात कर रहे हैं। इससे बढ़कर मजाक की और क्या बात हो सकती है।'

मिर्जा साहब इस तरह उछल कर खड़े हुये जैसे किसी से कुश्ती लड़ना हो। ताल ठोकते हुए बोले—'आओ म्यां ताऊ। तुम भी क्या याद करोगे कि किसी खानदानी पहलवान से पाला पड़ा है। एक ही झटके में तुम्हें यहां से उठाकर काहिरा नहीं फेंक दिया तो मेरा नाम भी मिर्जा मोहन मार्टिन नहीं।

गोपाली को यह सब बहुत बुरा लगा। बात बहुत गम्भीर विषय पर चल रही थी और इसमें गड़बड़ घुटाला ताऊ ने किया था।

वह भड़क कर बोले—'ताऊ या तो तुम ठीक से बैठकर बातें सुनो और जरूरत हो तो अपनी सही राय दो। अगर तुम्हारे में इतना धैर्य नहीं है तो फौरन बाहर निकल जाओ। जब मामला इतना गम्भीर हो तो ऐसी बेवकूफी की बातें अच्छी नहीं लगती।'

यूं ताऊ हर मामले में बहुत सतर्क समझा जाता था। इसमें भी कोई शक नहीं कि मामले की गम्भीरता को पूरी तरह समझ रहा था लेकिन वह अपनी आदत से मजबूर था। इस बात को गोपाली भी जानते थे।

गोपाली की बात पर ताऊ ने गम्भीरता का अभिनय करते हुये उत्तर दिया—'यार गोपाली, तुम्हारे देश में हूं। इसका यह कतई मलब नहीं है कि तुम बार-बार मेरे ऊपर चांदमारी करने लगो। मेरे ऊपर तो हर बार आंख दिखाते हो। लेकिन अपने इस कार्टून टाइप बाप को कुछ नहीं कहते। जिसको अगर मैं एक हाथ मार दूंगा तो सीधे हिन्द महासागर में जाकर ही गिरेगा।'

मिर्जा साहब ने ललकारा—'तो आ जाओ न म्यां ! मैं तो कब से खम ठोक रहा हूं।'

ताऊ कोई उत्तर देता इसके पहले ही गोपाली मिर्जा साहब का हाथ पकड़ कर बोले—'मेरी आप से प्रार्थना है मिर्जा साहब आप कुछ देर के लिये ताऊ की बातों का ख्याल न करें, जो बात हमारे सामने है उस पर हम गंभीरतापूर्वक विचार करें।'

मिर्जा साहब वापस अपनी जगह बैठते हुये बोले—'मैं तो कुद मसले को सजिन्दा होकर सुलझाना चाहता हूं गोपाली साहब। लेकिन भाई ताऊ को जाने क्यों मुझसे इस तरह की नाराजगी है कि ये बार-बार मुझसे उलझ पड़ते हैं।'

'मैंने कहा न मिर्जा साहब कि यह इसका दोष नहीं है, इसकी जाति का दोष है। यह जाति का भिश्ती…।'

'अबे ओ चमार की औलाद !' ताऊ जोर से चिल्लाया—'साले होश में रह। वरना ऐसा न हो कि बिना वक्त तेरी दो लुगाईयों को रांड होना पड़े।'

बिल्कुल इस प्रकार जैसे ताऊ की बात का कोई महत्व ही न हो, गोपाली गम्भीरतापूर्वक बोले—'मिर्जा साहब, इस वक्त सबसे आवश्यक विराट का होना है। वही एक ऐसा व्यक्ति है जो डाक्टर प्रेत के अप्रत्याशित आक्रमण से रक्षा कर सकता है। इसलिये जहां कहीं वह हो, उसे फौरन बुलाने की आप व्यवस्था करें।'

'वह तो आ चुका है गोपाली साहब।'

'क्या मतलब ?' गोपाली चौंके–'कहां है वो ?'

'मैं जब इधर आ रहा था तो वह मुझे चरनी रोड के चौराहे पर मिला था। उसने मुझे बताया कि वह किसी अज्ञात स्थान पर योग साधना कर रहा था। उसी वक्त उसे यहां के हादसे के बारे में मालूम हुआ और वह फौरन इधर के लिये रवाना हो गया। इस वक्त वह सैंट जेवियर हास्पिटल गया है।

उसे मैंने कह दिया है कि लीविन को देखने के बाद इधर ही चला आये।'

सुनकर गोपाली को बेहद प्रसन्नता हुई।

उन्होंने अपने मन का उल्लास प्रगट किया–'इस समाचार से मुझे कितनी प्रसन्नता हुई है, इसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते मिर्जा साहब। विराट के आ जाने से हम लोग ऐसा महसूस करते हैं जैसे वास्तव में सेना का सेनापति आ गया हो।'

जबकि ताऊ ने अलग ढंग से प्रतिक्रिया व्यक्त की—'यह क्यों नहीं कहता मेरे लाल कि विराट के आने से तू ऐसा महसूस करता है जैसे तेरा सगा बाप आ गया हो।'

विराट के आने का समाचार जानकर गोपाली का मन प्रसन्न हो उठा था। इसलिये उन्होंने ताऊ की बात का बुरा नहीं माना। यही नहीं, गम्भीर वातावरण अचानक हल्का हो उठा और मित्रों के बीच नोंक झोंक आरम्भ हो गई।

●

डाक्टर मधु चांदना की कोठी की सुरक्षा के लिये गोपाली ने फिलहाल अन्तर्राष्ट्रीय आदर्शवादी ठग जगत को नियुक्त किया था।

हांलाकि जगत ने बहुत हाथ पांव मारे थे और साफ कहा था, कि गुरू मैं सेना का मेजर जनरल नहीं हूं। पेशे से ठग होने के कारण मैं अपने दोनों गुरूभाईयों को उठाकर कुवैत में ले जाकर बेच तो सकता हूं। लेकिन उस खूसट टाईप डाक्टर मधुचांदना की देख-रेख की जिम्मेदारी मुझसे कतई नहीं हो सकती। यानि कि इसका क्या मतलब हुआ कि जिस आदमी को औरत नाम से

ही कोई दिलचस्पी न हो और जिसके बंगले के आस-पास औरत क्या, कोई हिजड़ा भी न दिखाई दे तो ऐसी जगह में भला कैसे कह सकता हूं।

लेकिन गोपाली अपने ढंग के अनोखे आदमी थे।

उन्होंने जगत द्वारा उछल कूद मचाने के बावजूद भी उसकी नियुक्ति डाक्टर मधुचांदना की कोठी पर कर दी थी और स्पष्ट रूप में चेतावनी दे दी थी, बेटा ठग, मेरा नाम रामकृष्ण गोपाली है अगर डाक्टर मधुचांदना को कुछ हो गया तो बिना हिचक मैं सबसे पहले तुम्हें गोली मार दूंगा।

बेचारा जगत !

शायद इस तरह की झंझट में वह जीवन में कभी नहीं उलझा था।

आंख फाड़–फाड़कर दूर तक देखने के बावजूद भी कोई खूबसूरत चेहरा क्या, बदसूरत भी नहीं दिखाई देता था। यह अलग बात है कि रोज सुबह उठते ही वह गोपाली को नियमित रूप से एक हजार एक गालीं देता था।

लेकिन सबसे ज्यादा परेशानी थी केन्द्रीय खुफिया विभाग के जूनियर जासूस अशोक गांगुली की।

विक्रांत के स्थान पर आवश्यकता पड़ने पर डाक्टर मधुचांदना की सुरक्षा की देख–रेख के लिए केन्द्र से अशोक गांगुली को भेजा गया था।

जब तक विक्रांत था तब तक तो मामला कुछ ठीक था। लेकिन दुर्भाग्य से इस समय विक्रांत के स्थान पर जगत की नियुक्ति हो गई थी और केन्द्र से राजेश ने टेलीफोन द्वारा यह आदेश दे दिया था कि हर बात मानी जाये।

बेचारा बंगाली !

उसे क्या मालूम था कि उसका पाला ऐसे बीहड़ आदमी से पड़ा है जिससे बड़े-बड़े पनाह मांगते हैं।

जगत उसे रोज एक चेतावनी देता—'बेटा बंगाली या तो फौरन कहीं से मेरे लिये एक बंगालिन ले आओ। वरना मैं मार मार कर तुम्हें उदबिलाव बना दूंगा और तुम कुंवारे ही मर जाओगे।'

अशोक गांगुली परेशान।

उसकी समझ में नहीं आता था कि इस अजीब समस्या का समाधान कैसे किया जाये।

वह जगत को समझाने की कोशिश करता—'सर, आप यकीन कीजिये मैंने अपने जीवन में कोई लड़की क्या कोई बंदरी भी नहीं फंसाई। अब आपके लिये...।'

जगत बीच में ही उसे डांट देता—'इसका क्या मतलब बे बंगाली। मैं अपनी बात कह रहा हूं, तू बीच में अपना राग क्यों अलापने लगता है। अबे कोई नहीं मिलता तो किसी को अपनी धर्ममाता बना कर ले आ। मैं उससे भी काम चला लूंगा। लेकिन इतना याद रखना कि अगर एक हफ्ते के अन्दर तूने कोई औरत नहीं फंसाई तो मैं तुझे आदमी से उदबिलाव जरूर बना लूंगा।'

इस तरह रोज ही जगत अशोक गांगुली को चेतावनी देता और बेचारा बंगाली दिन प्रतिदिन बदहवास होता जाता।

आज सातवां दिन था।

दूसरी ओर जगत।

अशोक गांगुली के रूप से उसे बढ़िया किस्म का कार्टून मिल गया था और इस तरह उसने अपनी तबियत बहलाने के लिये एक बढ़िया साधन ढूंढ़ लिया था।

ठीक उस समय जबकि विराट विक्रांत से बात करके हास्पिटल से रवाना हो चुका था, जगत ने अशोक गांगुली को बुलाया।

बेचारा बंगाली।

जगत के सामने पहुँचते ही वह बौखलाया सा इस भाव में बोला जैसे अभी रो पड़ेगा—'सर'''मैंने एक मछेरन को आपके लिये फांसने की कोशिश की। लेकिन उसने मेरी बात सुनते ही इतनी जोर का हाथ मारा कि मैं मुंह के बल गिर पड़ा।

देख लीजिये सर'''मेरे माथे पर चोट लग गई'''।'

जगत को उसकी बात पर बहुत तेज हंसी आई। लेकिन ऊपर से उसने अपना चेहरा और अधिक कठोर बना कर पूछा—'तुमने उससे क्या कहा था ?'

'मैंने कहा था सर कि एक मेरे पिता जी हैं'''तुम उनकी माता जी बन जाओ।'

'क्या बकता है बे !' जगत ने डांटा—'मैंने तुझे अपनी माता जी बनाने को कहा था कि मेरी ?'

'कोई फर्क नहीं पड़ता है सर। मैं तो इस चक्कर में था कि वह मछेरन किसी तरह आ जाये। चाहे वह मेरी मां हो या आपकी'''।'

जगत समझ गया कि अशोक गांगुली जरूरत से ज्यादा बौखला चुका है। इसे अगर अधिक तंग किया गया तो हो सकता है इसे बेहोशी का दौरा पड़ने लगे :

इसलिये वह गम्भीर स्वर में बोला—'बेटा बंगाली, तुमने जुर्म तो इतना बड़ा किया है कि फौरन तुम्हें गोली मार देने की तबियत होती है। लेकिन कोई बात नहीं मैं एक हफ्ते का और समय देता हूं। इस अवधि में मेरा काम हर हालत में हो जाना जाना चाहिये।'''लेकिन इतना याद रखना अब की किसी मछे-रन से बात न करके किसी बंगालिन से बात करना। तब मामला जल्दी और आसानी से पट जायेगा। अब फौरन यहां से फूट लो।'

फिर बिल्कुल इस तरह, जैसे कोई बंधा हुआ सांड छूटते ही भागता है, अशोक गांगुली बेतहाशा वहां से भाग लिया उसने यह

भी नहीं देखा कि उसके जाते ही जगत ठहाका लगाकर हंस पड़ा।

यकीनन दिल बहलाने के लिये अशोक गांगुली बढ़िया किस्म का कार्टून मिला था।

वैसे यह बात सही थी कि लगातार एक जैसी जिन्दगी जीने के कारण जगत की तबियत ऊब उठी थी। वह मस्त प्रकृति का आदमी था और ठहरना उसे बिलकुल पसन्द नहीं था। जबकि मधुचांदना की सुरक्षा के चक्कर में उसे इसी कोठी के दायरे में बंधकर रह जाना पड़ा था।

उसने सोचा, क्यों न इस सम्बन्ध में गोपाली को फोन करके स्पष्ट कह दे, गुरु अपने साथ मुझे रख लो यहां का ताम झाम ताऊ को सम्भलवा दो। मेरे वश का इस तरह का चरखे टाइप का काम बिलकुल नहीं है।'

वह फोन करने की बात सोच ही रहा था, तभी पास रखे फोन की घन्टी घनघना उठी।

दरअसल हुआ यह कि दूसरे कमरे में जाकर अशोक गांगुली ने गोपाली को फोन किया और हांफते हुये सारी घटना बता दी इत्तफाक से ठीक उसी समय मिर्जा साहब गोपाली के यहां बैठे थे और उन्होंने विराट के सम्बन्ध में गोपाली और ताऊ को बता दिया था।

तभी अशोक गांगुली का फोन आ गया था और उसने गोपाली से स्पष्ट कहा था कि अगर जगत से उसका प्राण नहीं छुड़ाया गया तो निश्चित रूप से वह आत्म हत्या कर लेगा।

गोपाली ने उसे आश्वासन दे दिया कि वह जगत को समझा देगा और भविष्य में वह तंग नहीं करेगा।

उसके बाद गोपाली ने ताऊ और मिर्जा साहब को अशोक गांगुली की बात बताई थी तो वे लोग खूब हंसे थे।

अलबत्ता ताऊ तुरन्त बोल उठा—'दरअसल वह ठग की

औलाद असली अपनी मां का खसम है। सीधे सादे लड़के अशोक गांगुली को परेशान कर रखा है। यह भी नहीं सोचा कि उस की मां का यार ताऊ अभी बम्बई में बैठा है। मैं अभी डाक्टर मधु चांदना की कोठी पर पहुँच कर जूते मार-मार कर ठग की खोपड़ी गंजी कर देता हूँ...।'

'यह तुम्हारी ही वजह से है।' गोपाली बोले।

'क्या मतलब ?'

'तुमने ही उसका साथ किया और दुनिया भ्रमण के चक्कर में उसके साथ निकल पड़े थे। तुम्हीं उसे कुबैत लेकर यहां आये थे। ऐसे में उसके ऊपर तुम्हारा असर पड़ना लाजिमी ही है।'

ताऊ कोई कड़ी बात कहने ही वाला था, तभी गोपाली ने रिसीवर उठाकर फोन का वह नम्बर डायल किया जो सीधे जगत से सम्बधित था।

जगत ने फोन उठाकर केवल 'हलो' ही कहा था कि गोपाली एकदम बरस पड़े—'जगत यह मत भूलो कि तुम बम्बई में हो। यहां मेरी हवा है और तुम्हारे जैसे लुटिया चोरों को मैं जेल में कभी भी बन्द करा सकता हूं और मेरे रहते जिन्दगी भर अगर जमानत हो जाय तो मेरा नाम गोपाली से बदल कर भोपाली कर देना...।'

जगत परेशान !

उसकी समझ में नहीं आया कि यह माजरा क्या है जो गुरु बिना किसी भूमिका के बिना बादल की बरसात की तरह एकदम बरस पड़े।

लेकिन उसका भी नाम जगत था।

अगर वह इतनी आसानी से हथियार डाल देता तो उसे ठग शिरोमणि कौन कहता ?

बड़ी शान्ति से उसने उत्तर दिया—'माना गुरु कि यह

बम्बई है । यह भी माना कि तुम मुझे जेल में बन्द करा सकते हो। लेकिन यह किसी हालत में नहीं मान सकता कि तुम्हारे जैसे रियासती रिटायर्ड जासूस मुझे गिरफ्तार कर सकते हैं। अगर सचमुच अपने बुढ़ापे में दाग लगाना चाहते हो तो आजमा देखो···।'

जगत···!'

'बूढ़े मरियल शेर की तरह दहाड़ने से असलियत पर परदा नहीं पड़ सकता गुरु! बहरहाल मामला तो समझाओ कि तुम क्यों इस तरह बौखलाये हुये हो। अगर मेरी दो अदद गुरु-आइनों में से कोई एक भाग गई है तो इसका इत्मीनान रखो कि मेरे पास उनमें से कोई नहीं आया है···।'

'होश में रह बे ठग···।'

'बराबर रहूंगा गुरु। लेकिन पहले यह बताओ कि सचमुच दो अदद गुरुआइनों में से कोई एक भाग गई है?' अगर हकीकत में बात ऐसी ही होगी तो बात सचमुच चिंताजनक है और मेरी पूर्ण सहानुभूति तुम्हारे साथ है।'

'मैं पूछता हूं, तुम्हें डाक्टर मधु चांदना की कोठी पर क्यों नियुक्त किया गया है?'

'अपना मुकद्दर ठोंकने के लिये और तुम्हारे काम को रोने के लिये।'

'मैं गम्भीर हूं जगत···।'

'तुम बुढ़ापे में आकर गम्भीर हुये हो गुरु, मैं पैदायशी गम्भीर हूं।···मैं तुमसे सच कह रहा हूं कि इससे ज्यादा बोरियत का काम मैंने जिन्दगी में कभी नहीं किया या तो तुम मेरी जगह पर फौरन किसी दूसरे को भेज दो। वर्ना मैं यहां से किसी भी समय इस तरह फूट लूंगा कि तुम मेरी खाक भी नहीं पा सकोगे···।'

'यह बाद की बात है फिलहाल मुझे यह पूछना है कि तुमने

अशोक गांगुली को क्यों परेशान कर रखा है ?'

सारा मामला तुरन्त जगत की समझ में आ गया।

वह समझ गया कि अशोक गांगुली ने दूसरे फोन से गोपाली को सारी सूचना देकर अपना दुखड़ा रोया है !

वह हस पड़ा और बोला—'गनी मत समझो गुरु कि मैंने उससे इस लायक रखा है कि तुम्हें फोन करके अपना दुखड़ा रो सके वरना उसकी शक्ल देखते ही मेरी तबियत होती है कि मैं उसे आदमी का मुर्गा बना दूं। यानि कि यह क्या बात हुई कि आदमी हर समय मुहर्रमी सूरत बनाये रहे वह बंगाली पूत जैसे भूले से भी हंसना नहीं जानता...।'

'किसी सीधे आदमी को इस तरह परेशान करना बहुत गलत बात है जगत...।

यकीनन गलत बात है गुरु ! लेकिन इससे भी ज्यादा गलत बात यह है कि मेरे ऐसे घूमने वाले आदमी को तुमने इस मनहूस जगह में निगरानी करने के लिये छोड़ दिया है। अगर तुमने तुरन्त मुझे इस झंझट से मुक्ति नहीं दिलाई तो अभी तो केवल अशोक गांगुली ने तुम्हारे पास पहुँचकर रोना रोया है। कल डाक्टर मधु चांदना भी छाती पीटते हुये तुम्हारे पास पहुंचेंगे।'

'अगर तुमने ऐसी कोई हरकत की तो मैं तुम्हारा जीना हराम कर दूंगा। इसको अच्छी तरह समझ लो।...बहरहाल तुम्हारे लिये एक सूचना है...।'

'क्या प्यारे ताऊ अल्लाह को प्यारे हो गये...।'

'नहीं, वह ऐसी मोटी खाल का आदमी है जो इतनी आसानी से मर नहीं सकता। सूचना यह है कि विराट यहां बम्बई में आ गया है और बहुत जल्दी मेरे यहां आने वाला है। इस समय मिर्जा साहब यहीं बैठे हैं और उन्होंने ही यह सूचना दी है।'

'इस समय विराट कहां है ?'

'वह सेंट जेवियर हास्पिटल को देखने गया है।...मेरा ख्याल है तुम भी यहां आ जाओ। विराट की उपस्थिति में हम लोग सुरक्षा सम्बन्धी कुछ उपयोगी और रचनात्मक योजनायें तैयार कर सकेंगे...।'

'आने को तो तुम जहां कहोगे, मैं आ जाऊंगा गुरु! लेकिन मेरा आना एकदम बेकार है...।'

'क्यों ?'

'दरअसल गुरु मैं इस बात को महसूस कर रहा हूं कि तुम लोगों ने मुझे हराम का बैल समझ रखा है। जिसे जब चाहा किधर भी चाहा जोत दिया। जानता हूं, योजना तुम तैयार करोगे। मुझे तो तुम लोग मिल कर जोत दोगे और इस समय परिस्थिति ऐसी है कि मैं इस समय जुतने से इन्कार भी नहीं कर सकता।'

सुन कर हंस पड़े गोपाली—'ऐसी बात तनिक भी नहीं है जगत! बात केवल इतनी हैं कि चीन ने भारत को गहरे चक्कर में उलझा दिया है। इसलिये भारतीय होने के नाते हम सब का यह कर्त्तव्य है कि इसकी सुरक्षा के लिये अगर हमें अपने प्राण भी उत्सर्ग करने पड़े तो पीछे न हटें। मैं समझता हूं, तुम मेरी बात से सहमत होगे।'

सहमत तो जगत था ही। इसलिये उसने कह दिया कि वह शीघ्र पहुँच रहा है।

जिस समय जगत गोपाली की कोठी पर पहुँचा, उसे एक अजीब नजारा दिखाई दिया।

विराट गम्भीर मुद्रा में पालथी मारे बैठा था। मिर्जा मोहन मार्टिन बैठे हल्के हल्के मुस्कुरा रहे थे। जबकि गोपाली एक डंडा ताने इस तरह खड़े थे, जैसे बस मारने ही वाले हों।

और ताऊ···

उसकी अजीब दुविधा पूर्ण स्थिति थी।

वह अधर में लटका हुआ था और उसने कान पकड़ रखे थे।

ताऊ की यह अजीब मुद्रा देखकर जहां जगत को एक ओर हंसी आई, वहीं दूसरी ओर उसे यह समझते भी देर नहीं लगी कि किसी कारण वश यह खुराफात विराट की ही है।

इसलिये किसी से कुछ न पूछ कर उसने सीधे विराट से ही पूछा—'यह क्या है बे योगी? ताऊ को तूने आदमी से उल्लू का पट्ठा क्यों बना दिया है···।'

कमाल था इस स्थिति में भी ताऊ जबान चलाने से बाज नहीं आया। बोला—'मौके मौके की बात है बेटा ठग! इन लोगों का दांव लग गया, इसलिये इन्होंने मेरे साथ यह सलूक कर दिया। जब मेरा दाव लगेगा तो मैं इन सबको मुर्गा बनाकर हलाल कर दूंगा···।'

ताऊ की बात पूरी होने के पहले ही गोपाली ने उसकी पीठ पर एक डन्डा तानकर मारा।

ताऊ जोर से चिल्लाया—'साले रेगिस्तानी ऊंट, तुझे मैं ऐसी ही जगह ले जाकर मारूंगा जहां पानी भी नसीब नहीं होगा। अपने बाप विराट की सहायता लेकर तू जो ऐंठ रहा है उसका फल तुझे भोगना होगा···।'

जगत विराट के पास पहुँचा और उसने सीधा सवाल किया—'क्या बात है बेटा? तूने इस तरह ताऊ को चमगादड़ की की तरह क्यों लटका रखा है?'

अपने स्वभावानुसार विराट ने सहज शान्त स्वर में उत्तर

दिया—'कोई विशेष बात नहीं है चाचा जी ! जब मैं यहां पहुँचा तो ताऊ जी ने स्पष्ट रूप से चेतावनी दी कि यह योग आदि में कोई विश्वास नहीं करते। उनका कहना था कि मैं योग के नाम पर ढोंग करता हूं और डाक्टर प्रेत से मैं लड़ने में सक्षम नहीं हूं। योग का चमत्कार दिखाने के लिये मैंने इस प्रकार ताऊ को कान पकड़े हुये अधर में लटके रहने को विवश कर दिया।'

जगत ने उसे आदेश दिया—'अच्छा अब तमाशा खत्म करो…।'

गोपाली ने टोक दिया—'नहीं जगत ! इस मामले में तुम्हें बोलने की जरुरत नहीं है। दरअसल यह ताऊ कुत्ता टाइप का जीव है। यह जरूरत से ज्यादा अपने को अक्लमन्द समझने लगा है। इसीलिये जरूरी है कि इसे कुछ सजा दी जाये।

ताऊ चिल्लाया कोई बात नहीं बेटा। इस वक्त तेरा मौका है, कुछ भी कह ले जब मेरा मौका आयेगा तो इतने जूते मारुंगा कि आवाज सीधे दिल्ली में कुतुबमीनार पर सुनाई देगी।'

जगत ने डांटा—तुम्हारे जैसा बेहया नस्ल का आदमी भी मिलना मुश्किल है ताऊ। तुम्हारी इतनी कुत्ता घसीटी हो रही है उसके बाद भी तुम अपनी हरकत से बाज नहीं आ रहे हो।'

सचमुच कमाल का साहसी था ताऊ भी। इस तरह कान पकड़े हुये अधर में लटके रहने के बावजूद भी न उसके चेहरे पर किसी तरह की परेशानी थी और न कोई घबराहट। जगत की बात पर वह जोर से दहाड़ा—'अपनी शिक्षा अपने ही पास रख बेटा ठग ! तेरे जैसे जेब कतरों को मैं रोज पहाड़ा पढ़ा कर आदमी बनाया करता हूं…।'

अबकी बार मिर्जा साहब ने हस्ताक्षेप किया। विराट के कन्धे पर स्नेहपूर्वक हाथ रख कर बोले—'बस करो बेटा विराट! अब ताऊ को अपने किये की काफी सजा मिल चुकी है यह

अपनी हरकत से बाज नहीं आयेगा इसलिये अभी इसे नीचे उतार दो। जिससे अब हम लोग बैठकर अहम् मसले पर गौर कर सकें।'

विराट ने मिर्जा साहब की बात का तुरन्त पालन किया। उसने आंखें मूंदीं और अपने हाथ उठाकर इस प्रकार इशारा किया जैसे वह किसी अदृश्य व्यक्ति को निर्देश दे रहा हो। इसके साथ ही ताऊ का अधर में लटका हुआ शरीर बहुत आहिस्ता पूर्वक जमीन पर आ गया। और वह इस प्रकार बैठ गया जैसे किसी ने उसे सहारा देकर बैठाया हो।

विराट शान्त स्वर में बोला—'मुझे विश्वास है ताऊ जी अब आपको भारतीय योग शक्ति पर किसी प्रकार का अविश्वास नहीं होगा। साथ ही आप यह भी समझ गये होंगे कि मैं उस नरपिशाच डाक्टर प्रेत से लड़ने में पूरी तरह समर्थ हूं।'

अजीब था ताऊ भी। इतनी कुत्ता घसीटी के बाद भी वह अपनी हरकत से बाज नहीं आया और गुर्राकर बोला—'समझने को तो मैं यह भी समझ गया हूं कि उस जन्म में तू मदारी की औलाद था। लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मेरा भी नाम अलइमामुद्दीन है। तेरे से छोकरे ही नहीं तेरे बाप टाइप के लोग भी मुझे ताऊ कहते हैं…।'

गोपाली ने तुरन्त बात काटी—'कहने को तो तेरा सगा बाप भी ताऊ कहता है बेटा। लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। अगर तू चुप नहीं रहा तो मैं तुझे अब की हकीकत में आदमी से बकरा बनवा दूंगा।'

जगत इस तरह की बेतुकी बातों से ऊब उठा था। वह चिढ़कर मिर्जा साहब से बोला—'हद है मिर्जा साहब। आप जानते हैं कि ये दोनों पतित श्रेणी के जीव हैं। इनके ऊपर किसी बात का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। लेकिन कम से कम आपको इस तरह का तमाशा नहीं करना चाहिये।'

'अबे ओ ठग की औलाद···।' गोपाली चिल्लाये।

'बस भी करो गुरु। माना कि तुम बहुत बड़े नाटकबाज हो। लेकिन इसका यह कतई मतलब नहीं है कि हर समय तुम सर्कस टाइप जोकरी करते हो। तुमने मुझे इसलिये बुलाया है कि फ्री स्टाइल कुश्ती दिखाओ। हम लोग एक गम्भीर समस्या पर विचार करने के लिये एकत्रित हुये हैं। अगर तुम लोगों का इरादा कबड्डी खेलने का है तो हम लोगों को जाने दो।

सचमुच जगत ने इस प्रकार कदम उठाया जैसे वह जाना चाहता हो।

विराट ने शान्त स्वर में हस्तक्षेप किया—'इस तरह क्रोधित होकर जाने की आवश्यकता नहीं है चाचा जी! यह सब सहज मनोरंजन था। आप लोगों की निकटता से ही मैंने यह जाना है कि जीवन को सहज बनाने के लिये मनोरंजन की भी आवश्यकता होती है।···आप सबसे मेरी विनम्र प्रार्थना है कि अब गम्भीरता पूर्वक समस्या पर विचार व्यक्त किया जाय।

जैसे सबके ऊपर एक अव्यक्त जादू हो गया।

कहां ताऊ और गोपाली लड़ाका औरतों की तरह लड़ रहे थे, कहां विराट के बोलते ही वे सब इस प्रकार गम्भीर हो उठे। जैसे उसके पहले किसी प्रकार की भी हल्की सी बातें उनके बीच न हो रही हों।

जगत भी बैठ गया और इस बात की प्रतीक्षा करने लगा कि बात का प्रारम्भ हो। क्योंकि वास्तविकता यह थी कि उसे स्वयं यह नहीं पता था कि वास्तव में ये मीटिंग क्यों बुलाई गई है और यहां क्या तय करना है।

बात शुरु की गोपाली ने—'बेटे विराट, हम, चीनी षड़यन्त्र से इतने अधिक चिन्तित नहीं हैं, जितने इस बात से कि वह नर पिशाच डा० प्रेत आयेगा कि नहीं···।'

विराट ने शान्त स्वर में दो टूक उत्तर दिया—'वह अवश्य

आयेगा । लेकिन उसके आने की कोई निश्चित अवधि मैं नहीं बता सकता ।

'यह तुम किस आधार पर कह रहे हो कि वह अवश्य लौट कर आयेगा ?' ताऊ ने पूछा ।

'कोई आधार मैं बताने में असमर्थ हूं ताऊ जी । संक्षेप में इजना ही कह सकता हूं कि मेरी छाया मुझे इस प्रकार का संकेत दे रही है ।'

'तब तो तुम यह भी बता सकते हो कि वह कब तक आयेगा ?' जगत ने प्रश्न किया ।

'यह बताने में मैं पूर्णतया असमर्थ हूं चाचा जी ।'

'क्यों ?'

'आप लोगों के सामने मैं स्पष्ट रूप से बता चुका हूं कि मैं हटयोग के द्वितीय अयाम तक पहुँच पाया हूं द्वितीय अयाम से अधिक से अधिक दस मील की परिधि में होने वाली घटनाओं या व्यक्ति के सम्बन्ध में बताया जा सकता है । जब कि डाक्टर प्रेत इस सीमा के अन्तर्गत कहीं नहीं है । ध्यान करके मैंने इस बात की जानकारी अच्छी तरह प्राप्त कर ली है ।'

गोपाली ने प्रश्न किया—'क्या इसका कोई रास्ता नहीं है कि यह जाना जा सके कि डाक्टर प्रेत कहां है और उसकी क्या योजना है ?'

'जी नहीं । दुर्भाग्य से मेरे में इतनी शक्ति नहीं है । अगर किसी तरह से डाक्टर प्रेत का चित्र मिल जाता तो मैं उस पर ध्यान लगाकर सम्भवतः इस समस्या का समाधान निकाल लेता । लेकिन दुर्भाग्यवश न तो डाक्टर प्रेत का कोई चित्र उपलब्ध है और न मैंने ही उसे देखा है । एसी स्थिति में हमें केवल उसके आने की प्रतीक्षा करनी होगी ।'

ताऊ ने तुरन्त व्यंग कसा—'और आकर वह लोगों का कूरमा बनाकर खा जायेगा और तुम मदारी जैसा तमाशा दिखा

कर पैसे इकट्ठे करते रहना।'

'अगर ईश्वर ने ऐसा ही लिखा है तो इसे कोई रोक नहीं सकता।' विराट ने शान्त स्वर में उत्तर दिया।

जबकि जगत ने ताऊ की बात का अपने ढंग से उत्तर दिया—'दरअसल ताऊ, तुमसे बढ़कर जीवित प्रेत इस दुनिया में दूसरा नहीं मिल सकता इसलिये तुम्हारे लिये तो कम से कम मैं इस बात की गारन्टी दे सकता हूं कि डाक्टर प्रेत द्वारा तुम्हारा किसी तरह कोई नुकसान नहीं हो सकता।'

गोपाली इस समय इस तरह की कोई बात नहीं करना चाहते थे। जिस गम्भीर समस्या पर इस समय विचार विनिमय शुरू हुआ था, इस तरह की बातों से उसमें गड़बड़ी पैदा हो जाती थी।

इसलिये वह गम्भीर स्वर में बोले—'मेरा ख्याल है जगत, तुमने इस तरह की हलकी बातों के लिये सर्वाधिक प्रतिवाद किया था और अब तुम्हीं शुरुआत कर रहे हो।'

'मैं तो किसी तरह की कोई शुरुआत नहीं करना चाहता गुरु।' जगत तपाक् से बोला—'दरअसल सारी खुराफत की जड़ यह ताऊ है।'

'जब तुम यह जानते हो कि यह पतित श्रेणी का जीव है तो इससे किसी तरह की बात करने की क्या जरूरत है?'

ताऊ चीखा—'बेटा गोपाली! माना कि यह तुम्हारा देश है। यह भी माना कि कम से कम बम्बई में तुम्हारी बादशाहत चलती है। लेकिन इसका यह कतई मतलब नहीं है कि तुम अपने बाप ताऊ को भूल जाओ। यह मत भूलो कि ताऊ तुम्हारे ऐसे लौंडों को रोज जासूसी सिखाकर छोड़ देता है।'

'ताऊ जी...!' विराट गम्भीर स्वर में बोला।

'बोलो बेटा योगी जी।' ताऊ ने तुर्की बतुर्की जवाब दिया।

विराट सहज स्वर में बोला—'आप सब मुझसे आयु और अनुभव में बड़े हैं। बड़ों का सम्मान करना मैंने गुरू भूतेश्वर नाथ से सीखा है। इस नाते मेरी आपसे प्रार्थना है कि अब वातावरण को हलका न बनने दें। हम लोग एक आवश्यक विषय पर विचार-विमर्श करने के लिये एकत्रित हुए हैं। मेरी प्रार्थना है कि पहले उस विषय पर हम लोग बात कर लें।

उसके बाद मनोरंजन के लिये सारा समय पड़ा है।'

विराट की बात का आश्चर्यजनक ढंग से असर हुआ।

जो ताऊ किसी के कहने से भी अपनी जबान को लगाम नहीं लगा रहा था, वह विराट की गम्भीर बात सुनकर तुरन्त गम्भीर हो उठा और शांत गम्भीर स्वर में उत्तर दिया 'ठीक है बेटा विराट ? मैं केवल इसलिये वातावरण को हलका बनाये हुये था, जिससे अत्यधिक गम्भीरता न आ जाये। वैसे वक्त पड़ने पर मैं एकदम गम्भीर भी हो जाता हूं। अब तुम्हें मुझसे किसी प्रकार की शिकायत नहीं होगी।'

ताऊ ही नहीं, विराट की बात के साथ सब गम्भीर हो उठे।

विराट ही बोला—'मैं समझता हूं गोपाली चाचा, आपने ही इस मीटिंग को बुलाया है। इसलिये आप ही बात की शुरुआत करें।'

'बात कोई खास नहीं है। वही सुरक्षा का प्रश्न। डाक्टर मधुचांदना और लीविन के जीवन के सम्बन्ध में हम लोग बहुत चिन्तित हैं। इसी सम्बन्ध में कोई सुदृढ़ चक्रव्यूह बनाने के लिये मैंने तुम सब लोगों को बुलाया है। सेन्टजेवियर अस्पताल में लीविन पर जो आक्रमण हुआ, उससे हम लोगों की चिन्ता और अधिक बढ़ गई है।'

'इस सम्बन्ध में मुझे आप लोग जो भी आज्ञा देंगे, उसे मैं अवश्य पूरा करूंगा। अपनी ओर से मुझे इतना ही विनम्र

निवेदन करना है कि जहां तक किसी तरह के मानवीय आक्रमण का सम्बन्ध है, अर्थात किसी आक्रमण में जहां अस्त्रों का प्रयोग होता है, वहां मैं किसी तरह की भी सहायता करने में पूर्णतया असमर्थ हूं।'

'इस तरह के किसी काम के लिये तुम्हारी आवश्यकता है भी नहीं। जैसी कुछ सुरक्षा व्यवस्था हो सकती है, उसके लिये हम लोग हैं। भारतीय सशस्त्र पुलिस भी इसके लिये पूर्णतया तैयार है। तुम्हारे जिम्मे तो मुख्य कार्य डाक्टर प्रेत नामा उस नर पिशाच से निपटने का है।'

'उसके लिये आप लोग तनिक भी चिन्तित न हों। गुरू भूतेश्वर नाथ की कृपा से उस नर पिशाच के किसी भी कुकृत्य को मैं पूर्णतया विफल कर सकूंगा। जब कभी वह भारत आयेगा तो उसका पूर्ण विश्वास मेरे हाथों होगा, इसका आप लोग विश्वास रखें।'

'क्या उसके आगमन का पता तुम्हें लग जायेगा ?'

'सम्भावना तो ऐसी ही है। मैं ऐसा यौगिक प्रबन्ध कर दूंगा कि उसके आते ही मुझे सूचना मिल जायेगी।'

'मेरा विचार है कि डाक्टर प्रेत के मुख्य शिकार डाक्टर मधुवांदना एवं लीविन हैं। विक्रांत को भी वह लपेट मे ले सकता है! क्यों न ऐसा कुछ प्रबन्ध कर दिया जाये, जिससे ये सब लोग एक ही जगह रह सकें। वैसे मैं तुम्हें डाक्टर प्रेत के विरुद्ध कार्यवाही करने में सुविधा रहेगी।'

'लेकिन मेरा ख्याल इससे अलग है।' अब की मिर्जा साहब बोले।

'क्या मतलब ?' गोपाली ने चौंक कर पूछा।

मिर्जा साहब ने बताया—मैं इस बात को मानता हूं कि जिन तीन लोगों का आपने नाम लिया है, डाक्टर प्रेत उन्हीं लोगों को खास तौर पर अपना शिकार बनायेगा। लेकिन अगर

उन सभी लोगों को एक जगह इकट्ठा कर दिया जायेगा तो दो नुकसान होंगे।'

'कौन से ?'

'एक तो एक जगह रहने पर डाक्टर प्रेत तीनों पर ही एक साथ हमला कर सकेगा और उस हालत में उसका हमला ज्यादा खतरनाक होगा। दूसरी वजह यह है कि एक जगह होने पर डॉक्टर मधुचांदना ऐसे साइंसदां परेशान हो जायेंगे। वह सोचेंगे कि कोई बढ़ा गड़बड़ घोटाला है। इसलिये उनका दिमाग परेशान होना लाज़मी है। इसके अलावा, जैसा आप लोगों ने बताया, डाक्टर मधुचांदना औरत की परछाई से भी दूर भागते हैं। वैसी हालत में, मेरे ख्याल से लीविन को उनकी कोठी पर रखना उनके दिमाग को परेशान करना है। इसलिये मैं समझता हूं, इन लोगों का अलग-अलग रहना ही ठीक है।'

'तुम्हारा इस सम्बन्ध में क्या विचार है विराट ?' गोगालीं ने पूछा।

'इस सम्बन्ध में आप लोग तनिक भी चिन्तित न हों। जैसा प्रबन्ध चाहें आप लोग कर सकते हैं। चाहे सब लोग एक जगह रहें या अलग-अलग। डाक्टर प्रेत ज्यों ही बम्बई में आयेगा, गुरू की कृपा से मुझे इसका ज्ञान हो जायेगा। उसके बाद आक्रमण को निष्फल कर देना मेरा दायित्व है।'

'जब तुम्हारे ख्याल से अलग-अलग रहने पर भी किसी तरह की परेशानी नहीं हो सकती और तुम उनकी सुरक्षा करने में सफल रहोगे तो इस सम्बन्ध में हम क्या राय दे सकते हैं। तुम जैसा उचित समझते हो वैसा ही करो लेकिन एक बात का ख्याल रखना।'

विराट मुस्कराया—'आप यही कहना चाहते हैं न कि जब तक डाक्टर प्रेत का खतरा दूर नहीं हो जाता, मैं यहीं बम्बई में रहूं।'

'हां, मैं यही कहना चाहता था।' गोपाली बोले-'दरअसल हम लोग यह भूल जाते हैं कि मन की बातें समझने की तुम्हारे में अदभुत क्षमता है। वास्तव में सुरक्षा के नाते तुम्हारा यहां रहना सर्वाधिक आवश्यक है।'

अब की मिर्जा साहब बोले-'भई गोपाली साहब, इस बात की जिम्मेदारी मेरी रही। मैं विराट को कहीं नहीं जाने दूंगा। तिजारत का चाहे कैसा भी अहम मतलब क्यों न हो, विराट यहीं रहेगा। जरूरत होगी तो इसकी जगह मैं चला जाऊंगा।'

अन्तिम रूप से यही निर्णय हो गया। विराट की उपस्थिति से सबके सिर से जैसे एक बड़ा बोझ उतर गया।

●

चीनी अधिनायकतन्त्र में व्यक्ति का महत्व समाप्त हो गया है। सत्ता की राजनीति में वहां व्यक्ति का महत्व किसी कीड़े से भी कम रह गया है। किसी भी व्यक्ति की जान लेना जैसे वहां एकदम सामान्य सी बात है क्योंकि वहां महत्व व्यक्ति का नहीं सत्ता का है।

चीन में क्रूरता किस सीमा तक है, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण था हुआनसांग उर्फ डाक्टर प्रेत द्वारा ग्यारह आदमियों की सामूहिक हत्या केवल इसलिये कि सत्ता का आदेश था चाहे जिस तरह भी हो, भारतीय अणुवैज्ञानिक डाक्टर मधु चांदना और एजेन्ट क्रास विक्रांत को लाना है। चाहे इसके लिये कितना भी क्रूर और कठोर कृत्य क्यों न करना पड़े।

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये ग्यारह विभिन्न जातियों और नस्लों के आदमियों का सामूहिक बलिदान होना था। अमावस्या

की रात्री को।

और !

आज अमावस्या की रात्री थी।

सियान नगर से लगभग दस किलोमीटर दूर एक जंगल में...!

अमावस्या की अंधियारी रात ने जंगल को ढक रखा था। एक तो अमावस्या की रात यूं ही बेहद काली होती है। उस पर से जंगली इलाका ऐसा घनघोर अन्धेरा कि हाथ को हाथ नहीं सुझाई दे रहा था। घनघोर जंगल के बीच अंधियारे को दूर करने के लिये एक मात्र प्रकाश व्यवस्था थी मशालों की।

ऐसी मशालें, जिनमें तेल के स्थान पर सुअर की चर्बी का प्रयोग किया गया था। चर्बी जलने के कारण भयानक दुर्गन्ध फैल रही थी।

जंगल के बीचों-बीच एक वेदी बनी हुई थी जिसके चारों ओर सूअर की चर्बी की आठ मशालें जल रही थी। बलिवेदी पर ग्यारह अभागे इन्सान लेटे हुये थे, जिन्दगी की बलि देकर डाक्टर प्रेत को अपनी प्रेत साधना पूरी करनी थी।

ग्यारह विभिन्न जाति एवं नस्ल के इन्सान। उन सबके हाथ पैर बंधे हुये थे। मुंह पर पट्टियां बंधी थी जिनसे वे चीख-चिल्ला न सकें। शरीर पर कोई वस्त्र नहीं था। आंखें सभी की खुली थी और उन आंखों में भय की स्पष्ट छाप थी बेहद निरीह और भयभीत आंखें।

उन ग्यारह अभागे इन्सानों के सिर की ओर भारतीय अणुवैज्ञानिक डाक्टर मधु चांदना की आदमकद मूर्ति रखी हुई थी। सचमुच चीनी शिल्पकारों ने ऐसी सजीव मूर्ति का निर्माण किया था कि लगता था किसी क्षण भी यह मुर्ति बोल पड़ेगी।

और !

इन सबसे अलग हुआनसांग उर्फ डाक्टर प्रेत !

काले कपड़े पहने हुये वह साक्षात प्रेत लग रहा था। उस बलिवेदी के ठीक सामने एक विशालकाय हवनकुंड बना हुआ था, जिसमें लकड़ियों के साथ चर्बी जल रही थी। डाक्टर प्रेत उस हवनकुंड के सामने पालथी मारे बैठा था उसके पास विभिन्न रंग के कटोरे रखे हुये थे जिनमें प्रेत साधनों से सम्बन्धित जाने कैसे-कैसे पदार्थ भरे हुये थे। उन कटोरों से अलग एक छोटा सा टप रखा था और उसी को टिका कर एक तलवार खड़ी थी।

अर्धरात्रि का समय।

जंगलों में चारों ओर जंगली जानवर बोल रहे थे। उनके सम्मिलित शोर से किसी भी सामान्य व्यक्ति का कलेजा भयभीत हो सकता था।

लेकिन...।

डाक्टर प्रेत तो मनुष्य श्रेणी का व्यक्ति था ही नहीं। न वह पशु ही था। वास्तव में वह मनुष्य की शक्ल में जीवित प्रेत था। उसके ऊपर दुख-सुख क्रोध भय जनित मानवीय भावनाओं का कोई असर ही नहीं पड़ता था। इन सब भावनाओं से परे वह केवल क्रूरता का जीता जागता पुतला था—।

इसीलिये तो...।

इस भयावने वातावरण में, जहाँ कोई सामान्य मनुष्य कुछ देर भी नहीं रह सकता था। भय के कारण उसकी घिग्घी बंध जाती, वहीं डाक्टर प्रेत नामी जीवित प्रेत इस तरह अपनी प्रेत साधना में लग्न था जैसे वह अपने घर में ही बैठा हो।

अपने पास रखे विभिन्न पात्रों में से वह कोई पदार्थ उठाता और कुछ मंत्र बुदबुदाकर अग्नि में छोड़ देता। हर बार अग्नि-कुंड से तीव्र धार ऊंची लपट निकलती और कुंड के दाहिने

एवं बायें रखी हुई मानव खोपड़ियां तेजी से उछलने लगती।

कुछ क्षण शांति रहती। डाक्टर प्रेत किसी प्रकार का मंत्र बुदबुदाता रहता और खोपड़ियां पुनः अपने स्थान पर उतर कर शांत बैठ जाती। कुछ क्षण बाद डाक्टर प्रेत होम करने की क्रिया फिर दोहराता और खोपड़ियां पुनः उछलने लगती।

यह क्रिया निर्विरोध चलती रही।

डाक्टर प्रेत लगातार मन्त्र पढ़कर हवनकुंड में आहुति देता रहता।

तब रात्रि के एक बजे थे।

डाक्टर प्रेत ने एक मानव खोपड़ी में भरा हुआ किसी प्रकार का तरल पदार्थ उठाकर उस हवनकुण्ड में डाला।

और...!

उस तरल पदार्थ के डालते ही ऐसा लगा जैसे तूफान आ गया हो। चारों ओर के पेड़ तेजी से झूमने लगे। हवा तीव्र गति से बहने लगी। खोपड़ियां बड़ी तेजी से उछलने लगी और हवनकुंड से लगभग बीस फिट ऊंची नीली लपट ऊपर की ओर उठ गई।

डाक्टर प्रेत तुरन्त जमीन पर साष्टांग दंडवत की मुद्रा में लेट गया।

लगभग पांच मिनट तक इस प्रकार का तूफान उठता रहा।

अचानक!

वह बीस गज ऊंची नीली लपट धुयें में परिवर्तित हो गई और ऐसा लगा जैसे कोई बीस फिट लम्बा इन्सान खड़ा हो—।

उसी धुयें की आकृति में से किसी रिकार्ड जैसी आवाज आई 'मैं आ गया हूं इन्सान...।'

डाक्टर प्रेत उसी तरह लेटा हुआ बोला—'आप ही की जो

प्रतीक्षा थी महान दादा जी ! आपकी उपस्थिति बिना मेरी यह साधना पूरी नहीं हो सकती थी।'

'मैंने देख लिया है···मैंने सब देख लिया है। तुम्हारा हर काम सही और पूरा है।'

'आपका आशीर्वाद चाहिये दादा जी।'

'मेरा आशीर्वाद प्रतिपल तुम्हारे साथ है। मैं तुम्हारी विजय की कामना करता हूं। उठो और इन ग्यारह आदमियों की बलि देकर डाक्टर मधु चांदना की मूर्ति को इनके रक्त से स्नान कराओ, समय उपयुक्त है।'

'जो आज्ञा दादा जी !'

डाक्टर प्रेत उठा, उसने इस ओर रखी तलवार उठाई और दोनों चीजों को लेकर वेदी पर पहुँचा।

ग्यारह निरीह प्राणी भयभीत दृष्टि से साक्षात यमराज के अवतार डाक्टर प्रेत को देखने लगे। अगर उनके मुंह खुले होते तो निश्चित रूप से उनके मुंह से ऐसी कातर आवाज निकलती कि पत्थर भी हिल जाता।

इतना ही नहीं।

किसी दयालु हृदय व्यक्ति की दृष्टि इन ग्यारह आदमियों की बाईस आंखों पर पडती तो वह निश्चित रूप से मानवीय संवेदना के कारण फूट-फूट कर रोने लगता।

लेकिन हुआन सांग उर्फ डाक्टर प्रेत नामी वह नर-पिशाच !

हर तरह की मानवीय संवेदनाओं से शून्य प्रेत श्रेणी का व्यक्ति उसके ऊपर भला इन निरीह कातर आंखों का क्या प्रभाव पड़ सकता था।

वैसे भी चीन में व्यक्ति की जान का महत्व किसी कीड़े से ज्यादा नहीं है। आवश्यकता पड़ने पर एक नहीं, एक हजार व्यक्तियों की सामूहिक हत्या करना चीन में एक मामूली बात है।

डाक्टर प्रेत तो साक्षात प्रेत था। अपने जीवन में उसने जाने कितनी नरबलियां ली थी। इसलिये उसके ऊपर इन आंखों का भला क्या प्रभाव पड़ सकता था।

उसने उन ग्यारह व्यक्तियों में से एक को खींचकर इस प्रकार टब के ऊपर रखा कि उसकी गर्दन और आधा धड़ टब के ऊपर पहुंच गया। शरीर का बाकी हिस्सा बाहर की ओर लटक रहा।

डाक्टर प्रेत ने तलवार उठाई। होठों के द्वारा तेजी से कोई मंत्र बुदबुदाने लगा।

और!

उठी हुई तलवार पूरी ताकत से उस आदमी की गर्दन पर गिरी। बिना किसी आवाज के एक आदमी की जीवन लीला समाप्त हो गई। खून का फव्वारा निकल कर टप में गिरने लगा, सिर कट कर अलग जा पडा।

यही क्रम चलता रहा।

डाक्टर प्रेत क्रम से एक-एक आदमी को घसीट कर टब तक लाता। उसका सिर धड से अलग करता। उसके खून को टब में गिरने देता और जब खुन की धार रूक जाती तो उस शव को एक ओर उपेक्षा से ढकेल देता।

यही क्रिया वह तब तक दोहराता रहा जब तक ग्यारह निरीह प्राणियों की हत्या नहीं हो गई और उनके शरीर का रक्त उस टब में इकट्ठा नहीं हो गया। ग्यारह आदमियों के रक्त से वह टब लगभग भर गया।

डाक्टर वापस उस हवन कुंड के पास आया और धुंए की शक्ल में उड़े हुये तानवान के प्रेत के सम्मुख हाथ जोड़कर विनम्रता पूर्वक बोला—'आदरणीय दादा जी! आपके आशीर्वाद से ग्यारह विभिन्न स्लोके आदमी मिले हैं और उनकी बलि देकर मैंने खून भी एकत्रित कर लिया। एक काम निर्विघ्न पूरा हुआ। अब दूसरे काम के लिये आज्ञा दीजिये'''।'

तानवान के प्रेत की घिसे रिकार्ड जैसी आवाज उभरी—
'मैंने बताया न···समय तुम्हारे साथ है···हर काम तुम निर्विघ्न कर सकते हो।'

डाक्टर प्रेत ने साष्टांग दंडवत की मुद्रा में लेटकर पुनः प्रणाम किया। उसके बाद वह उठ कर मंच पर आया। खून से भरा टब उठाया। अगर कोई सामान्य व्यक्ति इस टब को उठाने की कोशिश कर सकता तो शायद ही वह उठा पाता डाक्टर प्रेत जिस तरह का दुबला पतला एव सूखा सा व्यक्ति था, उसे देख कर तो कोई भी यह कल्पना नहीं कर सकता था कि यह व्यक्ति खून से भरे हुये भारी टब को उठा सकता है।

किन्तु डाक्टर प्रेत !

निन्चित रूप से वह मनुष्य श्रेणी का व्यक्ति नहीं था।

प्रेत साधना करने एवं प्रेतों के बीच में रहने के कारण उस के शरीर में ऐसी दुर्दमनीय शक्ति आ गई थी कि उसकी शक्ति की कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। साथ ही इस समय तो उसके में उसके दादा तानवान के प्रेत की भी शक्ति मिली हुई थी। इसलिये ऐसा कोई भी काम, जो साधारण आदमी की सीमा से परे था, डाक्टर प्रेत इतनी आसानी से कर सकता था, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

सचमुच !

यह अमानवीय कार्य ही तो था।

हुआनसांग उर्फ डाक्टर प्रेत ने खून से भरे उस टब को दोनों हाथों में उठाकर अपने सिर से भी ऊंचा इस तरह तान लिया जैसे वह मात्र एक खिलौना हो।

टब को इसी तरह उठाये हुये डाक्टर प्रेत डाक्टर मधु चांदना की आदम कद मूर्ति के पास आया। उस मूर्ति के पास एक स्टूल रखा हुआ था। डाक्टर प्रेत उस टब को लिये हुये उस स्टूल पर चढ़ गया।

उसके बाद।

ग्यारह विभिन्न नस्लों के मनुष्यों के रक्त से भरे हुये टब को डाक्टर प्रेत ने डाक्टर मधु चांदना की आदम कद मूर्ति पर उडेल दिया।

ज्यों ही रक्त उस आदम कद मूर्ति पर पड़ा, ऐसा लगा जैसे भयंकर तूफान आ गया हो। तीव्र हवा चलने लगी। पेड़ इस प्रकार झूमने लगे, जैसे अचानक तूफान आ गया हो। जगली जानवरों की सम्मलित रोने की आवाज से वातावरण और भी भयावना हो उठा।

इतना ही नहीं।

कुंड के पास जो खोपडियां हवा में तैर रही थीं, वे अचानक उड़ीं और डाक्टर मधु चांदना की आदम कद मूर्ति के चारों ओर पतंग की तरह उड़ने लगीं। वातावरण इतना अधिक भयावना हो उठा कि कोई सशक्त से सशक्त कलेजे वाला होता तो उसके मुंह से चीख निकल जाती।

लेकिन हुआनसांग उर्फ डाक्टर प्रेत मनुष्य होते हुए भी मनुष्य श्रेणी का नहीं था। वह साक्षात जीवित प्रेत था। तभी तो इस भयावने वातावरण के बीच वह इस तरह खड़ा था जैसे यह सब साधारण सा मनोरंजन हो।

लगभग बीस मिनट तक वह तूफानी वातावरण फैला रहा। बीस मिनट बाद सब कुछ शान्त हो गया तीव्र हवा रूक गई। तूफान थम गया। खोंपड़ियां अपने स्थान पर पहुँच गई। अल-बत्ता जानवरों के रोने की आवाज बराबर आती रही।

डाक्टर प्रेत हवन कुंड के पास आया और साष्टांग दण्डवत की मुद्रा में लेट गया। तानवान के प्रेत की घिसे रिकार्ड की तरह घर-घराती आवाज सुनाई दी—'तेरे सितारे इस समय शक्तिशाली हैं हुआन···सारा काम ठीक हो गया। अब जैसा मैंने बताया है, वैसा ही करना अगली अमावस्या को इस पुतले को लेकर बम्बई पहुँच जाना। डाक्टर मधु चांदना की कोठी से

लगभग एक मील दूर किसी कब्रिस्तान में रुककर इस मूर्ति की पूजा करना और डाक्टर मधु चांदना को बुलाना। वह आ जायेगा। उसके आते ही तुरन्त उसे लेकर चल देना। वहां रूकने की कोशिश मत करना। वर्ना सितारे गर्दिश में आ जायेंगे··· एक बात अच्छी तरह याद रखना किसी भी रूप में विक्रांत से से टकराने की कोशिश मत करना। वर्ना उसके सितारे तुम से बहुत प्रबल हैं। उससे टकराते ही तुम्हारे सितारे गर्दिश में आ जायेंगे। तब मैं कुछ नहीं कर सकूंगा···।'

डाक्टर प्रेत उसी तरह लेटा हुआ बोला—'आपने जैसा कहा है, बिल्कुल वैसा ही होगा आदरणीय दादा जी! आपका आशीर्वाद मुझे चाहिये। सब काम वैसे ही होगा, जैसी आपने आज्ञा दी है।'

'मेरा आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ है। मेरी इच्छा है कि तुम अपने अभियान में सफल हो।

'सुनो···।'

'आज्ञा दीजिये दादा जी···।'

'इस मूर्ति को रात भर इसी तरह रहने देना। सुबह जब भाग्य का सितारा पूरब मे उदय होगा तब इसे यहां से ले जाकर किसी सुरक्षित स्थान में रख देना और अगली अमावस्या के तीन दिन पहले इसे लेकर भारत पहुँच जाना।'

'ऐसा ही होगा महान दादा जी···।'

'अब मैं जाता हूं···जब तक कोई बड़ी आवश्यकता न हो, मुझे मत बुलाना।'

उसके बाद एक बार फिर तीव्र तूफान उठा। कुंड से बहुत ऊंची लपट उठी। खोपड़ियां हवा में उठकर तेजी से नाचने लगीं।

कुछ देर बाद सब कुछ शांत हो गया।

प्रेत सीरिज

—:तीसरा भाग समाप्त:—